26वाँ अधिवेशन
स्मारिका

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

आग्रह सत्य के

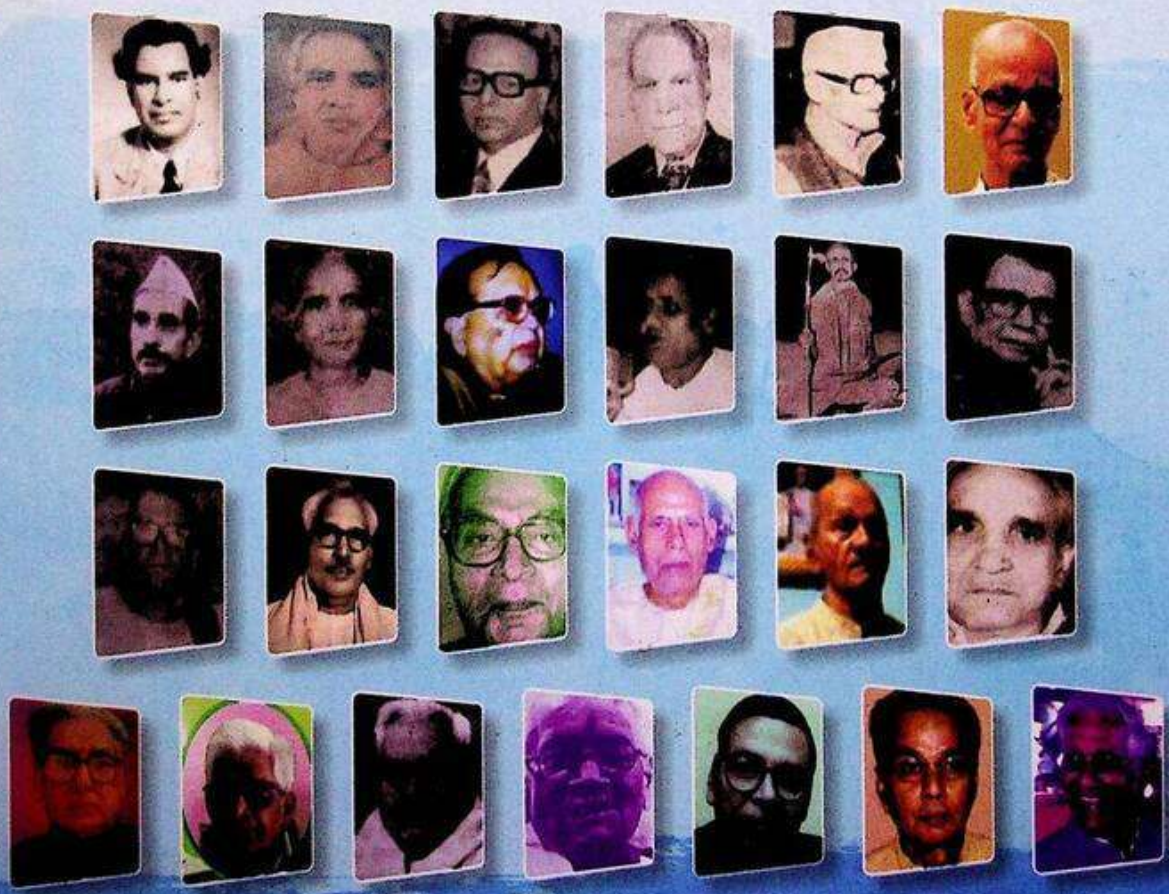

मोतिहारी, 26-27 फरवरी 2022

S.M. SHOAIB HASHMI EDUCATIONAL & WELFARE TRUST GROUP OF INSTITUTIONS

Recognized By NCTE (ERC), Bhubaneshwar, Odisha

B.Ed. Affiliated to BRABU, Muzaffarpur

D.El.Ed. Affiliated to BSEB, Patna

Address : Parsa, Paithan Patti, P.O.: Narkaitya Bazar, Motihari, Bihar

9431252888, 7261026036

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

26वाँ अधिवेशन

26-27 फरवरी 2022

राधा नगर (नकछेद टोला), पंडित गणेश चौबे सभागार, मोतिहारी 845401, पूर्वी चम्पारण (बिहार)

परामर्श

डॉ. ब्रजभूषण मिश्र

महामाया प्रसाद विनोद

डॉ. जयकांत सिंह

संपादक

गुलरेज शहजाद

सम्पादन सहयोग

केशव मोहन पाण्डेय

दिलीप कुमार

अभय अनंत

प्रकाशक : अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

www.bhojpurisahityangan.com

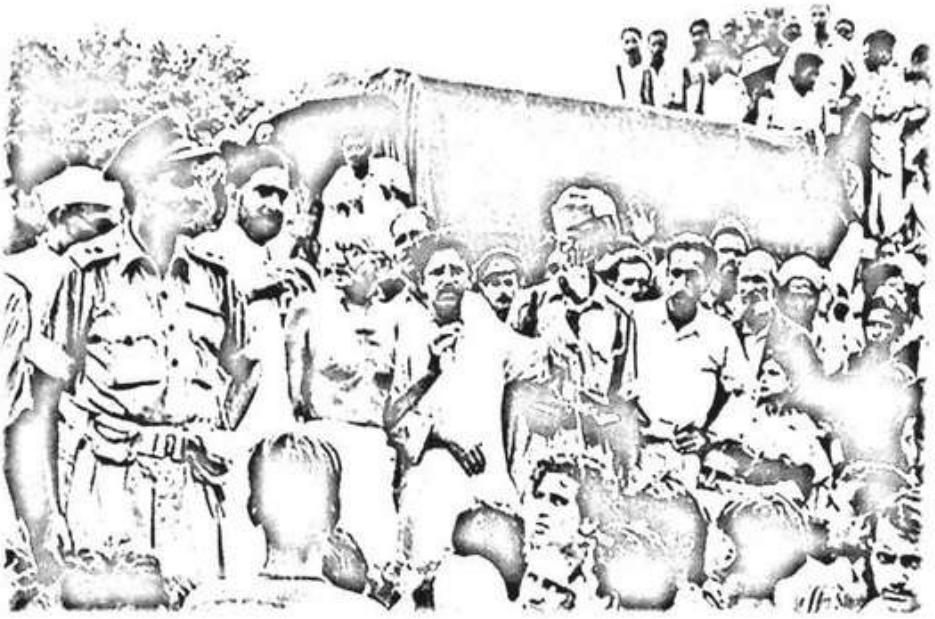

आयोजन समिति

संरक्षक सदस्य

श्री रामनिरंजन पांडेय, श्री विनय कुमार वर्मा, श्री चंद्रभूषण पाण्डेय
प्रो. कर्मात्मा पाण्डेय (प्राचार्य, पं. उगम पांडेय कॉलेज), श्री राय सुन्दरदेव शर्मा, डॉ. शम्भू नाथ सिकरिया
डॉ. अरुण कुमार (प्राचार्य, एम.एस. कॉलेज), डॉ. अरुण कुमार (प्राचार्य, एल.एन.डी.कॉलेज)

अध्यक्ष आयोजन समिति : प्रकाश अस्थाना

उपाध्यक्ष आयोजन समिति : सतीश कुमार मिश्र, रविभूषण श्रीवास्तव, प्रसाद रत्नेश्वर, आलोक शर्मा
अमरेंद्र सिंह, डॉ. लालबाबू प्रसाद, अनिल वर्मा, धनुषधारी कुशवाहा

महासचिव आयोजन समिति : गुलरेज शहजाद

सचिव आयोजन समिति : राकेश कुमार, रवीश मिश्र, अभय अनंत, संजय पाण्डेय,
शशि शेखर, अरुण तिवारी, राजीव वर्मा, पवन पुनीत चौधरी, साजिद रजा, संतोष शर्मा,
अजमुद्दीन हाशमी, डॉ. मनीष कुमार

सदस्य आयोजन समिति : अनिल तिवारी, मुक्तिनाथ सिंह, सच्चिदानंद सत्यार्थी,
संजय सिंह, विनोद सिंह, अजित वर्मा 'कन्हैया', राजकुमार, ओमप्रकाश पंडित,
कौशल मोहब्बतपुरी, रामकुमार गिरी, डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. विनय सिंह, दिनेश अनिकेत,
डॉ. मनीष कुमार, संजय उपाध्याय, संजीव कुमार, अभिनव अभिषेक

www.bhojpurisahityangan.com

अनुक्रम

क्र.सं.		पृ.सं.
1.	शुभकामना संदेश	5-8
2.	चंपारण के लोग हँसेला	9
3.	संपादकीय	11
4.	स्वागत भाषण – प्रकाश अस्थाना, स्वागत अध्यक्ष	13
5.	अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 26वाँ अधिवेशन के अध्यक्षीय भाषण – हरेराम त्रिपाठी 'चेतन'	14
6.	हामंत्री डॉ. गुरु चरण सिंह के प्रतिवेदन – डॉ0 गुरु चरण सिंह	18
7.	भोजपुरी के मान्यता खातिर आन्दोलन होखे – गणेश चौबे	20
8.	भारत के चार राष्ट्रगान – विंध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव	24
9.	रात में जाँतः दिन में हिंडोला (लोकगीतन में भोजपुरी जीवन के झाँकी) – हरिशंकर वर्मा	31
10.	भोजपुरी कहावतन में जीवन के रूप – प्रो. (डॉ.) संत साह	38
11.	भोजपुरी में चंपारण के संतन–भक्तन के वाणी – डॉ. विनय कुमार सिंह	41
12.	भोजपुरी साहित्य के चंपारण के देन – डॉ. संतोष पटेल	43
13.	चंपारन गांधी से पहिले आ गांधी के बाद – जलज कुमार अनुपम	55
14.	हँसी आ व्यंग्य के कवि बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव – लव शर्मा 'प्रशांत'	59
15.	श्याम बिहारी तिवारी 'देहाती' – (स्वर्गीय) हरिश्चन्द्र साहित्यालंकार	63
16.	पुण्यश्लोक रमेशचन्द्र झा – पाण्डेय कपिल	66
17.	चंपारन के गान्ही : पंडित राजकुमार सुकुल – भगवती प्रसाद द्विवेदी	67
18.	भोजपुरी के विश्वकोश पं. गणेश चौबे – डॉ. बृज भूषण मिश्र	71
19.	क्रांतिकारी कवि रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त' – डॉ. बृज भूषण मिश्र	72
20.	पंडित गणेश चौबे जीवनी आ समीक्षा – डॉ. बिक्रम कुमार सिंह	73
21.	आदरणीय हरिश्चंद्र सहित्यालंकार जी – डॉ. मधुबाला सिन्हा	77
22.	विंध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव : व्यक्तित्व आ कृतित्व – डॉ. पवन कुमार	79

www.bhojpurisahityangan.com

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के

26वाँ अधिवेशन

में सबके स्वागत बा

- आयोजन समिति, अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन

www.bhojpurisahityangan.com

राधा मोहन सिंह
संसद सदस्य (लोकसभा)
सभापति,
रेल संबंधी स्थायी समिति
पूर्व केन्द्रीय कृषि मंत्री, भारत सरकार

सत्यमेव जयते

शुभकामना संदेश

यह जान कर प्रसन्नता हुई कि अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का 26 वाँ अधिवेशन 08–09 जनवरी 2022 को मोतिहारी में हो रहा है। पता चला कि अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पिछले पचास वर्षों से भोजपुरी भाषा–संस्कृति की सेवा कर रही है। भोजपुरी भाषा–संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्धन सभी भोजपुरी भाषी क्षेत्र के लोगों का दायित्व बनता है। हम आशा करते हैं कि निकट भविष्य में भोजपुरी को संवैधानिक मान्यता मिलेगी और इसके उत्थान के नये अध्याय की शुरुआत होगी।

मैं अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 26 वें अधिवेशन की सफलता की कामना करता हूँ और आयोजन समिति को इसके लिए बधाई देता हूँ।

(राधा मोहन सिंह)

कार्यालय : कक्ष संख्या 145ए, संसद भवन, नई दिल्ली-110001, दूरभाष : 011-23034244
Office : Room No. 145A, Parliament house, New Delhi-110001 Tel : 011-23034244
निवास : 9, पंडित पंत मार्ग, नई दिल्ली - 110001, दूरभाष : 011-23322370, 23312370, टेलीफैक्स : 011-23314390
Residence : 9, Pandit Pant Marg, New Delhi-110001, Tel : 011-23322370, 23312370 Telefax : 011-23314390
E-mail : rmsingh@sansad.nic.in @ singhradhamohan49@gmail.com

www.bhojpurisahityangan.com

प्रमोद कुमार
मंत्री
गन्ना उद्योग एवं विधि विभाग,
बिहार सरकार

बिहार सरकार

कार्यालय : गन्ना उद्योग विभाग, विकास भवन, पटना– 800 015
दूरभाष : 0612–2215634, फैक्स. 0612–2233120
कार्यालय : विधि विभाग, मुख्य सचिवालय, पटना–800 015
दूरभाष : 0612–2211374

पत्रांक :– .....

दिनांक :– 25.12.21

शुभकामना संदेश

हमारा खातिर ई बहुत खुशी के बात बा की अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 26वाँ अधिवेशन मोतिहारी में होखे जा रहल बा।

चम्पारण की ई धरती जवना के एतिहासिक संबंध त्रेता, द्वापर के लेके बौद्धकालीन संस्कृति से भी रहल बाटे। आधुनिक भारत के शिखर पुरूष महात्मा गाँधी जेकर संबंध चम्पारण से जगत विख्यात बाटे, ऊहाँ के हरदम राष्ट्र भाषा के संगे–संगे मातृभाषा के पैरवी करत रहनी।

जग में उहे लोग आदर पावेला जे अपना स्थानीय संस्कृति डोर थमले आगे बढ़ेला। एह सम्मेलन के आयोजन समिति के हमरा ओरी से बहुत–बहुत बधाई अउरी शुभकामना बा।

(प्रमोद कुमार)

www.bhojpurisahityangan.com

डा० शमीम अहमद
सभापति
आंतरिक संसाधन एवं
केन्द्रीय सहायता समिति
- सह -
सदस्य, बिहार विधान सभा
(12-नरकटिया)

बिहार सरकार

निवास :
ग्राम खैरवा, पोस्ट-बेला चमही
थाना-छौड़ादानों, पूर्वी चम्पारण
आवास :
23A/60 अधिकारी आवास
बेली रोड, पटना
Email -narkatiyavidhansabha@gmail.com
Mob 9771764110, 9472828686

पत्रांक : ..... दिनांक : .....

शुभकामना संदेश

ई जान के मन बड़ा प्रसन्न बा कि अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 26वाँ अधिवेशन मोतीहारी के ऐतिहासिक धरती पर हो रहल बा। ई सुखद सूचना मिलल कि एह अवसर पर देश के कोना–कोना से भोजपुरी साहित्यकार, विद्वान आ भोजपुरी–सेवक लोग के जुटान होई। किसिम–किसिम के कार्यक्रम के आयोजन होई।

हमरा पूरा विश्वास बा कि एह अधिवेशन के बाद भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता ला एगो जोरदार डगर तइयार होखी। एह अधिवेशन के आयोजन मंडल खातिर हम आभार व्यक्त करत बानी आ एह अधिवेशन के सफलता के शुभकामना दे रहल बानी।

डॉ0 शमीम अहमद

www.bhojpurisahityangan.com

डॉ० शम्भू नाथ सीकरीया
डिलीट (मानद उपाधि)
पूर्व अध्यक्ष- नगरपालिका,मोतिहारी
अध्यक्ष- राधाकृष्ण सेवा संस्थान ट्रस्ट
शिक्षाविद, उद्योगपति, सामाजिक कार्यकर्ता

राधा नगर, मोतिहारी 845 401
पूर्वी चंपारण (बिहार)
मो० - 7764871111
ई-मेल : snsikaria@gamil.com

पत्रांक–..... दिनांक–.....

शुभकामना संदेश

1973 में स्थापित अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 26वाँ दू दिवसीय अधिवेशन 08–09 जनवरी , 2022 के मोतिहारी में होखे जा रहल बा जवना में देस के हर कोना से लगभग दू सै विद्वान आ साहित्यकार लोग भाग ली। जानकारी मिलल कि एह अवसर पर भोजपुरी साहित्यकार लोग के पुरस्कार आ सम्मान के साथ विभिन्न साहित्यिक विषयन पर संगोष्ठी होई। भोजपुरी भाषा–साहित्य– संस्कृति के बढ़ंती के ले के विभिन्न प्रस्तावो पारित कइल जाई।

कार्यक्रम कइल ठीक बा बाकिर बुनियादी सवाल अपना जघे काएम बा। 50 हजार वर्गमील में फइलल भोजपुरिया क्षेत्र आ 20 करोड़ से बेसी भोजपुरिया लोग के आपन माई भाषा भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता कब मिली। अलगा–अलगा संस्था आ संगठन लड़ाई लड़ रहल बा बाकिर अभी ले सफलता नइखे मिलल। समय के माँग बा कि सब केहू सारा भेद–भाव भुला के एक मंच से भोजपुरी के मान्यता के माँग के जनांदोलन बनावे। ई भोजपुरिया स्मिता के लड़ाई ह एकरा साथे भोजपुरिया क्षेत्र के राजनेता लोग के आपन भाषा का प्रति गंभीर आग्रह का साथे आवे के पड़ी। हम उमेद कर रहल बानीं कि एह कार्यक्रम का माध्यम से भोजपुरी का मान्यता के दमगर आवाज उभरे जे सरकार के मान्यता देवे खातिर मजबूर कर दे।

हम एह अधिवेशन के सफलता के कामना कर रहल बानी।

जय भोजपुरी। जय भोजपुरिया

(डॉ० शम्भू नाथ सीकरीया)

www.bhojpurisahityangan.com

चंपारण के परिचय देत कवि 'चूर' जी के कविता

चंपारण के लोग हँसेला

- बृजविहारी प्रसाद 'चूर'

उत्तर में सोमेसर खाड़ा
दक्खिन गंडक के जलधारा
पूरब बागमती के जानी
पश्चिम तिरबेनी जी बानी
माघ मास लागेला मेला
चंपारण के लोग हँसेला।

चलीं देखलीं भैसालोटन
अब नइखे उ बाघ ककोटन
तिरबेनी पर बान्ह बन्हल बा
कोसन तक घर–बार बनल बा
साँझे जग–मग जोत जरेला
चंपारण के लोग हँसेला।

पूल के रचना अजबे बाटे
बदल गइल बा सरबस ठाटे
देखत में न मन अकुताला
ऊँहवे आपन राज बुझाला
बाटे बनल बराज बुछेला
चंपारण के लोग हँसेला।

नइखे तिरथ से तनिको कम,
नियरे बाल्मीकि के आश्रम
जहवाँ बाजेला ढोल–मृदंग
साधुन के होला सत्संग
मँह मँह चारू ओर करेला
चंपारण के लोग हँसेला।

धन धन श्री धनराजपूरी के,
खोजले आश्रम बाल्मीकि के
हम का करब बड़ाई उनके
दुनिया गाई उनका गुन के
अइसन अइसन लोग बसेला
चंपारण के लोग हँसेला।

इहवें रहे विराट के नगरी
जहवाँ पांडव कइले नोकरी
अर्जुन इहवें कइले लीला
इहवे बा विराट के टीला
बरनन वेद कुरान करेला
चंपारण के लोग हँसेला।

परल कभी पानी के टान
अर्जुन मारले सींक के बान
सींक बान धरती के गईल
सिकरहना नदी बह गईल
एकर जल हर घड़ी बहेला
चंपारण के लोग हँसेला।

नगर किनारे सुन्दर बगहा
मालन के ना लागे पगहा
परल उहँवा बा सउसें रेत
चरि के माल भरेला पेट
रेल के सिलपट इहें बनेला
चंपारण के लोग हँसेला।

इहें मसान नदी बउरहिया
उपरे डूगरे रेल के पहिया
भादों में जब इ फूफुआले
एकर बरनन कहीं कहाँलें
बड़का–बड़का पेड़ दहेला
चंपारण के लोग हँसेला।

रामनगर में राजमहल बा
शहर–बाज़ार में चहल–पहल बा
बा विशाल मंदिर शंकर के
कहाँ कहाँ बा ओह परतर के
कंचन के त्रिशूल चमकेला
चंपारण के लोग हँसेला।

रामनगर राजा नेपाली
मंगन कबो न लौटे खाली
इहाँ हिमालय के छाया बा
एकर कुछ अजबे माया बा
इहें नदी में स्वर्ण दहेला
चंपारण के लोग हँसेला।

रामनगर के धनहर खेती
एक–एक खेत रहू के पेटी
चार महिना लोग कमाला
आठ महिना बइठल खाला
दाना बिना केहू ना मरेला
चंपारण के लोग हँसेला।

इहाँ चानकी पर जाई चढ़
इहें लौरिया के नंदनगढ़
केहू कहे भीम के लाठी
गाड़लि बा पत्थर के जाठी
लोग अशोक के लाट कहेला
चंपारण के लोग हँसेला।

नरकटियागंज देखीं गल्ला
मंगल सनीचर हाट के हल्ला
किनी बासमती के चाउर
अन्न उहवाँ ना मिली बाउर
भात बने बटुला गमकेला
चंपारण के लोग हँसेला।

चल के देखलीं योगापट्टी
बा जहाँ बिछल तेल के पट्टी
हित देश के कुछ लोग आई
सभे मिल के करी खुदाई
देखि केतना दिन लागेला
चंपारण के लोग हँसेला।

www.bhojpurisahityangan.com

आगे बढ़ीं चलीं अब बेतिया
बीच राह में बा चनपटिया
इहाँ बीके मरचा के चिउरा
किन–किन लोग भरेला दउरा
गाड़ी–गाड़ी धान बिकेला
चंपारण के लोग हँसेला।

बेतिया राजा के राजधानी
रहले भूप करन अस दानी
पश्चिम उदयपुर बेतवानी
बढ़िया सरेयाँ मन के पानी
दूर दूर के लोग पियेला
चंपारण के लोग हँसेला।

बेतिया के मीना बाज़ार
सभ बाज़ारन में उजियार
बाटे अब तक बाग़ हजारी
मेला लगे दसहरा भारी
घोड़ा हाथी बैल बिकेला
चंपारण के लोग हँसेला।

बेतिया के गिरजा मशहूर
भईल रहे भूकंप में चूर
फेर बनल बा अइसन बाँका
बदल गईल बा ओकर खाका
इनरासन के जोत झरेला
चंपारण के लोग हँसेला।

चाउर में झुमका के जानी
संतपुर के पटुवा मानी
रेल के जंक्सन नरकटिया के
आउर सराहीं गुड़ योगिया के
चीनी के इ मात करेला
चंपारण के लोग हँसेला।

इहवे बसल सुगौली भाई
गोरे–गोरखे भईल लड़ाई
हारे पर जब अइलें गोरा
धइ दिहलें गोली के झोरा
भईल सुलह इतिहास कहेला
चंपारण के लोग हँसेला।

चंपारण में गढ़ मोतिहारी
भइल नाम दुनिया में भारी
पहिले इहे जिला जागल
गोरन के मुँह करिखा लागल
मोतिहारी के नाम तपेला
चंपारण के लोग हँसेला।

चकिया उँख के मिल पुराना
मेहसी सिप बटन कारखाना
सटे बहे नदी सिकरहना
पेन्हे लोग मोतिन के गहना
सूपन मोती रोज झरेला
चंपारण के लोग हँसेला।

एही जिला में भितिहरवा बा
गाँधी आश्रम नाम परल बा
गाँधी जी चम्पारण अइले
इहें पाहिले सत्याग्रह कइले
लिलहा अबो नाम जपेला
चंपारण के लोग हँसेला।

बेतिया से दखिन कुछ दूर
बथना गाँव बसे मसहूर
इहवा लाला लोग के बस्ती
धंधा नोकरी ओ गिरहस्ती
केतना एम.ए.लोग बसेला
चंपारण के लोग हँसेला।

इहवें के भैया देहाती
रहले उ कवि 'चूर' के साथी
कविता बा उ देहिया नइखे
'गगरी भरल खीचतें नइखे'
रटना अबहूँ लोग करेला
चंपारण के लोग हँसेला।

काँवरथू के दिखी रावा
अरेराज बउरहवा बाबा
फागुनी तेरस नीर ढरेला
नामी अरेराज के मेला
ओके दर्शन लोग करेला
चंपारण के लोग हँसेला।

अइसन बहुत जिला के बस्ती
लेकर इहाँ हाट परवस्ती
केहू नौकरी, केहू नाच करेला
मगन लोग दिन रात रहेला
केतना लोटा–झाल बहेला
चंपारण के लोग हँसेला।

खाए में जब कटपट भइले
भागि में चंपारण अइले
माँगी माँगी धन–धान कमइले
मंगन से बाबू बन गइले
ऐसन केतना लोग बसेला
चंपारण के लोग हँसेला।

सब दिन खइले सतुआ लोटी,
इहाँ परलि मचिया पर बेटी
बाप के दुःख भूल गइल बेटा
भोर परल माटी के मेंटा
अब त लाख पर दिया जरेला
चंपारण के लोग हँसेला।

केहू संत के रूप बनावे
केहू बीन बजावत आवे
कतने कतने भाँट पँवरिया
बनिके आवे स्याम सँवरिया
इहें सभकर बाँह गहेला
चंपारण के लोग हँसेला।

करिहें का, कवि लोग बड़ाई
जग चंपारण के गुण गाई
अपन कमाई अपने खाले
केहू से ना मांगे जाले
इहे देखि दुश्मन हहुरेला
चंपारण के लोग हँसेला

✧ ✧ ✧

www.bhojpurisahityangan.com

सम्पादकीय

बतकही

- एगो भोजपुरिया आग्रह

भोजपुरी भारत देश के एक बड़ भूभाग में बोलल जाला। सभे केहू के ई बात के जानकारी बा कि बिहार के जिलन में पूर्वी चंपारण, पश्चिमी चंपारण, सारन, सिवान, गोपालगंज, भोजपुर, बक्सर, रोहतास आ कैमूर जिलन का साथे एह जिलन से सटल जिलन का आंशिक क्षेत्र के लोगन के भाषा भोजपुरिये ह। एही तरह उत्तर प्रदेश के बलिया, देवरिया, कुशीनगर, गोरखपुर, महाराज गंज, बस्ती, संत कबीर नगर, सिद्धार्थ नगर, आजमगढ़, मऊ, गाजीपुर, बनारस,चंदौली, मीरजापुर, सोनभद्र, संत रविदास नगर, अम्बेदकर नगर, जौनपुर आदि जिलन में पूर्णरूप से आ आसपास के जिलन का आंशिक भाग के भाषा भोजपुरी बा। झारखंड के गढ़वा आ पलामू जिलन के लोग–बाग के भाषा भोजपुरिये ह। बिहार, झारखंड आ उ०प्र० से सटल छत्तीसगढ़ आ मध्यप्रदेश के जिलन का आंशिक भाग में भोजपुरी बोलल जाला। देश का औद्योगिक नगर में भी भोजपुरी भाषा के प्रयोग दैनिक जीवन में करे वाला लोग बसल बा।

जॉर्ज गिरियर्सन का अनुसार पचास हजार वर्गमील में फइलल प्रक्षेत्र भोजपुरी आ तमिल के बा आ मोटा–मोटी देखल जाय त भोजपुरी बोले वालन के संख्या आज लगभग बीस (20) करोड़ से बेसी बा। जहाँ तक लिपि के सवाल बा, भोजपुरी कैथी में लिखल जात रहल ह; बाकिर अब सर्व सुलभ देवनागरी में लिखल जा रहल बा।

भोजपुरी के आपन लोक–संस्कृति बा, जे ओकरा रहन–सहन, खान–पान, व्रत–त्योहार, लोक–गीतन, लोक–कथा, कहावत, पहेलियन, लोक–विश्वास, लोक–कला, लोक–नृत्य, लोक–नाटक आदि से आपन पहचान कायम करेला आ भोजपुरी भाषा का माध्यम से प्रकट हो के दूसर संस्कृतियन से अलग करेला। एकर संरक्षण जरूरी बा, ना त बहुत बड़ लोक–ज्ञान से आवे वाला पीढ़ि अनचिन्हार रह जाई आ ई भोजपुरी भाषा का संवैधानिक मान्यता के बिना संभव नइखे। मान्यता से एकर विभिन्न लोक–कला के कलाकारन का संरक्षण आ संवर्द्धन प्राप्त होई।

जहाँ तक ले भोजपुरी भाषा में रचित लिखित साहित्य के सवाल बा, एकर स्रोत छठी सातवीं शताब्दी से मिलेला। गोरखनाथ आ कबीर से लेके लक्ष्मीसखी तक ले संतन द्वारा विभिन्न संत–मत के प्रसार भइल आ एह भाषा में साहित्य रच के आध्यात्मिक चेतना के विस्तार कइल गइल। ओकरा बाद राष्ट्रप्रेम आ स्वतंत्रता संघर्ष के साहित्य रचल गइल। बाबू रघुवीर नारायण के श बटोहिया श आ मनोरंजन बाबू के श फिरंगिया श जइसन रचना एकर अनुपम मिसाल बा। महेन्दर मिश्र आपन पूरबी के माध्यम से प्रवासन आ स्त्री जाति के समस्या सब के उठइलन त भिखारी ठाकुर लोक–नाटकन के जरिये स्त्री विमर्श आ सामाजिक सुधार पर बल दिहलें। हीरा डोम दलित चेतना के आवाज उठइलें।

भोजपुरी में लगातार आधुनिक साहित्य के विभिन्न साहित्यिक विधा में सृजन हो रहल बा,जे अपना समय के अभिव्यक्त कर रहल बा। भोजपुरी भाषा का मान्यता मिले से भोजपुरी के विकसित होखे के एगो अवसर मिली। भोजपुरी के साहित्यकारन के राष्ट्रीय फलक पर सम्मान–पुरस्कार मिली आ पहचान बनी।

देश के आजाद करावे में भोजपुरी भाषियन के योगदान कम नइखे रहल। 1760 ई० से लगातार कई बारिस ले फतेहबहादुर शाही अंग्रेजन का विरुद्ध संघर्ष करत रहलें। 1857 ई० के प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन में भोजपुरिया मनई मंगल पांडेय के शहादत आ वीर कुँवर सिंह के संघर्ष भोजपुरिये क्षेत्र में भइल। नीलहा अँग्रेजन के खिलाफ भोजपुरी क्षेत्र चंपारण में आवाज उठल त महात्मा गाँधी के आवे के पड़ल आ उनका सत्याग्रह के पहिलका सफलता एतहीं मिलल। देश के पहिला राष्ट्रपति भोजपुरिये क्षेत्र दिहलस। संविधान सभा के पहिला अध्यक्ष भोजपुरिया ही रहस। सम्पूर्ण क्रांति के नायक भोजपुरिये क्षेत्र से रहस। भोजपुरिया लोग मेहनतकश बा आ मेहनत का बल पर मजदूर बन के गइल लोग दूसर देशन में आपन साम्राज्य स्थापित कइल आ आपन सरकार बनावल। उहँवा भोजपुरी भाषा के मान्यता बा आ आजो बोलल जाला। पड़ोसी देश नेपाल आ मॉरिशस में भोजपुरी मान्यता प्राप्त बा।

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी के फिल्म उद्योगो स्थापित बा। एकरा से बहुत लोग का रोजियो– रोजगार मिलल बा बाकिर इनका मान्यता के अभाव में राष्ट्रीय पुरस्कारन से वंचित रहे के पड़ेला। सरकारो आपन योजना सब के प्रचार–प्रसार में, जन–शिक्षा खातिर एह भाषा के प्रयोग करेला। कंपनी सब आपन उत्पाद का बिक्री बढ़ावे खातिर भोजपुरी भाषा के इस्तेमाल करेला। मान्यता मिल गइला से भोजपुरी के विस्तार मिली आ क्षेत्र के लोगन खातिर रोजगार के अवसर बढ़ी।

आठवाँ अनुसूची में भोजपुरी भाषा के शामिल कर दिहला से भोजपुरी भाषा, एकर साहित्य, एकर कला आ संस्कृति के बढ़ावा मिली। भाषा साहित्य के अध्ययन के सुविधा मिली। प्रतियोगी परीक्षा सब में भोजपुरी के स्थान मिली, जेह से एह क्षेत्र के लोगन के छोट– बड़ सरकारी नौकरी में चुनाये के अवसर बढ़ी। भोजपुरिया लोगन के मन में भोजपुरी भाषा के मान्यता ना मिलला से जे हीन भावना व्याप्त बा ऊ दूर होई। जन प्रतिनिधियन के संसद आ विधानमंडल में भोजपुरी भाषा में शपथग्रहण सहित बोले के अवसर मिली। कहलो गइल बा कि बात राखे खातिर आपन भाषा सबसे नीमन आ दमगर माध्यम होला।

संसद में समय–समय पर भोजपुरी क्षेत्र के सांसदन सहित गैर भोजपुरी भाषी सांसदन के द्वारा आठवाँ अनुसूची में शामिल करे के माँग उठावल जात रहल बा। सरकारन द्वारा आश्वासनो मिलत रहल बा, बाकिर कार्य रूप में फल अबहीं ले ना मिलल। ई भोजपुरिया जनप्रतिधियन के इच्छाशक्ति के कमी कहीं, आपन भाषा का प्रति आग्रह के कमी कहीं भा नाकारापन जे अभी ले भोजपुरी संवैधानिक मान्यता से बंचित बा। ई बहुप्रतीक्षित माँग के जनांदोलन बनवले बिना हमरा नइखे लागत कि भोजपुरी के मान्यता मिली। अलगा–अलगा दयरा में डुगडुग्गी बजावल लंबा समय से देखल जा रहल बा। समय आ गइल बा कि एकजूट जोर लगावल जाव आ अइसन हुंकार भराये कि शासन के पूर्वाग्रह के किला ध्वस्त हो जाय–

खबरदार! अवगारे होई
ना सोचब त मारे होई
भोजपुरी के हक चाहीं अब
फरियवता बरियारे होई

अखिल भोजपुरी भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 26 वाँ अधिवेशन के आयोजन के जिम्मा पूर्वी चंपारण के जिला मुख्यालय सत्याग्रह के भूमि मोतिहारी के दिहल गइल। मोतिहारी के भोजपुरिया लोग मनोयोग से एह अधिवेशन के सफल बनावे में लागल। आयोजन समिति के अध्यक्ष अग्रज श्री प्रकाश अस्थाना के मार्गदर्शन आ महती सहयोग मिलल। आयोजन के सफलता में शिक्षाविद,उद्योगपति आ समाजसेवी अग्रज डॉ० शम्भू नाथ सीकरीया के अमूल्य योगदान बा। इनका जइसन भोजपुरी के कर्मयोगी जब ले रही उमेद के दरवाजा बंद नइखे हो सकत। आयोजन में आयोजन समिति के सम्मानित सदस्य लोग का साथे सम्मेलन के कार्यकारी अध्यक्ष श्री महामाया प्रसाद विनोद, भोजपुरी के उद्भट विद्वान आ भोजपुरिया माटी खानी उर्वर मिजाज के सृजनधर्मी डॉ० ब्रजभूषण मिश्र आ भोजपुरी के सिद्ध भाषा विज्ञानी, कुशल कवि आ विभागाध्यक्ष भोजपुरी विभाग,बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर अग्रज डॉ० जयकांत सिंह के मार्गदर्शन में 26 वाँ अधिवेशन के हमनी गवाह बानीं। उमेद बा कि इहवाँ से भोजपुरी के मान्यता खातिर अइसन मजबूत योजना बनी जे कार्यरूप में धरातल पर उतर के सफलता के नया अध्याय लिखी।

सधन्यवाद।

गुलरेज शहजाद
महामंत्री–आयोजन समिति
26 वाँ अधिवेशन

निज भासा उन्नति अहे, सब उन्नति के मूल।
बिना निज भासा ज्ञान के, मिटे ना हिय के सूल।।
– भारतेन्दु हरिश्चन्द

अपने चीजुअइया के जे नाहिं बूझी।
ओकरा के दुनिया में केहू नाहिं पूछी।।
अपने चीजुअइया से अपने बेगाना।
चारो ओरिया घूम अइबऽ पइबऽ ना ठेकाना।।
– डॉ. मोती (बी.ए.)

अपना भासा में बनबऽ अगुआ।
अनका भासा में बस पिछलगुआ।।
– अज्ञात

www.bhojpurisahityangan.com

स्वागत भाषण

- प्रकाश अस्थाना, स्वागत अध्यक्ष

मंच पर उपस्थित सम्मेलन के नव मनोनीत अध्यक्ष जी, माननीय मुख्य अतिथि महोदय, विशिष्ट अतिथिगण, सभागार में उपस्थित भोजपुरी के विद्वान आ साहित्यकार सभे, आ श्रोता दर्शक भाई बहिन!

आज छब्बीसवाँ अधिवेशन के पुनीत अवसर पर अपने सभे के स्वागत करत अपार खुशी मिल रहल बा। हमरा त बुझाते नइखे कि केकरा के कहँवा उठाईं–बइठाईं। कइसे केकर स्वागत–सत्कार करीं। रउरा सभे हमनी के नेवता के स्वीकार करत एह अवसर पर पधार के एह धरती के मान बढ़वनी, जवना से हमनी गद्‌गगद् बानी।

चंपारन पौराणिक आ ऐतिहासिक भूमि ह। बाल्मीकि के आश्रम, सीताकुंड, नंदन गढ़ लौरिया, अरेराज, संधि–स्थल, सुगौली; बौद्ध स्तूप, केशरिया; महात्मा गाँधी से जुड़ल भीतिहरवा आ बरहरवा लखनसेन अपना में पौराणिक आ ऐतिहासिक कतना कथा समेटले बा। गाँधी जी के जीवन के पहिला सत्याग्रह के प्रयोग एही मोतिहारी के धरती पर सफल रहल आ उनका के महात्मा के श्रेणी में पहुँचावे में सहयोग कइले बा।

कबीर के निर्गुन संप्रदाय के अनुयायी संत कवियन के अलावे संतमत के सरभंग सम्प्रदाय के मतावलंबी संत कवियन के आध्यात्मिक साधना के स्थल झखरा, ढेंकहा, फुलकाहाँ, चकिया जइसन जगहन पर बा। अपना आध्यात्मिक बिचार के भोजपुरी में लिख के परगट करेवालन में भिनक राम, टेकमन राम, धवल राम, करता राम, परमहंस योगेश्वराचार्य, डीहू राम, दरसन राम जइसन संतन के वाणी एही धरती पर गूँजल बा। लोक साहित्य के अंतर्राष्ट्रीय विद्वान, जनपदीय आंदोलन के प्रणेता, अंग्रेजी आ हिंदी में सैकड़न लेख लिखेवाला पं. गणेश चौबे, नंदकिशोर तिवारी देहाती, रमेशचंद्र झा, सरयू सिंह सुन्दर, नंदकिशोर झा, हरिश्चंद्र साहित्यालंकार, बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव, रामदेव द्विवेदी अलमस्त, विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव, पांडेय आशुतोष, अन्थोनी दीपक जइसन दिवंगत लोग भोजपुरी का आधुनिक साहित्य के प्रणेता रहलन। आज पचासहन साहित्यकार लोग भोजपुरी साहित्य के सेवा में जुटल बाड़न।

आज जवन अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन हो रहल बा, 1972 ई. में एकरा गठन के पीछे एहू धरती के लोग के भूमिका रहल बा। एही चंपारन के वासी पूर्व मुख्यमंत्री स्व. केदार पांडेय जी के पटना का छज्जूबाग के सरकारी आवास पर कई बइठक के बाद जब ई संस्था स्वरूप लिहल त पं. गणेश चौबे ओकरा तदर्थ समिति में शामिल रहीं। कबहीं प्रवर समिति सदस्य, त कबहीं कार्यसमिति के उपाध्यक्ष आ राँची के नउवाँ अधिवेशन आ सत्र के अध्यक्ष रूप में उहाँ के लमहर योगदान रहे। एह संस्था के पाँचवा अधिवेशन मोतिहारिए के धरती पर भइल रहे आ आज 26वाँ अधिवेशन हो रहल बा।

हमनी चम्पारण के वासी सोझिया हईं स। इहाँ तीन सै प्रकार के धान पैदा होत रहल ह। आजो मिरचइया धान के चिउरा आपन सुगंध फइला रहल बा। इहाँ ऊँख के खेती होले। मीठा, चीनी, भेली आपन मिठास बहावत मिली। माँसाहारी लोग खतिरा चम्पारन मीट देश भर में आ देश से बहरियो अंतरराष्ट्रीय मेनू में शामिल हो रहल बा।

आखिर में हम इहे कहे के चाहत बानी कि हमनी का ओतना लूर–सहूर नइखे कि कइसे स्वागत–सत्कार करे के चाहीं। स्वागत सत्कार में हमनी के पाले चीज–बतुस के भले अभाव हो जाए, भाव के अभाव नइखे। हमनी के भाव के मोल देत, अभाव के अनदेखी कइल जाई। कवनो कमी बेसी खातिर माफी दिहल जाई। आयोजन समिति के लोग दसो नोंह जोड़ के अपने सभे के स्वागत में खड़ा बा।

जय भारत जय हिंद जय भोजपुरी

प्रकाश अस्थाना
स्वागत अध्यक्ष

www.bhojpurisahityangan.com

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 26वाँ अधिवेशन के अध्यक्षीय भाषण

- हरेराम त्रिपाठी 'चेतन'

सम्मानीय स्वागताध्यक्ष महोदय, सम्मेलन के माननीय सदस्यगण

अभिवादनीय आगत विद्वद्वृंद,

सनेही–छोही मातृ शक्ति

बंधुजन आ युवक गण।

हम चकित बानी आजु के अपना स्थिति प. आ अचंभित बानी रउवा सभ के उदार निर्णय प. जवन आजु एगो, लघु के विराट् बना देलस, कण के परमाणु के स्तर प. पहुँचा देलस। छाँछ के हकासल पियालस के सोझा अमृत के कलसा रउवा सभ परोसि देनी। रउवा सभे धुँआ से आगि के नतीजा निकालि लेनी। पुटुस के झाड़ी से निकसल हवा के गुलाब–गेन्दा के फुलवारी के गमगमात झोंका समझि लेनी। रउवा सभ के दीहल एह अपनापन के नमक से हमार पारदर्शी अनुपात बढ़ गइल, रउवा सभ के अपना उदार संबोधन के गुरूत्वाकर्षण से हमरा बबूर जइसन जीवन के छिलिका उतार के देवदारू के रूप देनी आ हमरा अस अदना व्यक्ति के एह 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के छब्बीसवाँ अधिवेशन के अध्य क्ष बनवनी सभे एकरा खातिर बहुत आभार।

जवना मंच से प्रातःकाल के सूर्य अपना जीभि से ओसकन के हीरा समेटले होखे, जवना मंच से कुशल भँवरा अ–क्षर मधु के मुक्त दान कइले होखे आ जवना मंच प. पूनम के चन्द्रमा अपना कला के बिम्ब उकेर गइल होखे मंच प. रउवा सभे अमावस के जवना भरोसा प. नेवतनी, अब ओही भरोही के हमरो भरोसा बा। हम अपना बूता भर कोशिश करबि भोजपुरी के विशाल बरगद के जरि से निकलल एकरा छतनार डालिन तक आ एकरा पतइन के शिरा से होके जुग के, जीवन के आ लोक मानस के पियास के नगीच तक पहुंचे के। आकी–बाकी हमरा नाइ के पार लगावल–लाज बचावल प्रवर समिति आ रउवा सभेके हाथ में बा–

'मीराँ' शरन गही चरनन की लखों लाज महाराज।
अब तो निभाया सरेंगी बाँह गहे की लाज।।

भोजपुरी अबले बोली से भाषा आ साहित्य के कठिन आ जटिल देशांतर पार कइके इहाँ तक पहुँचल बिया। जइसे समय एकरा यात्रा के सुगम–सुपट बनावे खातिर सिंकुड़ि गइल होखे–संक्षिप्त हो गइल होखे। एह यात्रा में ई वेदन के संगे बइंठि के सोमरस के पान कइले बिया, उपनिषदन के संगे तत्व चर्चा करत, मोहन जोदड़ो आ सिंधुघाटी के लिपि के फॉसिलन के निरखो–परख कइले बिया। वेदन के वर्णिक छन्दन के राजमार्ग से 'उद्गीथ–गान' करत, अपभ्रंश–प्राकृत के मात्रिक छन्दन के अनुशासन के अंगिकार करत संस्कृत के सागर से गलबाँहीं करत सावनी आँखि आ कातिकी ओठ लेके–नाथ–साहित्य–संत–साहित्य के सिवान में दाखिल भइलि। एकरा अतीत के सत्य आ वर्तमान के सत्य के रंग–रूप अलग–अलग हिगराइल बा।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध्द से वर्तमान काल तक भोजपुरी के रचनाकारन के द्वारा प्रायः सभ विधन में भोजपुरी जीवन के अन्दरूनी प्रवृत्ति जतना अनोखा, सहज–सरल संवेदना से तरल–भरल बारीक आ मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कइले बा कि ओह वैभव के लेके कवनो उन्नत साहित्य के सोझा खड़ा होखले जा सकत बा। भोजपुरी हमेसा से सामूहिक जीवन के समकालीन वास्तविकता के उकेरत आइल बिया। एकरा में बदलत रहे के आ बदलिदेबे के अलावा नया–नया सिरिजे के विलक्षण बउसाव बा। भाषा अइसन दर्पण ह जवना में कइगो पहलू आ कई–कइगो सतह होला। एकरा में उभरेवाला बिम्न जीवन के व्यक्त–अव्यक्त पच्छनि के कबो गुप्त आ कबो प्रगट होके चित्र उकेरेला। एह बिम्बन के ठीक–ठीक चित्र, ठीक–ठीक अभिव्यक्ति के एगो सशक्त साधन रंगकर्म आ ओकर आधार पीठ रंगमंच होला। रंगकर्म आ रंगमंच भोजपुरी साहित्य के उलझल आ बार–बार उभरि के सामने आवेवाला समस्या रहल बा। भोजपुरी के सांस्कृतिक आ वैचारिक पहचान के संगे–संगे

www.bhojpurisahityangan.com

रंगकर्म आ रंगमंच जीवन के सवालन से सीधे–सीधे जूड़ि के कला, संस्कृति आ कथा साहित्य के विरासत के एगो जीवंत प्रतिबिम्ब गढ़ेला। संगे–संगे राष्ट्रीय आ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के यथार्थवादी, प्रतीकात्मक तथा सांकेतिक भाषा के रचनो करेला। एगो स्वस्थ रंगकर्म तथा कुशल रंगमंच के जरिए कला के दोसरो–दोसर रूपन के आ ओकनी के ताकत के लाभ लेबे में सुगमता होला। एकरा माध्यम से स्थापत्य, शिल्प, चित्र, संगीत, नृत्य आ साहित्य के रूप–आकार, सुघराई आ कान्ति में निखार आवेला। भोजपुरी रंगकर्म तथा रंगमंच संतोष करे लायक हालत में नइखे। रंग–सक्रियता बढ़ावल जरूरी बा। का कारन बा कि भोजपुरी के आपन विकसित नाट्य–शैली नइखे, का कारन बा कि उड़िया नाट्य शैली, बांगला नाट्य शैली, राजस्थानी नाट्य शैली, पंजाबी नाट्य शैली आ हिमाचली नाट्य शैली के स्तर के–नइखे? एह सवाल के जबाब हमनी का तलासे के परी। अइसन सजगता बनल रहे के चाहीं कि भोजपुरी लोक विश्वास, लोक अभिरूचि आ मूल्यन के अभियन्ता त बनबे करो, इतिहासो के नजर में ई 'बरहगुना' बनो।

एही तरी एगो अवरू क्षेत्र बा जहाँ भोजपुरी के उजुग आ सजग रचनाकार लोग के ध्यान जाये के चाहीं। तुलनात्मक अध्ययन आ तुलनात्मक समालोचना। हमनी के जवन पड़ोसी–भाषा–साहित्य विकसित बा ओकरा से भोजपुरी साहित्य के हर एक विधा के तुलनात्मक अध्ययन आ शोध होखे के चाहीं। एसे भोजपुरी के साहित्य–भंडार त बढ़वे करी लेखन के नया–नया क्षितिज खुली। दोसरा साहित्य के श्रेष्ठ अंश अपना भोजपुरी साहित्य में सामिल होई आ भोजपुरी श्रेष्ठ अंश ओह पड़ोसी साहित्य तक पहुँची। एह काम से भोजपुरी साहित्य के विश्व–दृष्टि मिली।

हमनी का जब आपन संख्या–पचीस करोड़ बतावत बानी जा त ओह में मॉरिशस, गुयाना आ त्रिनिदाद के संख्यो जोड़त बानी जा। लेकिन मॉरिशस में जवन साहित्य लिखा रहल बा ओकर चर्चा, एहिजा के रचना आ रचनाकार के साथे तुलनात्मक दृष्टि से नइखे होत, ना कवनो बड़हन सम्मिलित संकलने निकलत बा। ई होखे के चाहीं। भोजपुरी साहित्य के इतिहास में मॉरिशस त्रिनिदाद आदि आ नेपाल के रचनाओं के सामिल कइल जरूरी बा, तबे भोजपुरी इतिहास पूरा बनी।

भोजपुरी के समालोचना पक्ष बहुत कमजोर आ बेमन के बा। जवन समीक्षा आ समालोचना के नांव प. लिखा रहल बा ओह से समालोचना के शर्त पूरा नइखे होत आ ना भोजपुरी समालोचना के मानदण्डे के बनत बा। भोजपुरी साहित्य के आपन प्रकृति बा, आपन माटी के सुगंध बा आपन उपजो अलग ढंग के बा। एह हालत में एकर समालोचना–विवेचना तथा एकरे निहारे–सँवारे के समालोचना के तौरो–तरीका आपन होखे चाहीं, आपन चश्मा होखे के चाहीं। उचित त ई बा कि जइसे कवि गोष्ठी होता, ओसहीं कभी–कभी समालोचना–गोष्ठी आ समालोचक–सम्मेलन होखे चाहीं जवना में खुलि के कृतियन प. गहराई से बात चित हो सके। एसे, काव्य के काई कटी, साहित्य के पेनी में जमल गाद हटी। एह तरह के आयोजन बहुत जरूरी बा।

विश्वविद्यालयन में अध्ययन–अध्यापन, आ शोध के स्थिति भी बहुत दयनीय बा। ठीका प. काम हो रहल बा। चेतन, अर्द्ध चेतन तथा निश्चेतन, के उदय, स्थिति उपस्थिति आ उपलब्धि, विनियोग तथा विकास के गतिविध प. तर्क–पद्धति से आलोचनात्मक विषय के तथ्य आ तत्व निरूपन कइल शोध के काम हउवे। शोध के विषय, वस्तुस्थिति के सिद्धांत–स्थापना कइल, दिशा–दर्शन, तर्क पूर्ण दृष्टि, विवेचन आ मूल्यांकन कवनो शोध के प्रामाणिक बनावेला। एह से नया वस्तु के सिद्धि तथा वस्तु स्थिति के तत्व निरूपण से नया ज्ञान संभव होला। शोध–कार्य एगो वैज्ञानिक निष्ठा ह। एह निष्ठा के फलाफल, रूचि क्षमता 'मस्तिष्क के सत्तर्कता, स्वस्थ विचार, भाषा–शुद्धि आ शैली के पोढ़ता प. निर्भर करेला। बहुत दुख के साथ कहे के परत बा कि भोजपुरी साहित्य में शोध के इलाका धूरि–गरदा से प्रदूषित बा। एहू ओर ध्यान दीहल जरूरी बा।

भोजपुरी के पद्य के संसार बहुत बड़ आ उपजाऊ बा। एमें श्रेष्ठता के अतना अंश आ चुकल बा कि प्रबंध काव्य, खंडकाव्य, गीत–आ गीति–काव्य, तुकांत आ अतुकांत, सानेट आ हाइकु के कई–कई रूप में अपना काव्य–वैभव के लेके हम कवनो साहित्य से हाथ मिला सकत बानी। कई अर्थ में हमनी का अवरू साहित्य से आगे हो चुकल बानी। लेकिन कहानी आ उपन्यास में? अपना दायरा में भोजपुरी में कहानी आ उपन्यासो कम नइखे लिखाइल आ ना कम लिखल जा रहल बा, लेकिन जेने से साहित्य के असल चुनौती मिल रहल बा। ओने

www.bhojpurisahityangan.com

हमनी के ध्यान नइखे जात–अथवा ध्यान दीहल नइखींजा चाहत। दरअसल, साहित्य के–विश्व–साहित्य के चुनौती विज्ञान के ओर से मिल रहल बा। विज्ञान के अवदान से सृष्टि के, प्रकृति के आ अंतरिक्ष के, जल के, अन्न के, वायु के, रूप बदलि रहल बा। एह परिवर्तन के, बांग्ला साहित्य भाँपि लेले बा। एह साहित्यन में चौथा आयाम प. (फोर्थ डाइमेन्सन) कहानी आ उपन्यास लिखा रहल बा। समय आ स्थान (टाइम आ स्पेश) प. कहानी–उपन्यास लिखा रहल बा। हमनी के कहानी–उपन्यास अबहीं गरीबी–अमीरी के, छूत–अछूत के, पेट आ चेट के दुखड़ा रोवत बाड़ेस, आ हासिया प. बईठि के भूख आ दुख के सारंगी रेतत बाड़ेस। भोजपुरी के एह से उबरे के होई आ वैज्ञानिक कहानी–उपन्यास लिखे के दिशा में बढ़े के होखी। अन्तरिक्ष के पात्र इंतजार कर रहल बाड़ेस भोजपुरी के उपन्यासकार लोग के। अतने ना भोजपुरी में विज्ञान संबंधी पुस्तकन के स्वतंत्र रचनो होखे के चाहीं–पशु विज्ञान, पक्षी–विज्ञान, वनस्पति–विज्ञान से संबंधित। ई समरथाई हासिल कइल भोजपुरी खातिर बहुत आवश्यक बा।

कवनो साहित्य व्यक्ति आ समाज से अविच्छिन रूप से जुड़ल रहेला। साहित्य के पूरा संसार, पूरा के पूरा वैभव जब ले समाज द्वारा स्वीकारल ना जा तब तक ओकर सार्थकता सकि के दायरा में रहेला। ई साँच बा कि साहित्यकार के भावभूमि समाजे द्वारा बनि के तेयार होले। ओकर सवँसे संवेदना समाज के बारीक से बारीक बदलाव के, हर कँप–कँपी के कूतेले, अपना अनुभूति में उतारेले आ जुग–चेतना से फेंटि–मिला के आ ओकरा के प्रेषणीय बना के समाज के सउँपि देले। ई साहित्य के एगो मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया हउवे जवना के द्वारा व्यक्ति–चेतना के सामूहिक चेतना में रचनाकार मिलावेला। ई संभव होला शब्द से। एही से विश्व के हर साहित्य के आपन शब्द–संपदा होला–शब्दकोश के रूप में। भोजपुरी में अबले चार–पांचगो शब्दकोश तैयार हो चुकल बा–कवनो दस हजार के कवनो बीस हजार–पचीस हजार के। लेकिन का भोजपुरी में अतने शब्द बाड़ेस? अतहत विशाल क्षेत्र, जवना के बोलवैया के संख्या पचीस करोड़ से अधिका होखे ओकरा सनूख में वीसे–पचीस हजार के शब्द–निधि होखी? आ जवन भोजपुरी मॉरिशस में, गुएना आ त्रिनिदाद में लिखाता ओकरो कुल्हि शब्द भोजपुरीए के दउलति नू ह? एसे बड़हन शब्दकोश लिखाए के चाहीं– एक लाख शब्दन के। भले ऊ कई खंड में होखे। एकरा अलावे वैज्ञानिक शब्दन के कोश, प्रशासनिक शब्दन के कोश, प्रयोजन मूलक भोजपुरी कोश के ओर कदम बढ़ावल जरूरी बा। आजु अवरू–अवरू भषनि में बहुभाषी शब्दकोश तैयार हो गइल बाड़ेस। एहू दिशाई हमनीका ताक–झाँक करेके चाहीं।

भोजपुरी के एगो बहुत बड़ दियारा चित्र कला के–पेन्टिंग के बा। कवनो जागरूक आ जीवंत समाज के भीति–चित्र, वास्तु–चित्र, उपस्कर (वस्त्र) चित्र आदि अमूल्य निधि होला। एह दिशा में कुछ काम भइल बा बाकिर अबहीं एह में अवरू निखार आवे के चाहीं।

भोजपुरी में स्थापत्य कला, मूर्त्तिकला, वास्तुकला प. अबहीं ले हमरा जानकारी में काम नइखे भइल। एह विशाल भोजपुरी क्षेत्र में प्राचीन स्थापत्य के, मूर्ति कला के अवशेष बिखरल बा। ई बहुत बड़ साहित्य आ इतिहास के धरोहर हउवे। एह आ अवरू–अवरू पुरातत्व के बिखरल संपदा के बटोरल–सँगोरल जरूरी बा।

हमनी के सोझा बरिसन से संविधान के आठवीं अनुसूची में भोजपुरी भाषा के सामिल करे के समस्या उलझिगइल बा। भोजपुरी समाज खातिर ई बहुत पीड़ा देबे वाला तनाव बा। के उलझावल गइल बा कि कवनो भाषा के आठवीं अनुसूची में सामिल करे के कवनो निश्चित मानदण्ड संविधान में नइखे। मानदण्ड तैयार करे के दू–दू बार प्रयास भइल। सन् 1996 में पाहवा समिति गठित भइलि, आ सीताकांत महापात्रा समिति के गठन सन्–2003 में भइल। बाकिर एह दूनो समितियन के मानदण्ड–निर्धारण के प्रयास असफल हो गइल। हँ, एह दूनो समितियन के प्रयास के एगो निचोड़ निकसल कि– "भाषा को मानक रूप के तौर पर पारिभाषित किया जा सकता है ताकि संबंधित रूपों को बोलने वाले, मानक रूप को बोलने वाले समझे जाएँ।" ई निष्कर्ष सन्–2–8–2016 के लोकसभा में हरिमांझी के प्रश्न के उत्तर के रूप में, गृहमंत्री के द्वारा आइल रहे। मामला टेढ़ इहवें बा। "भाषा के मानव रूप" जटिल व्यूह बा जवना के बहाना बनाके आ जवना के आड़ लेके भोजपुरी के संगे ई व्यवहार हो रहल बा। "भाषा के मानकता" के प्रश्न विशुद्ध रूप से राजनीतिक बा।

www.bhojpurisahityangan.com

मानक भाषा के कसौटी प. कसे लगला प. त कवनो भाषा प. अँगुरी उठावल जा सकत बा। लाख जतन के बादो अबहीले हिन्दी में एकरूपता, वर्तनी–शुद्धि, आ व्याकरण संबंधी विसंगति बरकरार बा। बोली आ भाषा में भेद करे वाला जब कवनो मानदंड नइखे त कुछ भाषा के मान्यता दिहल आ कुछ सक्षम आ हरतरह से समृद्ध भाषा के उपेक्षा कइल एकदम राजनीतिक बेईमानी बा। कवनो भाषा अपना क्षेत्र, आयाम के विस्तार–फयलाव के क्रम में कई–कई रूप से गुजरेले। भारते ना विश्व के कवनो भाषा के वर्त्तनी, उच्चारण, व्याकरण–सम्तता में फरक रहेला सभ अंतर के पचाके कवनो भाषा आगे बढ़ेले। शिल्प आ शैली के गठन वस्तु के आधार प. होत रहेला। साहित्य खातिर वस्तु आ शिल्प दूनों जरूरी होला जवना के समाहार धीरे–धीरे भोजपुरी में हो रहल बा। एह में 'रूप' आ 'मूल्य' के जोगदान रहेला ऊहो भोजपुरी में बा। सामाजिक–बोध आ युग–बोध के भोजपुरी साहित्य सदा से जीयत आ रहल बा। श्रम, संघर्ष, आ सौन्दर्य बोध भोजपुरी साहित्य के प्राणतत्व हउवे। आठवीं अनुसूची में आपन स्थान बनावे में संघर्ष, श्रम, निरंतरता, एकजुटता बहुत जरूरी बा। टुकड़ा–टुकड़ा में ना, संघबद्ध होके, एकजूट होके–एगो गोहार साजि के एकसाला धरना–प्रदर्शन कइल बहुत आवश्यक बा। साथे–साथ भोजपुरी भाषी यदि पचीस करोड़ बाड़े त कम से कम पाँच करोड़ हस्ताक्षर के अभियान चलावल बहुत जरूरी बा आ ऊ हस्ताक्षर केंद्र सरकार, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री आ गृहमंत्री बगैर के सउँपल जाउ। अतने ना, चुनाव में अपना–अपना क्षेत्र, के विधायक, सांसद आ पार्षद के सशर्त्त मत दिहल जरूरी बा जवना से ऊ भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में न के स्थान दिलवावे में जोर लगावो लोग।

समय आ श्रम से ही उश्य के प्राप्ति होई। लड़ाई उहे जीतेला जे उत्सर्ग करेला। समर्पण आ संकल्प के ढाल–तलवार से भोजपुरी भाषा के अस्तित्व के लड़ाई में जीत आ एकर अष्ठम् सूची के सिंहासन प. प्रतिष्ठा के लक्ष्य हासिल होई।

विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।
हमनी के विजय–सूत्र बा।

जय भारत, जय भोजपुरी

✧ ✧ ✧

सर्वभाषा ट्रस्ट से प्रकाशित भोजपुरी किताब

सर्वभाषा ट्रस्ट
नई दिल्ली

8178695606
sbtpublication@gmail.com
www.sarvbhashatrust.com

www.bhojpurisahityangan.com

महामंत्री डॉ. गुरु चरण सिंह के प्रतिवेदन

- डॉ0 गुरु चरण सिंह
महामंत्री, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

सम्मानीय अध्यक्ष जी, उद्घाटनकर्त्ता जी, मुख्यअतिथि, देशभर से बटोराइल भोजपुरी के प्रति समर्पित स्थायी समिति के सदस्य, साहित्यकार आ छोटी लोगिन

हमरा अपार प्रसन्नता हो रहल बा कि भारतीय इतिहास के निर्माण में आपन महत्वपूर्ण योगदान देबेवाला क्षेत्र मोतीहारी के पावन धरती पर अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के छब्बीसवाँ अधिवेशन 08–09 जनवरी 2021 के संपन्न होखे जा रहल बा। राष्ट्र के विकास में एह क्षेत्र के महत्वपूर्ण योगदान रहल बा। एहिजा के लोग मेहनती, कलाकार, विद्वान आ राष्ट्र के बलिवेदी पर स्वयं के न्योछावर करके गौरवान्वित होखे वाला राष्ट्रभक्त होलन, जे भारत माई के पुकार पर खेत खरिहानन से, खदानन से निकल के माथा पर केसरिया साफा बान्ह के बलिदान होखे खातिर निकल जालन आ मोहन दास करमचंद गाँधी जइसन राष्ट्रचिन्तकन के आह्वान पर स्वतंत्रता संग्राम में कूद परेलन। एह पावन धरती आ एहिजा के जाँबाज जवानन के नमन करत हम एह अधिवेशन में देश भर से बटोराइल भोजपुरी के मान–सम्मान के प्रति समर्पित साहित्यकारन आ नेही छोही लोगिन के सम्मेलन के ओर से हार्दिक स्वागत आ अभिनन्दन कर रहल बानी।

भोजपुरी दुनिया भर में पसरल लगभग 30 करोड़ लोगिन के समृद्ध भाषा ह। भोजपुरिया लोग रोजगार के तलाश में अंग्रेजन के साजिश के तहत गिरमिटिया मजूर बनके तकरीबन 190 वरिस पहिले मारीशस, फीजी, ट्रिनिडाड, दक्षिण अफ्रीका, टोबैको इत्यादि देशन में गइल आ अपना निष्ठा आ मेहनत से ओहिजा के बंजर धरती के उर्वर बना देलस एह विषय में बहुत पहिले हम लिखले रहीं–

जात संप्रदाय क्षेत्रीयता के बात कबो
भूलियो के मन में ना लावे भोजपुरिया
राष्ट्रधर्म सत्य न्याय अउरी मानवता के
रक्षा बदे गरदन कटावे भोजपुरिया।
नारी दीन दुखिअन के आबरू बचावे बदे
जान आन बान पर लुटावे भोजपुरिया।
दुनिया में जहाँ रहे ओहिजे के धरती के
सोना मेहनत से बनावे भोजपुरिया।

भोजपुरिया जवानन के संगे भोजपुरी संस्कृति के प्रचारो–प्रसार दुनिया भर में होत गइल। आज दुनिया भर के देशन में भोजपुरी संस्कार देखे के मिल जाला। भोजपुरी गीत गवनई के धून के साथे होली, दीवाली, छठ, तुलसी विआह, जइसन छोट–बड़ परब तेवहार के दर्शन दुनिया भर में हो जाला। आ आज त स्थिति ई बाकि गिरमिटिया मजूर बनके गइल भोजपुरिया लोग ओह देशन के गवरमेंट पर काबिज हो गइल बा। आ ओह देशन के साथे भारत के सहजय मैत्री संबंध स्थापित हो जाता।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के तेईसवाँ अधिवेशन में छतीसगढ़ के बेलासपुर में हमरा कमजोर कान्ही पर महामंत्री के गंभीर दायित्व सर्वसम्मति से सौंप दिहल गइल। हमरा में त एह दायित्व के निर्वहन करे के क्षमता ना रहे, बाकिर रउआ सभ के भरपूर सहयोग आ अहैतुकी कृपा से एह दायित्व के निभावे में हम सक्षम हो सकली। महामंत्री के रूप में हम तीन बिन्दु पर विशेष धेयान दिहलीं। पहिला ओह मनीषी में जे अभाव में रहके अपना परिवार नियन देश के वंचित उपेक्षित आ अभाव–ग्रस्त लोगिन के व्यथा कथा अपना रचनन में उजागिर करे के साधना में रहतबा। सचमुच ऊ लोग देश के धरोहर होला। एह लोग से आग्रह क के भोजपुरी साहित्य के विपुल भंडार भरे के कोशिश कइल गइल।

दूसरा ओर सम्मेलन में आर्थिक स्थिति ठीक ना रहे। एह बदे पत्रिका के आजीवन सदस्य बनावे आ विज्ञापन प्रकाशित करावे पर जोर दिहल गइल। एकर सकारात्मक परिणामो आइल। छत्तीसगढ़ के रायपुर में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन भवन के निर्माण भइल आ ओहिजा के सैकड़ों लोग सम्मेलन से जुड़ल। जमशेदपुर, बोकारो, दिल्ली इत्यादि शहरन में ओहिजा के क्षेत्रीय भोजपुरी संगठनन के सहयोग से कई

www.bhojpurisahityangan.com

गो कार्यक्रम भइल आ सम्मेलन के उद्देश्य आम भोजपुरिया लोगिन तक पहुंचल।

तीसरा तरफ सम्मेलन अपना शुरूआतिए दौर से भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता के लड़ाई लड़ रहल बा। एह दौरान कई जगह पर बैठक, धरना आ प्रदर्शन कइल गइल। दिल्ली में जंतर–मंतर पर, पूर्वांचल एकता मंच आ भोजपुरी समाज के संगे मिल के संविधान के आठवीं अनुसूची में सामिल करे खातिर विशाल प्रदर्शन कइल गइल जेवना में हजारो भोजपुरी प्रेमी साहित्यकार, फिल्मी–अभिनेता आ राजनेता लोग आइल आ सभे भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता देवे के वकालत कइल। पटना में सम्मेलन के पच्चीसवाँ अधिवेशन में कई गो बड़–बड़ नेता लोग मंच से घोषणा कइल कि जदि भाजपा के सरकार बन जाई, त जइसे अटल जी मैथिली के मान्यता दे देले रहन ओइसहीं भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में सामिल कर लीहल जाई बाकिर उहे बात भइल कि सांझे कहे पिआ झूलनी बनइबो, होत भिनसहरा बिसर गइल बतिआ। ई लड़ाई अबे लड़े के पड़ी आ सम्मेलन एकरा खातिर कटिबद्ध बा।

सम्मेलन के संविधान के अनुसार एगो महामंत्री अधिकतम तीन अधिवेशन तक रह सकेला। हमार तीनो कार्यकाल पुरा हो चुकल बा। एह अवधि में रउआ सभे के भरपूर सहयोग मिलल, एकरा खातिर हम अभारी बानी। अब संविधान के अनुरूप केवनो योग्य व्यक्ति के रउआ सभे अगिला महामंत्री के चुनाव कर लिहीं। एह नएकी कार्यकारिणी के हमार भरपूर समर्थन रही।

मार्च 2020 से दुनिया भर में एगो जानलेवा महामारी कोराना के आतंक आईल महामारी भोजपुरी के कईगो साहित्यकारन आ नेही छोही लोगिन के लील लेलस। एहसे सम्मेलन मर्माहत बा। हम ओह दिवंगत आत्मा के विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित कर रहल बानी।

✧ ✧ ✧

सर्वभाषा ट्रस्ट से प्रकाशित भोजपुरी किताब

सर्वभाषा ट्रस्ट
नई दिल्ली

8178695606
sbtpublication@gmail.com
www.sarvbhashatrust.com

www.bhojpurisahityangan.com

दस्तावेज

भोजपुरी के मान्यता खातिर आन्दोलन होखे

- गणेश चौबे

आदरणीय अध्यक्ष जी आ भाई लोगन!

अपने सभन एह सम्मेलन के उद्घाटन करे के काम हमरा के सँउप के हमरा के आदर देहनी ह, हमार सम्मान कइनीं ह, एह लागि हम अपने सभन के आभारी बानी आ धन्यवाद देत बानी।

सबसे पहले हम एह सीवान जिला के धरती के परनाम कर रहल बानी जवन देशरत्न डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद अइसन राजर्षि आ भोजपुरी से अनुराग रखेवाला महापुरूष के जनम–धरती ह। अपने पहिलका आदमी रहीं, जे जनगणना में मातृभाषा का खाना में हिन्दी का साथे भोजपुरी दरज करा के हमनी के रास्ता बतवनी। अपने भोजपुरी बोलेवाला लोग भोजपुरिये में बात करीं, भोजपुरी इलाका में भोजपुरिये में भाषण दी। जब भोजपुरी आन्दोलन के इतिहास लिखाये लागी त ओह में सीवान के नाम आदर के साथ लिखाई। ई ऊहे धरती ह जहाँ सन् 1947 ई0 का एही फरवरी महिनाा में पं. महेन्द्र शास्त्री का प्रयास से भोजपुरी प्रांतीय साहित्य सम्मेलन के पहिलका अधिवेशन भइल रहे। एकर अध्यक्ष डॉ. बलदेव उपाध्याय रहीं दिसंबर महिना में गोपालगंज में राहुल जी का अध्यक्षता में भइल। ई भोजपुरी के पहिलका संगठन रहे। एह धरती पर भोजपुरी के जे झंडा गड़ाइल, आज ले फहरा रहल बा, लहरा रहल बा। इहाँ भोजपुरी के जवना आन्दोलन के बिआ बोआइल, ओकर डाढ़–पाख समूचा देश भर में फइल गइल। जहाँ–जहाँ भोजपुरी बोलेवालोग बा, चाहे ऊ दिल्ली होय या बंबई, ऊ लोग के कोई ना–कोई आपन संगठन कायम हो गइल बा। ओह समय भोजपुरी एगो बोली मानल जात रहे, लेकिन आज त हमनी के ई दावा बा कि भोजपुरी अंतर्राष्ट्रीय भाषा ह।

भोजपुरी एगो विशाल क्षेत्र के भाषा ह जवना के विस्तार लगभग पचास हजार वर्गमील में बा। ई क्षेत्र उतरे दखिने नेपाल का तराई से ले के मध्य प्रदेश का सरगुजा आ उड़िसा का गंगापुर स्टेट तक आ पुरूवे–पछिमें मुजफ्फरपुर जिला से लेके बनारस तक फइलल बा। भारत में भोजपुरी बोले वाला लोग के संख्या अन्दाजन साढ़े पाँच करोड़ बा। भारत का अलावा नेपाल का चारे जिला के मॉरिशस का दु–तिहाई आबादी के ई मातृभाषा ह। फिजी ब्रिटिश गायना, ब्राह्मदेव आ अफ्रिका में भी भोजपुरी भाषी बड़हन संख्या में बसल बाड़े। ब्रिटिश गायना के प्रधानमंत्री भी छेदी जगन आ मॉरिशस के प्रधानमंत्री डॉ. सर रामगुलाम भोजपुर भाषी हउए। नेपाल सरकार भोजपुरी के क्षेत्रीय भाषा के रूप में मान्यता भी दे चुकल बा आ ओकरा पढ़ाई के व्यवस्था होखे जा रहल बा।

'भोजपुरी एगो कर्मठ जाति के भाषा ह, जे हमेशा परिस्थिति का मोताबिक चलेला आ ऊ आपन प्रभाव समूचा भारत पर जमा देले बा। हिन्दुस्तान का सभ्यता का प्रचार में दु जाति के प्रबल हाथ बा। ई काम बंगाली लोग अपना कलम से कइलस आ भोजपुरी लोग अपना लाठी से। भोजपुरी अइसने जाति के भाषा ह। एकर व्यवहार सुगमता से हो सकेला आ ई व्याकरण का उलझन से मुक्त बा।' अभी जे कुछ कहाइल ह, ई हमरा मन के उफिजल बात ना ह। भोजपुरी का बारे में ई बात डॉ. ग्रियर्सन अपना भारतीय भाषा सर्वेक्षण में लगभग सत्तर बरिस पहिले कहले बाड़े। डॉ. ग्रियर्सन प्रथम विद्वान रहस जे भोजपुरी का समग्र रूप के दर्शन कइले आ एह क्षेत्र का गौरवमयी संस्कृति के अनुभव कइले डॉ. ग्रियर्सन का कथन में बहुत कुछ सचाई बा। चंपारन के सन तीस में नमक सत्याग्रह बलिया के सन बेयालिस के भारत छोड़ो आन्दोलन एह बात क प्रत्यक्ष प्रमाण बा। सांच पूछीं त भोजपुरी के क्षेत्र बड़ा–बड़ा राजनेता, कानूनदाँ, साहित्यकार, विचारक अ संत महात्मा के जनम देले बा। उ अब कलमो में ओतने मजबूत बा, जेतना लाठी में।

हमनी का भाषा के भोजपुरी नाम पहिले शोधी विद्वानन तक सीमित रहे। सबसे पहिल सन् 1868 ई. में जौन बीम अपना लेख में भाषा का अर्थ में भोजपुरी के व्यवहार कइले। बाद में भोजपुरी पर काम करेवाला डॉ. ग्रियर्सन, फैलन, फ्रेजर, हौर्नली आदि अनेक यूरोपीयन विद्वान रही नाम से एह भाषा के पुकरले आ इहे नाम भारतीय विद्वानन में भी प्रचलित बा। जहाँ तक कवि

www.bhojpurisahityangan.com

समुदाय के सवाल बा, एकरा के भारतेंदु जी 'बिहारी बोली', पंडित दूधनाथ उपाध्याय 'दोआबा के बोली' पंडित मन्नन द्विवेदी 'सखरिया हिन्दी, 'रघुबीर नारायण 'प्रान्तिक भाषा' आ चंचरीक उत्तर पदेश के ग्रामीण बोली' का नाम से पुकरले बाड़े। बेतिया स्व. श्याम बिहार तिवारी 'देहाती' पहिला कवि रहस जे अपना 'देहाती दुलकी' में एह भाषा वास्ते भोजपुरी नाम के व्यवहार कइले। भोजपुरी आन्दोलन से एह नाम के प्रचार पढ़ल लिखल लोग में भइल, लेकिन देहात का निपढ़ जनता तक भोजपुरी के नाम पहुंचावे के सयुश त ओह अठारह फिलिम का बा, जवन भोजपुरी भाषा में अबतक बनल बा।

इहाँ एक बात के चरचा जरूरी मालूम हो रहल बा। स्व. राहुल जी मातृभाषा के हिमायती रहस सही, लेकिन उनका नजर में भोजपुरी नाम के कवनों भाषा ना रहे। ऊ गोपालगंज में भोजपुरी प्रान्तीय साहित्य सम्मेलन के अध्यक्षता कइलें, लेकिन ऊ अपना भाषण में भोजपुरी नाम के चरचा तक ना कइले। ऊ भोजपुरी क्षेत्र के काशिका आ मल्लिका दू क्षेत्र में बांट देले रहस। ऊ मल्लिका में आठ गो एकांकी नाटक लिखलें। अब एगो आऊर नाम सुने में आवत बा–बल्लिका। भोजपुरी का हित में एह सब नाम के चरचा तक छोड़ देल जरूरी मालूम हो रहल बा। राहुल जी बैशाली का आस पास का भाषा के बज्जिका नाम रखलें। बज्जिका के क्षेत्र बहुत छोट बा, लेकिन ओह भाषा के समर्थक लोग चंपारन का समूचा सिकरहना सब डिविजन पर मुजफ्फरपुर जिला का बेरगनिया, बरूराज, पारू आ साहेबगंज अंचल पर सारन जिला का पारसा सोनपुर, दिघवारा आदि क्षेत्र पर आपन दावी धरत बा, जवनो के जनसंख्या लगभग बीस लाख बा। भाषा विज्ञान के विश्वविख्यात विद्वान डॉ. ग्रियर्सन एह सब क्षेत्र के भोजपुरी क्षेत्र मनले बाड़े। ई सब पूरबी भोजपुरी के क्षेत्र ह। एह में कवनों संदेह नइखे। कहे के त ऊ लोग कह देत बा कि ग्रियर्सन के पहिला प्रयास रहे, लेकिन पुष्ट प्रमाण देके उनका बात के काटे वाला अभी तक कोई सामने ना आइल ह। दोसरा का बेटा से कोई मतारी पुत्रवती नइखे बन सकत। ओइसही दोसरका धन से केहू धनिक ना बन सकेला।

हमनी का बज्जिका या वैशालिका के सत्ता त मानत बानीं लेकिन एह सब क्षेत्र पर ना। हिन्दी के उत्तम पुरुष के क्रिया एन 'हूँ' का बदला में जहाँ हती' व्यवहार होला, ऊ बज्जिका के क्षेत्र ह आ जहाँ बानी, बाड़ी, बाटी बोलल जाला ऊ भोजपुरी के क्षेत्र ह। मोटा–मोटी एह से दूनू भाषा के पहचानल जा सकेला।

भोजपुरी क्षेत्र में कवनो खनिज ना पावल जाला, कवनो उद्योग–धंधा नइखे, चीनी बनावे के छोड़ के कवनो कल–कारखाना नइखे। क्षेत्र में गंगा, सरयू, सोन, सिकरना, गंडक आदि नदी बा, जवना में बरसात में बाढ़ आ जाला आ इहाँ के खेती बारी चौपट हो जाला। एह सब कारन से एह क्षेत्र में भयंकर गरीबी बा एकर फल ई बा कि इहाँ का निवासियन का अपना रोजी–रोटी का खोज में जनम धरती छोड़ के दूर–दूर जाये के परेला। ई लोग जहाँ जाला उहाँ का निवासियन से घुल मिल जाला। एह से भोजपुरियन में संकीर्णता के पनपे क अवसरे ना मिले आ ई लोग राष्ट्रीयता के प्रबल समर्थक बन जाला। ई सब भइलों पर ई लोग अपना भाषा आ संस्कृति के कायम रखले बा। ग्रियर्सन साहब के कथन बा कि भोजपुरियन में अपना भाषा आ संस्कृति के कामय रखले बा। ग्रियर्सन साहब के कथन बा कि भोजपुरियन में अपना भाषा पर एतना गर्व बा कि जहाँ ई भोजपुरी भाषी भेंटइहें, उ भोजपुरिये में बात करिहें। लेकिन हमरा समझ से भोजपुरी का प्रयोग में अपनापन के भावना काम करेला आ ई नम्रता आ निराभिमानता के भी परिचय देवे ला। भोजपुरी भाषियन में प्रगतिशीलता के परंपरा वैदिक युग से आ रहल बा। वैदिक युग मे एह क्षेत्र में व्रात्य लोग निवास करे जे रूढ़ीवाद के विरोधी रहे। इहे कारन बा कि बुद्धदेव का एह क्षेत्र में अपना धर्म के प्रथम–प्रथम प्रचार करे में सफलता मिलल। एतने ना एह क्षेत्र कबीर पंथ, शिवनारायणी, बावरी, सखी, सरभंग, धरनीश्वरी आदि अनेक संत संप्रदायन का संतन के ढेर के ढेर पद मिलेला। जे साधु संतन का जबानी इयाद बा आ ऊ लोग का मठ में पोथियन में सुरक्षित बा। भोजपुरी के संत साहित्य बहुत समृद्ध बा। आठवीं सदी का सिद्ध से लेक आज का आनन्दमार्गी संतन तक के बहुत–बहुत पद भोजपुरी में पावल जाला। अब अइसन शोधी विज्ञानन के बहुत जरूरत बा, जे मठ–मठ में घूम–घूम के, साधु–संतन से मिल–मिल के लोग का 'सबद' आ 'बानी' संग्रह करे, अध्ययन करे आ प्रकाश में लावे।

कहलन जाला कि भोजपुरी में रीति काव्य ना बा। सांच बात त ई बा कि हमनी के अपना प्रचीन साहित्य का खोज का दिसा में कवनों ठोस कदम उठइबे ना कइनी ह। भोजपुरी क्षेत्र का पंडितन का बस्ता के तलासी

www.bhojpurisahityangan.com

होखे के चाही कि ओह में भोजपुरी के कवन–कवन ग्रन्थ बा। भोजपुरी क्षेत्र का प्राचीन कवियन कविताई के एह नजर से अध्ययन होखे के चाही कि ओह में भोजपुरी के प्रभाव बा। भोजपुरी में आधुनिक साहित्य के आरंभ पं. राम गरीब चौबे का नागरी विलाप आ पं. रविदत्त शुक्ल का देवाक्षर चरित आ जंगल में मंगल नाटक से भइल बा। ई सब नाटक हिन्दी के ह लेकिन ओह सब में कुछ अंक भोजपुरी बा। एह सब पुस्तकन के रचना सन् 1885 ई. का आसपास भइल बा। तब से सन् 1947 ई. तक भोजपुरी में छिटपुट रचना होत आइल जवना में अधिकांश राष्ट्रीय गीत रहे। एकरा बाद भोजपुरी में बहुत तेजी से साहित्य के विकास भइल ह। एह में हरेक विद्या के कम या बेसी रचना पावल जाता। भोजपुरी के काव्य आ नाटक साहित्य त बहुत आगे बढ़ गइल बा। लेकिन इतिहास कोष, निबंध आ समीक्षा साहित्य के कमी बा विद्वानन का एह दिसा में भी काम करे के चाहीं।

भोजपुरी काव्य के भाषा में त एकरुपता आ गइल बा, लेकिन गद्य का भाषा में अराजकता के स्थिति बा। जेकरा मन में जइसन खेयाल आ जाला, ओही ढंग से उ आदमी लिख देबेला। विद्वात्समाज में त कवनो भाषा का परिनिष्ठत रूप के मान्यता मिलेला। अइसे त कबो भाषा गढ़ल ना जा सकेला आ ओकरा रूप के आप से आप विकास होला, लेकिन अब उपयुक्त समय आ गइल बा कि भोजपुरी का वर्तनी शब्दन के विभक्ति का क्रियापद् का प्रयोग आ वर्तनी संबंधी मोटा–मोटा सिद्धांत तय कर लिहल जा। एके शब्द के अलग–अलग क्षेत्र मे अलग–अलग रूप प्रचलित बा, कहीं–कहीं अलग–अलग क्षेत्र में अलग–अलग रूप प्रचलित बा, कहीं–कहीं अलग–अलग अर्थ भी पावल जाला। जगह–जगह पर क्रियाप आ विभक्ति के भी अलग रूप बा। कवनों भाषा के पहचान त एही दूनू से होला। एह से एकरा ई सवाल पर विचार जरूरी बा। बिहार विश्वविद्यालय का भोजपुरी के मान्यता दे देला का बाद से इ सवाल सामने आ गइल बा। एह वास्ते गोष्ठी के आयोजन होखे के चाही – "वादे–वादे जयते तत्व बोधः "।

आज भोजपुरी जनता का ओर से मांग हो रहल बा कि साहित्य अकादमी भोजपुरी के मान्यता प्रदान करे, भारत सरकार संविधान का आठवां सूची में भोजपुरी स्थान देवे, भोजपुरी क्षेत्र में आकाशवाणी के केन्द्र खुले आ एह भाषा में प्रसारण कइल जाय, प्राइमरी स्तर से विश्वविद्यालय स्तर तक भारतीय भाषा का रूप में भोजपुरी के पढ़ाई होखो आ राज्य सरकार क्षेत्रीय भाषा का रूप में भोजपुरी के मान्यता देवे। भोजपुरी क्षेत्र के विस्तार, एह भाषा के बोलेवाला जनता के संख्या आ भरल–पूरल साहित्य का ख्याल से ई सब मांग उचित बा आ ई सब मंजूर होखे के चाहीं। सरकार कवनो ना कवनो बहाना पर एह सवाल के टारत जात बा। सरकारी सहायता आ सहयोग का अभाव में भोजपुरी का विकास में बाधा पहुंच रहल बा। मैथिली के अनेक विश्वविद्यालय मान्यता दे चुकल बा, साहित्य अकादमी से भी एह भाषा का मान्यता मिल गईल बा। आकाशवाणी का पटना केंद्र से मैथिली में प्रसारण हो रहल बा। हाले में बिहार सरकार मैथिली के बिहार लोक सेवा आयोग का परीक्षा में एक भाषा का रूप में मंजूरी देलस ह। एह सब के फल ई हो रहल बा कि मैथिली पढ़ेवाला विद्यार्थीयन का अच्छा अंक मिल जाता, अच्छा डिविजन आ अच्छा क्लास मिल जाता आ भोजपुरी भाषी विद्यार्थी पिछड़ जात बाड़े। एह कारन से भोजपुरी के मान्यता के सवाल अब रोजी–रोजगार के सवाल बन रहल बा। मैथिली के जवना समय साहित्य अकादमी मान्यता देलस, ओह समय मैथिल में जेतना साहित्य रहे ओह से बेसी साहित्य आज भोजपुरी में बा। भोजपुरी के मान्यता ना मिलला से भोजपुरी भाषियन में रोष पैदा हो रहल बा। सरकार मैथिल के केतनो सुविधा देत बा एहं में हमनी का उज्र नइखे। हमनी त एतने चाहत बानी कि ऊ सब सुविधा भोजपुरी का भी मिले के चाही। दू बरिस होता, बिहार विश्वविद्यालय भोजपुरी के आधुनिक भारतीय भाषा का रूप में पढ़ाई लागि दे देलस आ कवनो– कवनो कॉलेज में पढ़ाई भी हो रहल बा। लेकिन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग आ बिहार सरकार से एह काम वास्ते विश्वविद्यालय का कोई तरह के आर्थिक सहायता नइखे मिलत, जवना से भोजपुरी का पढ़ाई में बाधा हो रहल बा। बिना पइसा के त कोई काम हो नइखे सकत। बिहार सरकार का एह सवाल पर सहानुभूति के विचार करे के चाहीं।

भोजपुरी का मान्यता वास्ते व्यापक आन्दोलन होखे के चाहीं आ जब तक मान्यता ना मिले, आन्दोलन चलत रहे के चाहीं। हिन्दी आ अंग्रेजी का पत्र–पत्रिकन में भोजपुरी साहित्य पर लेख भी लिखाये के चाहीं जेसे पठित समाज का भोजपुरी का प्रगाति के जानकारी मिलत रहे। हमनी के प्रचार पक्ष बहुत बहुत कमजोर बा। इहाँ

www.bhojpurisahityangan.com

इहो बात स्पष्ट कर दिहल जरूरी बा कि हमनी का कोई अइसन काम नइखे करे के जवना से हिन्दी के अहित होय। हमनी हिन्दी का छत्रछाया में भोजपुरी के विकास चाहत बानी।

भोजपुरी का सामने कई गो समस्या बा, जवना में सबसे कठिन बा पुस्तकन का प्रकाशन आ खपत के सवाल। भोजपुरी में अइसन कोई समर्थ प्रकाशन नइखे जे लेखकन का पुस्तक के प्रकाशित कर सके। लेखक लोग कइसहुँ किताब छपवा देवेला, लेकिन विज्ञापन आ बिक्री का व्यवस्था का अभाव में ऊ खप ना सके। एह वास्ते भोजपुरी साहित्यकार सहयोग समिति के स्थापना होखे के चाहीं आ सरकार से आर्थिक सहायता लेके ग्रंथ के प्रकाशन आ बिक्री के व्यवस्था होखे के चाहीं। व्यवसाहियक बुद्धि से काम लेला पर पुस्तक खप सकेला। भोजपुरी पुस्तकन के कवनो अइसन दोकान नइखे जहाँ अब तक के प्रकाशित सब पुस्तक एके जगह मिल जाव। ई स्थिति भी पुस्तक का खपन में बाधक बा। अइसन कवनो पुस्तकालय भी नइखे, जहाँ भोजपुरी के अब तक के प्रकाशित सब पुस्तक आ पत्र–पत्रिका देखे के मिल सके। एह से शोधी विद्वानन का बहुत दिक्कत उठावे के परेला। पटना नगर में अइसन केंद्रीय पुस्तकालय के स्थापना जरूरी बा। साथ ही भोजपुरी भाषी हरेक जिला में भी अइसन पुस्तकालय का स्थापना के प्रयास होखे के चाहीं।

सुने के आइल ह कि बिहार सरकार भोजपुरी भवन वास्ते पटना में एगो जमीन दे रहल बा। ई शुभ समाचार बा। एह वास्ते बिहार सरकार धन्यवाद के हकदार बा। साथे साथ बिहार सरकार से हमनी का इहो आग्रह करे के बा कि भोजपुरी भवन का निर्माण आ उचित व्यवस्था वास्ते सरकार ट्रस्ट भी बना देवे।

अंत में हम ई करे के चाहत बानी कि भोजपुरी आन्दोलन विशुद्ध साहित्यिक आ सांस्कृतिक आन्दोलन ह आ एकरा राजनीति से कवनो सरोकार नइखे।

एतना कह के हम सम्मेलन के उद्घाटन करत बानी।

जय हिन्दी। जय भोजपुरी।।

(सीवान जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पहिला अधिवेशन (24 फरवरी 1973) के उद्घाटन भाषण)

✧ ✧ ✧

जइसे स्वराज के पियास अनका सुराज से ना बुझ सके ओइसहीं स्वभासा/मातृभासा के पियास कवनो आउर समृद्ध भासा ना बुझ सके।

– पं. दीनदयाल उपाध्याय

भासा के मामला जनसंख्या के आंकड़ा से तय ना हो सके। काहे कि आंकड़ा का सीना में दिल ना होखे आ मुहब्बत के आंकड़ा ना होखे। का दस बेटा के मतारी दू बेटा के मतारी से अधिका मतारी होली? भोजपुरी हमार मतारी हई आ हिन्दी हमार मौसी।

– राही मासूम रजा

जइसे खीर परोसल थरिया ह ओइसहीं दाल–रोटी परोसल थरिया भी थरिया ह। ओइसहीं आधुनिक साहित्य सम्पन्न भासा भासा ह आ लोकसाहित्य सम्पन्न भासा भी भासा ह।

– आचार्य किशोरी दास वाजपेई

भोजपुरी के 'पूरबी बोली' भी कहल जाला। जवना खातिर देवनागरी लिपि के अलावे कैथी आ बही–खाता लिखे खातिर महाजनी लिपि के प्रयोग होत रहे।

– डॉ. भोला नाथ तिवारी

www.bhojpurisahityangan.com

भारत के चार राष्ट्रगान

- विंध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव

धरती का जवना खंड पर अपनी जनम लेला, जवना पर अनादिकाल से ओकर पूर्वज रहत–बसत एगो विशेष जीवन–दर्शन, जीवन–पद्धति आ जीवन मूल्य के स्थापना करत आइल बा; ओह धरती का खण्ड के, जवना का साथ ओकर माता–पुत्र के संबंध बा, जवना के निश्चित भौगोलिक अस्तित्व आ ऐतिहासिक परंपरा बा, अइसन धरती के खण्ड देश, राष्ट्र भा मातृभूति का नाम से जानल जाला। एह देश का धरती का साथ मातृभाव राखे वाला एगो राष्ट्र का नाम से पुकारल जाला। जनम धरती भा जनम भूमि का प्रति इहे मातृभाव राष्ट्रीयता के ठोस आधार होला। भौगोलिक इकाई का रूप में जग जाहिर देश का प्रति उहाँ बसे वाला, उहाँ जोये–मरे वाला लोग का अइसन मातृभाव के उल्लेख मानव सभ्यता का उदय काल में रचाइल ऋग्वेद का पृथ्वी सूक्त मे अइसे कइल बाः–

माताभूमिः पुत्रोऽहंम् पृथिव्या।।

एही मातृभाव का चलते देश की सीमा का भीतर के नदी, पहाड़, गाछ–बिरिछ, घास–पात, अन्न–दाना। फल–फूल, जिया–जनावर, चिरई–चुरूंग, पत्थर–माटी सब का साथ एकात्म–भाव पैदा होला। एही नमस्य भावना से प्रेरित होके मातृभूमि का प्रति कवि का हृदय से भक्ति के भाव जब गीत बन के स्वतः फूट पड़ेला तब ऊ देशगान, राष्ट्रगान का रूप से पुकारल जाला। राष्ट्रगान मातृभूमि का चरण में, कवि का चेतना का सहज स्वाभाविक श्रद्धा के अनुराग रंजित फूल होला जवना का अंतर में मातृभूमि का कण–कण का साथे कवि का भाव–विह्वल एकात्मता के सुगंध–भरल रहेला।

भारत के पहिलका राष्ट्रगान मातृभूमि वंदना का रूप में 2875 में बंगला के उपन्यासकार बंकिम चटर्जी लिखलन। ई गीत पहिले स्वतंत्र रूप से लिखाइल। छत्र वरिस जब ई बंगदर्शन पत्रिका में छपाइल तब लोक एकरा के जानल। बाद में बंकिम बाबू एह गीत के अपना उपन्यास 'आनन्द मठ' में जब शामिल कर देलन तब जादे लोग एकरा के जानल। आनन्दमठ का विषय वस्तु का बीच में शामिल भइला से एह गीत के प्रभाव खुलासा हो गइल। ई गीत बड़ा तेजी से जागरण आ स्वाधीनता का लहर से लहरात देशवासी लोग के प्रबल प्रेरणा से भर देलक आ देश का स्वतंत्रता अभियान के ई जयघोष हो गइल। संस्कृत बंगला का मिलल जुलल शब्दन से रचल एह गीत के गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर संगीत–रचना कइलन आ अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का 1896 आ 1906 का अधिवेशन में खुद जा के सुनवलन। स्वतंत्रता अभिमान के जयघोष बन के "वंदे मातरम्" शब्द देश भर में व्याप्त हो गइल। लेकिन देश का समूचा स्वतंत्रता संग्राम में लोग के अनुप्राणित करे वाला, लोग का देह में बिजली भर देने वाला एह गीत के ई दुर्भाग्य भइल कि देश का स्वतंत्रता मिलला का बाद एकरा देश का घोषित राष्ट्रगान के प्रतिष्ठा ना मिल सकल। तब भी देश का जनमन में एकर उहे प्रतिष्ठा आजो बा, तनिको कम ना। वंदे मातरम् का प्रभाव का बारे में थियोडोर एल0 शे अपना किताब "लिगेसी ऑफ लोकमान्य में लिखले बाड़न" बंगाल से समस्त महाद्वीप में वह घोष गूँज उठा– वंदेमातरम्। भारत की समस्त महानता, बुद्धि, विरासत और शौर्य एक ही शब्द में समाहित हो गया– वन्देमातरम्। भारत माँ की संताने वंदना को झुकीं, और भारत माँ उठ खड़ी हुई।

बंकिम चन्द्र चटर्जी के मूल गीतः

वन्देमातरम्।
सुजलाम्, सुफलाम् मलयज शीतलाम्
शस्य श्यामलाम् मातरम्। वंदेमातरम्।।
शुभ्र ज्योन्स्ना पुलकित यामिनीम्
फुल्ल कुसुमिन द्रुमदल थोमिनीम्
सुहासिनीम् सुभधुर भाषिणीम्
सुखदाम् वरदाम्, मातरम्। वन्दे मातरम्।।

सप्त (त्रिंस) कोटि कण्ठ कलकल निनाद कराले। द्विसप्त (द्वित्रिंस) कोटि भुजैर्धृत खर करवाले। के बले माँ तुमि अबले?

बहुबल धारिणीम् नमामि तारिणीम्
रिपुदल वारिणीम्, मातरम्, मातरम्। वन्देमातरम्।।

www.bhojpurisahityangan.com

तुमि विद्या, तुमि धर्म, तुम हृदयि, तुमि मर्म
त्वंहि प्राण शरीरे,
बाहुते तुमि मा शक्ति, तुम हृदयि तुमि मा भक्ति
तोमारयि प्रतिभा जगी म मंदिरे मंदिरे, मातरम्।
वन्देमातरम्।
त्वंहि दुर्गा दश प्रहरण धारिणीम्
कमला कमलदल बिहारिणीम्
वाणी विद्या दाखिनी, नमामि त्वाम्
नमामि कमलां, अमलां, अतुलां, सुजलां, सुफलां, मातरम्
श्यामला, सरलां, सुस्मितां भूषितां, धरणी, भरणी, मातरम्
वन्देमातरम्

दोसर गीत जवना का राष्ट्र गान के गौरव मिलल ऊ गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के लिखल "जन–जन–मन" बा। एह गीत का एक छन्द। "राष्ट्रगान" का रूप में घोषित मान्यता मिल गइल बा। 2947 में स्वतंत्रता मिल गइला का बाद ई राष्ट्र गान का पूरा मर्यादा का साथ गावल जाय लागल। देश आ आजादी मिलला का कुछ पहिले नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का "आजाद–हिन्द–सरकार" का राष्ट्रगान का रूप में एह गीत के पहिला पौती लिया चुकल रहे। शेष गीत का पहिला छंद के तीसरा आउर चउथा पाती भी थोरका हेर–फेर का साथ सामिलकर लिआइल रहे। नउवाँ दसवाँ पाती जस के तस लिया गइल रहे। हो सकेला एही पृष्ठ भूमि में एह गीत के स्वतंत्र भारत के राष्ट्रगान मान लियाइल होय भा कवनो दोसरा विचार से। एकरा सार्वजनिक जानकारी का अभाव में दावा का साथ कुछ कहल ना जा सकत बा।

रविबाबू के गीत

जनगणमन अधिनायक जय हे भारत भाग्य विधाता!
पंजाब सिंध गुजरात मराठा द्राविउ उत्कल बंगऽ
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा उच्छल जलधि तरंगऽ
तब शुभ नामे जागे, तब शुभ आशिष मांगे
गाहे तब जय गाथा।

जन गन मंगल दायक जय हे भारत भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे।
अहरह तब आह्वान प्रचारित शुनि तव उदार बानी
हिन्दु बौद्ध सिख–जैन पारसिक मुसलमान खृस्तानी
पूरब पश्चिम आस, तब सिंहासन पासे
प्रेम हार हय गाथा।

जन गण–ऐक्य–विधायक जय हे, भारत भाग्य विधाता।
जये हे, जय हे, भारत भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे।

पतन अभ्युदय–बंधुर पन्था, युग–युग धावित यात्री।
हे चिर सारथी, तब रथचके मुखरित पथ दिन रात्रि।
दारूण विप्लव–माँझे, तब शंख ध्वनि बाजे
संकट दुःख त्राता।

जन गण पथ परिचायक जय हे भारत भाग्य विधाता।
जये हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे।
घोर तिमिर घन निविड़ निशीथे पीड़ित मूर्छिते देशे
जाग्रत छिल तब अविचल मंगल नतनयने मंगल नतनयने
अनिमेषे।
दुःस्वप्ने आंतके, रक्षा करिले अंके
स्नेहमयी तुमि माता

जन गण दुःख नायक जय हे, भारत भाग्य विधाता!
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे।
रात्रि प्रभातिल, उदित रबिच्छवि पूर्व उदय गिरि माले
गाहे विहंगम, पुण्य समीरण नव जीवन रस ढाले।
तब करुणारुण रामे, निद्रित भारत जागे
तब चरणे नत माथा।
जय जय जय हे, जय राजेश्वर भाग्य विधाता।
जये हे, जये हे, जय हे, जय जय जय जय हे।

आजाद–हिन्द सरकार के राष्ट्रगान

जन मन गण अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता।
शुभ सुख चैन की बरखा। बरसे, भारत भाग है जागा।
पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा, द्राविड़ उत्कल बंगा।
चंचल सागर विंध्य हिमाचल नीला जमुना गंगा।

तेरे नित गुन गायें
तुझसे जीवने पायें
सब तन पावे आशा।
सूरज बनकर जग पर चमके भारत नाम सुभागा।।

www.bhojpurisahityangan.com

जय हे, जय हे, जय हे
जय, जय, जय जय हे।।
सबके दिल में प्रीत बसाये, तेरी मीठी बानी।
हर सूने के रहने वाले, हर मजहब के प्राणी।।
सब भेद और फरक मिटाके
सब गोद में तेरी आके
गूँथे प्रेम की माला।
सूरज बन कर जग पर चमके भारत नाम सुभागा।।
सुबह सबेरे पंख पखेरू तेरे नित गुन गायें
बास भरी भरपूर हवाएँ, जीवन में ऋतु लायें
सब मिलकर हिन्द पुकारे
जय आजाद हिन्द के नारे
प्यारा देश हमारा,
सूरज बनकर जग पर चमके भारत नाम सुभागा।
जय हे, जय हे, जय हे जय जय जय हे।

बाकिर जे भी कारण होय रवि बाबू का एह गीत का रचना के पृष्ठभूमि बंकिम बाबू का "वन्देमातरम्" का रचना का पृष्ठभूमि से एकदमे भिन्न बा। ई गीत सन् 1911 में बृटिश सम्राट जार्ज पंचम का भारत आगमन का मौका पर अभिनन्दन करे का उद्देश्य से लिखवावल गइल रहे। एमें जार्ज पंचम के 'राजेश्वर' शब्द से संबोधित कइल गइल बा आ उनके के "भारत भाग्य विधाता" कहल गइल बा आ ई कामना कइल गइल बा जे उनका करुणा का छांह में सूतल भारत देश जागे। एही आशा से ई देश उनका चरण पर आपन माथा टेकले बा। ई गीत 1911 में सरकारी आर्दश पर सरकारी प्रयोजन से लिखइल रहे। एमे बृटिश राजभक्ति के आवाज तेज बा। भलहीं एकर भाषा संस्कृतनिष्ठ भइल गुने ई गीत जार्ज पंचम का अभिनंदन में ना गाबल जासकल बाकिर एमें रचनाकार का ओह घड़ी के मानसिकता त छिपल नइखे रह जात। इहाँ रवि बाबू का देश प्रेम पर कवनों संदेह नइखे कइल जात, काहे कि उहे रवि बाबू शैमतम जीम उपदक पे पूजीवनज मिंतश जइसन कविता लिख्लन। आगे दुइए बरिस का बाद 1916 में उनका 'गीतांजलि' पर नोबेल पुरस्कार मिलल, आ ई गीत लिखे का समय उनकर उमिर 50 बरिस हो चुकल रहे। एहसे उनका मानसिक परिपक्वता में कवनों संदेह के गुंजाइश नइखे रह जात। असल बात ई देखे के बा जे राष्ट्रगान का रूप में लिखित आ प्रचलित गीतन के पीछे कवि लोग के ओह समय मानसिकता का रहे आ ऊ सब गीत देश का आशा, आकांक्षा, संस्कृति, पौरुष, स्वाभिमान आ परंपरा के केतना प्रतिनिधित्व करत रहे। साँच पूछी त ई गीत राष्ट्रगान का रूप में लोग का सामने व्यापक रूप से तब ही आइल जब ई स्वतंत्र भारत का राष्ट्रगान का रूप में मान्य, घोषित आ प्रचलित हो गइल।

रवि बाबू का रचना का समानान्तर सुभाष बाबू का आजाद हिन्द सरकार के राष्ट्रगान रख के देखी। कई गो सादृश्य आ कई गो अंत साफ–साफ देखाई पड़ी। जइसे–

साम्य–दूनू के छंद, विधान एके बा।– देश, देशवासी आ प्रवृत्ति संबंधी ध्वनि दूनू में लगभग समान बा।

अंतर– रवि बाबू का गीत में बृटिश राजभक्ति के स्वर प्रखर बा।

- सुभाष बाबू द्वारा अपनावल राष्ट्रगान में देश भक्ति के स्वर प्रखर बा।
- रविबाबू का गीत में बृटिश दासता का प्रति कृतज्ञता के भाव बा।
- आजाद हिन्द सरकार का राष्ट्रगान में देश का गौरव का उत्कर्ष के आकांक्षा आ स्वतंत्रता प्राप्ति वास्ते प्रेरणा बा आ देश का पराधीनता का मूल कारण का वास्ते आग्रह का साथ राष्ट्रीय, चरित्र का परंपरागत गुण के गान बा।
- छंद संख्या रविबाबू के गीत में पाँच गो बा, आजाद हिन्द फौज का राष्ट्रगान में छंद संख्या तीन बा।

जब देश में आजादी वास्ते संघर्ष जोर पकड़लस आ जिनगी का हर क्षेत्र में एकर प्रभाव साफ–साफ देखाई पड़े लागल त बृटिश सरकार का भेद–नीति से देश का ओह जातिगत–धर्मगत एकता में दरार पड़े लागल, जवन सन 1857 का स्वतंत्रता संग्राम से लेके क्रांतिकारी लोग का सक्रियता तक कायम रहे ब्वउउनदंस ूंतक (कम्यूनल अवार्ड) आ मचंतंजम म्समबजतवंजम (पृथक निर्वाचन अधिकार) जइसन फूट डाले वाला बृटिश सरकार का योजना से राष्ट्रीय जीवन में जे जहर घुलत रहे ओकरा के प्रभावहीन करे का दिशा में डॉ0 इकबाल के रचना "सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा" बहुत जोरदार साबित भइल। ई गीत खूब लोकप्रिय भइल आ कांग्रेस

www.bhojpurisahityangan.com

का जन–सभा में ई गीत खूब गावल जाय। ई तीस का बाद का दशक में भइल। 1965 का गवर्नमेंट ऑफ इन्डिया ऐक्ट का प्रावधान का अनुसार जब राज्य में कांग्रेसी मत्रिमंडल बनल त स्कूलन में ई गीत समूह गान का रूप में गावल छात्र रहीं इहे. गीत प्रार्थना का घंटी में गावल जाय।

डॉ0 म0 इकबाल के गीत

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा
हम बुलबुलें हैं इसकी यह गुलसिताँ हमारा,
गुरबत में हों अगर हम, रहता है दिल चमन में
समझो हमें वहाँ ही, दिल हो जहाँ हमारा
परबत जो सबसे ऊँचा, हमसाया आसमाँ का
वह संतरी हमारा वह पाचवाँ हमारा
गोदी में खेलती है जिसकी हजारों नदियाँ।
गुलशन है जिसके दम से रश्के जिना हमारा
ऐ आवे–रूदे गंगा वह दिन है याद तुझको
उतरा तेरे किनारे जब कारवाँ हमारा
मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना
हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमाँ हमारा
इकबाल कोई महरम अपना नहीं जहाँ में
मालूम क्या किसी को दर्द नेहा हमारा

ई गीन इकबाल का शायरी का पहिला दौर में लिखाइल रहे। ओह घड़ी गांधी जी आ उनका पूर्ववत्ती राष्ट्रीय नेता लोग का विचार से देश में सर्वधर्म समभाव के मानसिकता तैयार होत रहे। ओह वातावरण में अइसन गीत लिखाइल कवनो अचरज के बात ना रहे। बृटिश शासन से मुक्ति सबकर आकांक्षा रहे। सन् 1857 का बहादुर शाह 'जफर' आ अजीमुल्ला खाँ से क्रांतिकारी युग का असफाकुल्लाह तक सब धर्म वाला लोग एह देश के आपन मातृभूमि (मादरेवतन) मानत आइल। म0 इकबालो के ई गीत अइसने मानसिकता में लिखाइल। बाकिर जब म0 इकबाल ईगलैंड से शिक्षा पाके लौटलन तब उनकर राष्ट्रीय जीवन संबंधी पहिलका विचार एकदम बदल गइल। ऊ व्यापक आ उदार से संकीर्ष आ एकांगी हो गइले आ राष्ट्रीय एकता का विरुद्ध चल गइले। एह नया मानसिकता में इकबाल का अपना एह गीत का पृष्ठभूमि का मानसिकता पर एतना अफसोस भर आकोश भइल कि ऊ एह गीत के अपना नया मानसिकता का अनुरूप फेर से हेर फेर करके रचना कइलन। परिवर्तित रूप में गीत अइसे भइल–

"सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा"
"चीनो अरब हमारा, हिन्दोस्ताँ हमारा
मुस्लिम है हम वतन है
सारा जहाँ हमारा"

संस्कृति का निर्मल धारा में नहाइल, राष्ट्रीयता का गंगा यमुना में पखारल ऊ गीत राजनीति का कीचड़ में लसरा गइल। एह गीत का गौरव के अकाल मृत्यु एकरा अपने कवि का हाथे हो गइल। अपना रचना का साथ अइसन व्यवहार संसार के आउर कबनो रचनाकार ना बइले होई। ओह गीत का एह नया संस्करण से शिष्ट समाज में बड़ा क्षोभ भइल। मन के ई क्षोभ आनन्द नारायण मुल्ला का एह शब्दन से जाहिर होता–

"हिन्दी होने का नाज था जिसको
आज हिजाजी बन बैठा।
अपनी महफिल का हिन्द पुराना
आप नमाजी बन बैठा।

'वंदे मातरम्' का बाद अगर दोसरा गीत का राष्ट्रगान के मर्यादा मिलल त ऊ गीत रघुवीर नारायन के 'बटोहिया' रहल। रचना काल का दृष्टि से एह गीत के स्थान दूसरा बा। वंदे मातरम् के रचना काल 1875 आ प्रकाशन काल 1881 रहे। बटोहिया के रचना 1411 में भइल। ई दूनू गीत के रचना क्षेत्रीय भाषा में जनभाषा में भइल। प्रेषणीयता, प्रभविष्णुता आ व्यापकता का कारण ई गीत सचमुच जन–गण–मन में बस गइल। बेधि का नशा में सूतल देश, आत्म विस्मृति का नींद में सूतल देश के जगावे में ई गीत बड़ा काम कइलस। बड़ा अनुराग, बड़ा ललक का साथ जनता एह गीत के स्वागत कइलस। बंकिम चंद्र का 'वंदेमातरम्' में धन–धान्य से परिपूर्ण मातृभूमि के कल्पना विद्या–बल बुद्धि से युक्त शक्ति स्वरूपा देवी का रूप में कइल बा। ई मातृशक्ति लोक रक्षा वास्ते हमेशा अवतार देवी का रूप में कइल बा। "इत्थ यदा–यदा बाधा दावोया भविष्यति। तदा तदावतीय हिं करिष्याम्यरि संक्षयम्।" रघुवीर नारायण का 'बटोहिया' में राष्ट्र के भौगोलिक, ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक गरिमा आ प्रेरणा बीज रूप में भरल बा। ई गीत राष्ट्र का

www.bhojpurisahityangan.com

इतिहास, भूगोल आ संस्कृति के त्रिवेणी बन गइल बा, जवना का नाद–सौंदर्य का धारा में नहा–नहा के श्रोता तृप्त हो–हो के अतृप्त रह जाला। राष्ट्र आ राष्ट्रीयता का सकल्पना के हर एक तत्व एह गीत में मौजूद बा। देश नदी, पहाड़, वन का रूप में देखाई पड़ेलगा बाकिर ई ओतने ना होला। कहल बा–

यह कंकड़ पत्थर रेत नहीं
यह तो माता है, माता,
युग–युग से रक्त लिये आता है
देश–धर्म का नाता।

देश के माटी जब मातृभूमि का अनुराग का रस में सुना जाला त ऊ चंदन बन जाला। तब नू देश खातिर प्राण निछावर करे वाला फाँसी का तख्ता से ई अंतिम चाह सुनावेला–

"कुछ चाह अब नहीं है,
है तो चाह बस यही।
रख दे कोई जरा–सी
खाके–वतन कफन में"

आपन भइला गुने जइसै अपना घर के हर चीज प्यारा होला ओइसहीं एह गीत में देश से संबंध राखे वाला ओह हर चीज के उल्लेख भइल बा जवना के सहयोग एह देश के महान बनावे में बाटे। नदी, पहाड़, गुफा, समुद्र, अन्न, फल–फूल, गाछ–विरिछ, चिरई, चिंतक, दार्शनिक, कवि, वीर, शासक, ऋषि–मुनि महापुरुष सब के इआद करावल गइल बा एह गीत में। एह सब लोग के कहानी कवि का शब्द में 'मोरे बाप दादा के कहानी' बा। इहे कहानी जे इआद करी ऊ मातृभूमि के दुख दर्द समझी आ ओकरा के दूर करे वास्ते कृतसंकल्प होई। एही विस्मृति का ओर आगे चलके मैथिली शरण गुप्त अपना 'भारत भारती' में संकेत कइलन–

"हम कौन थे, क्या हो गये हैं,
और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर
ये समस्याएँ सभी।।"

'बटोहिया' गीत के बटोही हर एक भारतवासी बा। जवन अपना देश के भुला गइल बा। ओकर के इआद दिलाबे वास्ते कवि देश का नदी वन–एह गीत के बड़ा प्रशंसा कइलन। एह गीत के मार्मिक प्रेषणीयता अइसन रहे कि महापंडित रामावतार शर्मा आसर यदुनाथ सरकार कवि का निवास पर जाके उनका से बेर–बेर एकर सस्वर पाठ सुनस। ई गीत सार्वजनिक रूप से सबसे पहिले मोतिहारी (चंपारण) में बिहार छात्र सभा का अधिवेशन में भूतपूर्व मंत्री डॉ0 श्रीकृष्ण सिंह के भाई गवलन। चम्पारण में हर छात्र आ नौजवान पर ई गीत चढ़ गइल। ई छाप के एकै–एक पैसा में बिकाय। लोग के जमा करे वास्ते कांग्रेस आ आर्य समाज का सभा में ई खूब गावल जाय। ओह घड़ी लाउड स्पीकर ना रहे। दोसरी बरे राजेन्द्र बाबू का प्रयास से ई गीत बंगाल पहुँचल, जहाँ खासकर कलकत्ता में भोजपुरिया लोग के गढ़े हमेशा से रहल बा। तीसरा बेर ई गीत मारीसस पहुँचल। मतलब कि जहाँ–जहाँ भोजपुरिया लोग रहल, ई गीत बड़ तेजी से पहुँचत पसरत गइल। चूँकि भोजपुरी हिन्दी के एतना करीब बा कि हिन्दी भाषी लोग का कथ्य समुझे में दिक्कत ना होय। एह से देश का हिन्दी भाषी क्षेत्र में भी एकर प्रचार खूब भइल।

ई गीत वस्तुतः जागरण गीत के काम कइलस। युगन का दासता, दमन आ अज्ञान का चलने देश के लोग आत्मविस्मृत हो चुकल रहे। अपना धरती, अपना इतिहास, भूगोल आ संस्कृति से धीरे–धीरे अनजान होत जात रहे। देश में प्रचलित अंग्रेजी शिक्षा का दुष्प्रभाव का चलते नव शिक्षित लोग का इहाँ का इतिहास, पुराण के सब बात गलत बुझाव रहे। मातृ–भूमि का गरिमामय भौतिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक स्वरूप के अइसन मोहक, प्रेरक परिचरय ओह समय कवनो दोसर गीत में ना रहे। साँच पूछीं त बादो में ना मिलल। इहाँ 'बटोही' से तात्पर्य हरके भारतवासी सेबा जे अपनाके, अपना देश के, अपना इतिहास के भुला गइल रहे। ई इआद करावल आ 'वंदेमातरम्' में मातृभूमि के शस्य–श्यामल, शक्तिशाली रूप में अभिनन्दन प्रकारांतर से कुछ–कुछ एके जइसन बा। मूल फरक परिप्रेक्ष्य का फलक का विस्तार के बा। फिर भी 'बटोहिया' गीत में सुने वाला का साथ एतना जोरदार रागात्मकता पैदा कर देवे के क्षमता बा जे दोसरा

1.जहाँ तक हमरा इआद बा कुछ बरिस पटना का 'सर्चलाइट' का रविवासरीय परिशिष्टांक में एगो लेख में संभवतः अइसन उल्लेख रहे कि रघुवीर बाबू एगो अंग्रेज का पास इग्लैंड भेजनल जे कभी पटना में रह चुकल रहे आ उनका घनिष्ट संपर्क में रहे। ऊ लेख

www.bhojpurisahityangan.com

संभवतः श्री बालचंद का भोजपुरी क्षेत्र का जीवन शैली पर एगो लेख माला के कबनो अंश रहे।

कवनो गीत में ना रहल। एतने ना, एह गीत के तत्व एकरा के शाश्वत नवीनता से भर देले बा जवन राष्ट्रीय के हमेशा प्रेरित करत रहीं, काहे कि जवन वर्तमान अपना अतीत से कट गाइल ओकर भविष्य का होई?

'बटोहिया' का प्रचार, प्रसार आ प्रपणीयता के लक्ष्य करके आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा एगो सगोष्ठी में कहनी जे "रघुवीर बाबू से केकरा–केकरा परिचय भइल ई त ना कहल जा सकेला बाकिर 'बटोहिया' से केकरा परिचय ना भइल ई खोजे के पड़ी। 'बटोहिया' (अपना जमाना में) वंदेमातरम् के समकक्षी हो गइल। 'बटोहिया' देश के भारत माता के काव्यात्मक परिचय देलस। हिन्दी के कवनो गीत ओह घड़ी भारत का बारह गइल कि ना, मगर बटोहिया 1620 तक भारत का बाहर पहुँच गइल रहे। कांग्रेस का हर सभा में एकरा के पहिले गावल जाय।" ओही संगोष्ठी में डॉ0 विवेकी राय जी कहनी कि "जब सब राष्ट्रीय गीतन के रोमांच समाप्त हो गइल तबो 'बटोहिया' के रोमांच आज जिन्दा बा। आज का घटत जीवन मूल्य का संदर्भ में 'बटोहिया' के महत्त्व बहुत जादे बा।"

देश का भूगोल इतिहास, संस्कृति के उदात्त रूप राष्ट्रीय गौरव के परिचय, राष्ट्रीय आशा–आकांक्षा के अभिव्यक्ति राष्ट्रीय उत्कर्ष खातिर जन–जन के समर्पण भाव, अतीत के इआद आ भविष्य के कल्पना कुछ अइसने तत्व राष्ट्रगीत के आत्मा होला जवना से ध्वनित होय। रघुबीर नारायण के 'बटोहिया' में अइसन तत्त्व मौजूद बा आ इहे वजह बा जे 'बटोहिया' का एतना प्रचार, प्रसार आ अपनापन मिलल। जनभाषा के माध्यम एकरा के आउर बल देलस। 'वन्देमातरम्' में जहाँ शौर्य समन्वित नमस्य भाव प्रबल बा उहाँ 'बटोहिया' में राष्ट्र से हिन्द के जवना–जवना रूप में देखे के अनुनय कइल बा ऊ हर भारतवासी के जगावे का प्रेरणा से भरल बा। कवनो देश के पराधीन बनावे वाला सत्ता के सबसे जोरदार प्रयास ई रहेला। जे ओकरा के ओकरा अतीत से, संस्कृति से, राष्ट्रीय गौरव के काट के अलग कर दिआय, विस्मृत करा दिआय, ओकर गलत आ विकृत रूप ओकर। सामने प्रस्तुत करके ओकर मन में अपना इतिहास का प्रति हीन भावना भर दिआय। ओह जमाना में भारत में अग्रेंजी शिक्षा का अइसन दुष्प्रभाव का संदर्भ में 'बटोहिया' अनमोल काम कइलस।

तीसरा–चौथा दशक में सिडिल स्कूल का छठाँ–सातवाँ क्लास में एगो कविता पढ़ावल जात रहे जवना के शीर्षक "वह देश कौन–सा है" रहे।

पर्वत–नगर–प्रांतर में घूमें के प्रेरित करत बा। एह गीत में देश का प्रति अनुराग भाव जगावे के जबरदस्त आग्रह बा। "तीन द्वार सिंधु घहराय" के लक्ष्य करके डॉ0 भगवत शरणप उपाध्याय कहले बानी– "महाप्राण वर्णों के प्रयोग द्वारा तीन दिशाओं में इस देश की रक्षा में महा सिंधु को अहनिश जागरूकता का ध्वन्यर्थ अनूठा है।" अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का बरहज अधिवेशन में उपाध्याय जी कहले रहीं कि एह गीत का प्रभाव–प्रवाह में "तीन द्वार सिंधु–धहराय" नाम से उहाँ का एगो छोट किताब देश पर चीनी आक्रमण का समय अंग्रेजी में लिख देनी।

रघुबीर नारायण के गीत– बटोहिया

सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देसवा से
मोरे प्राण बसे हिमखोह रे बटोहिया।
एक द्वार घेरे राम हिम कोतवालवा से,
तीन द्वार सिंधु घहराय रे बटोहिया।
जाऊ जाऊ भैया रे बटोही हिन्द देखि आऊ,
जहवाँ कुहुकि कोइली बोले रे बटोहिया।
पवन सुगंध मंद अगर चननवां से,
कामिनी बिरह राग गावे रे बटोहिया।
विपिन अगम घन सघन बगन बीच
चंपक कुसुम रंग देवे रे बटोहिया।
द्रुम बट पीपल कदम्ब निम्ब आम वृक्ष,
केतकी गुलाब फूल फूले रे बटोहिया।
तोता तूती बोले रामा बोले भेंगरजबा से,
पपिहा के पी–पी जिया साले रे बटोहिया।
सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देसवा से,
मोरे प्रान बसे गंगाधार रे बटोहिया।
गंगा रे जमुनावां के झगमग पनियाँ से,
सरजू झमकि लहरावे रे बटोहिया।
ब्रह्मपुत्र पंचनद घहरत निसि दिन,
सोनभद्र मीठे स्वर गावे रे बटोहिया।

www.bhojpurisahityangan.com

अपर अनेक नदी उमड़ि घुमड़ि नाचे,
जुगन के जदुआ जगावे रे बटोहिया।
आगरा प्रयाग काशी दिल्ली कलकत्तवा से,
मोरे प्रान बसे सरजू तीर रे बटोरिया।
जाऊ जाऊ भैया रे बटोही हिन्द देखि आऊ,
जहाँ ऋषि चारो बेद गावे रे बटोहिया।
सोता के विमल जस राम जस कृष्ण जस,
मोरे बाप दादा के कहानी रे बटोहिया।
व्यास बाल्मीकि ऋषि गौतम कपिलदेव,
सूतल अमर के जगावे रे बटोहिया।
नानक कबीरदास शंकर श्री रामकृष्ण,
अलख के गतिया बतावे रे बटोहिया।
जाऊ जाऊ भैया रे बटोही हिन्द देखि आऊ,
जहाँ सुख झूले धान खेत रे बटोहिया।
बुद्धदेव पृथु वीर अरजुन शिवाजी के,
फिरि फिरि हिया सुधि आवे रे बटोहिया।
अपर प्रदेश सुधग सुधर वेश,
मोरे हिन्द जग के निचोड़ रे बटोहिया।
सुन्दर सुभूमि भैया भारत के भूमि जेहि,
जन 'रघुवीर' सिर नावे रे बटोहिया।

'बटोहिया' के रचना 1911 में भइल। ओही साल दिल्ली दरबार भइल। ओही साल रविबाबू "जन–गण–मन" लिखली आ ओही साल रघुवीर बाबू "बदोहिया"। ओह घड़ी ले देश का राजनीतिक, सामाजिक रंगमंच पर तिलक, गोखले आ दयानन्द जइसन प्रतापी महापुरूषन के आविर्भाव हो चुकल रहे। नव जागरण के एगो अइसन लहर उठ चुकल रहे जवन अपना हिलोर में राष्ट्रीय जीवन का हर अंग के समेट लेले रहे। देश का आजादी के भावना उन्माद के रूप लेत जात रहे। एह पृष्ठभूमि में जागरण का जहर के नया उछाल, नया बेग "बटोहिया" गीत से मिलल। रघुबीर बाबू एह गीत के एगो प्रति ईग्लैंड का राजकवि। सतिमक। नेजपदम का पास भी भेजनी जे ओकरा कवि के नाम हमरा मालूम नइखे भा इआद नइखे पड़त। बाकिर 'बटोहिया' पर लिखत समय अइसन आभास होत बा जे 'बटोहिया' का साथ ओकर भाव साम्य रहे जइसन कि ओकरा कुछ पौती से ध्वनित होता–

वह देश कौन सा है?

जिसका चरण निरंतर रत्नेश धो रहा है।
जिसका मुकुट हिमालय, वह देश कौन सा है।।
नदियाँ जहाँ सुधा सी धारा बहा रही हैं
सींचा हुआ सलोना, वह देश कौन सा है?
जिसमें हुए अलौकिक तत्वज्ञ ब्रह्म ज्ञानी।
गौतम, कपिल, पतंजलि, वह देश कौन सा है?
हरिचंद्र कर्ण जैसे दानी हुए जहाँ दानी हुए जहाँ पर।
सब लोक का हितैषी, वह देश कौन सा है?
मन मोहिनी प्रकृति की जो गोद में बसा है।
सुख स्वर्ग का सहोदर वह देश कौन सा है?
जिसमें बड़े रसीले फल और कंद मीठे।
हर बाग में सजे हैं वह देश कौन सा है?
निष्पक्ष न्यायकारी जन जो पढ़े–लिखे है।
वे सब बता सकेंगे वह देश कौन सा है?

ओह घड़ी का पढ़ल–लिखल लोग का साक्ष्य का आधार पर कहल जा सकेला कि ई रचना 1910 का आस–पास भइल होई। एह कविता में 'बटोहिया' का आंतरिक भाव के विरासत ;स्महंबलद्ध साफ–साफ कलकत बा। एह कविता में पाठ भेद हो सकेला।

भाव आ प्रेषणीयता का विचार से 'बटोहिया' एगो कालजयी कविता बा। एकर प्रेरणा आ एकर आकर्षण शाश्वत नूतनता से भरल बा। आज सात दशक से ज्यादा समय बीत चुकला का वादो एकर आकर्षण जस के तस बा आ भाषा का विचार से संसार भर में जहाँ भी भोजपुरी भाषी लोग बा उहाँ एकर लोकप्रियता हमेशा एक लेख बनल रहल बा। रघुवीर नारायण का जनम के सौ साल से जादे बीत चुकल बाकिर उनकर अमर रचना 'बटोहिया' आ बटोहिया' का माध्यम से उनकर ना तबले जीयत रही जबले धरती पर भोजपुरी आ हिन्दी भाषी लोग रही।

इहाँ 'बटोहिया' के चर्चा भारत में समय पर प्रचलित राष्ट्रगीतन का संदर्भ में भइल बा। हमार ई दृढ़ विचार बा जे 'बन्दे मातरम्' का बाद यदि कोनो दोसरा गीत में राष्ट्रगीत के आत्मा बा त ऊ नीत "बटोहिया" बा।

✧ ✧ ✧

www.bhojpurisahityangan.com

रात में जाँतः दिन में हिंडोला

(लोकगीतन में भोजपुरी जीवन के झाँकी)

- हरिशंकर वर्मा

जिनिगी के उदास जंगल में जब याद के कवनो भगजोगनी भुक दे आपन रोशनी बिखेर दे त एगो तन्मयता के जनम होला जवन कि गीत के आधार भूमि है। समय के गुलाब के पंखुरी के कवनो तितली चूम के उड़ जाय त ओह आह्लादक घड़ी में गीत के जनम होला। गीत मानव मन के सुख–दुख के बे लोग अभिव्यक्ति ह। सुख–दुख के एही दू तीरन के बीच जिनिगी के प्रवाह ह। गीत अनुभूति के साँच–साँच अभिव्यक्ति ह। ओहू में यदि करुणा के पुट मिल जाय त ओकर प्रभाव अउरो बढ़ जाला। तबे त अंग्रेजी के कवि के कहे के पड़ल–सबसे मधुर गीत ऊ ह जवना में सबसे जदि करुणा के अभिव्यक्ति होखे। भोजपुरी मानस सुख भा दुख कवनो से जब आंदोलित–उद्वेलित होला त ओकर अभिव्यक्ति गीत के रूप में लोक कंठ से फूट पड़ेला।

झाँकी– एक

आटा पीसे वाली चक्की के नाँव जाँत ह। आज से खाली तीन दशक पहिले तक चक्की, चूल्हा आ चरख ई तीनों भोजपुरी घर के पहचान रहे। चक्की में आटा पीस लेलीं, चूल्हा पर रोटी सेंक लेलीं आ एह कामन से फुर–सत पाके चरखा पर घर के कपड़ा खातिर सूत तइयार कर ले लीं। खाली एह तीनों चकार के चलते देहात के लोग बहुते सुखी आ सलतंत रहे। औरत लोग चक्की पीसत रहली एह से ऊ लोगन के स्वास्थ्य ठीक रहत रहे। उनकर बाल–बच्चा हृष्ट–फुष्ट होत रहलें। चक्की चलावे का बेरा तरह–तरह के गीत गावे के चलन रहे। हर समय हर परिस्थिति में काम करे के सयम गीत गवनई के प्रथा के चलते उनका जीवन के धारा शुद्ध हो रहे, परिश्रम करे के आदत बनल रहत रहे, समय के सदुपयोग होत रहे आ घर में खुशहाली रहत रहे।

जाँत पीसे के सयम रात के तीसरा पहर ह। औरत लोग साँझ के पीसे खातिर अनाज रख लेली आ पहर छः घड़ी रहते उठ के जाँत लेके बइठ जाली। जाँत के दूनो ओर आमने–सामने बइठ के जब दु गो औरत पीसेली आ वातावरण में संगीत के सुमधुर स्वर लहरी बिखेरेली त जाँत चलावे के ई काम बहुते आसान हो जाला। गाँवन में जाँत पीसल सहयोग के एगो सुन्दर नमूना बा। एक औरत दोसरा औरत के आटा पीसा आवेली त बदला में ऊ दोसर औरत भी ओह औरत के अनाज पीसा जाली। विवाह, जनेऊ, गवना आदि के शुभ अवसर पर त सऊ से गाँव से ई सहयोग लिहल जाला। जाँत पर गावे जाये वाला एह गीतन के जाँतसार कहल जाला जवना में गावे वाली औरतन के मन के प्रेम, करुणा आदि मानसिक भावन के बहुते सुन्दर चित्रण रहेला।

हमनी के ग्रामीण जीवने के भिक्ति लाओत्से के शब्दन में सहज जीवन पर आधारित रहे। छोट बालक के जवान भइल आ छोट बच्ची के नवयुवती भइल सहज आ स्वाभाविक ह। पारिवारिक नियम के घेरा से निकल के युवक का युवती के प्रति आ नवयुवती के युवक के प्रति आकर्षण मानव के सहज प्रकृति ह। काम के बिना सृजन होइये नइखे सकत। समस्त सृजन–चक कामे से चलत बा। हमनी के पेड़–पौधा, पशु–पक्षी के जीवन में जवन कुछ भी देखतानीं ऊ फूले के खिलल काहे ना होखो, काम–ऊर्जा के ही खेल ह। भोजपुरी लोक गीतन में चाहे ऊ औरतन के जँतसार होखे, कजरी होखे, सामो चकवा होखे या नट–नटिन होखे भा पुरुषन के बिरहा, बारहमासा, चैता या घाँटो होखे, काम–ऊर्जा के सहज, निश्छल स्वीकृति बा, काम के सहज स्वभाव के सकारल गइल बा। समाज के नियमन के ख्याल राखल कवनो कामी पुरुष के हाव–भाव के ऊ सहज स्वभाव वाली युवती साफ–साफ अस्वीकार कर दीही बाकिर अपना गीतन के माध्यम से अपना सखी से ओकर वर्णन करे में कवो संकोच के अनुभव ना करी। ऊ सहजता से जिन्दगी जइसन बा स्वीकार कर लेली। परदेस गइल पति के अनुपस्थिति में कवनो पुरुध के ओह सुन्दर ललना के प्रति अग्रसरता, आग्रह, अनुरक्ति, आसक्ति अइसन गीतन के मुख्यभाव होला। फिर बिरह में ओकरा खातिर तड़पल, ओकरा आवे के बाट जोहल एह गीतन के विषय वस्तु होला।

www.bhojpurisahityangan.com

कथनः– कवनो प्रोषित पतिका नायिका कहत बाड़ी कि ए कौआ! तू कवना महीना में आपन खोंता लगवले रह आ कवना महीना में हमार पति परदेस गइल रहले। कातिक महीना में कउवा आपन खोंता बनवले आ अगहन महीना मे उनुकर पति परदेस गइले। स्त्री कहत बाड़ी कि–ऐ पतिदेव! तू यदि परदेस जइब त आपन चढ़ल जवानी कइसे बचा के रख पाइब। पतिदेव उत्तर दिहले– हे प्राण प्यारी! तू झुक के चलिह आ जइसे बाँस झुक जाला ओइसहीं झुक जइह। जइसे धनुही झुकल रहेला, नाक के नथिया झुकल रहेला ओही लेखा झुक के चलिह। एह पर औरत कहली कि– हे पतिदेव! तू यदि परदेय जइह त आपन मुहँ पोछे वाला रूमाल स्मृति–स्वरूप खूँटी पर रख दीह। एही भाव भूमि पर लोक–कंठ में गढ़ाइल एह 'जँतसार' के सुनीः–

कवना मासे ए कगवा खोंतवा लगवले रे ना।
कवना मासे मोर पियवा बिदेसवा गइले रे ना।।
कातिक मासे ऐ कगवा खोंतवा लगवले रे ना।
अगहन मासे मोर पियवा परदेसवा गइले रे ना।।
जाहु तुहू पियवा बिदेसवा जइब रे ना।
आपन चढ़ल जवनिया कइसे राखबि रे ना।।
झुकि के चलिह ए धनिया, नइ के चलिह रे ना।
जइसे बँसवा नवेला तइसन नइह रे ना।।
जइसे धनुही नवेला तइसन नइह रे ना।
जइसे नथिया नवेला तइसे नइह रे ना।।
जाहु तुहूँ पियवा बिदेसवा जइब रे ना।
आपन मुहँवा के रूमलिया खुँटिया धरिह रे ना।।

कथनः– दोसरका जँतसार में पति के परदेश चल गइला पर उनकर खोज–खबर लेबे खातिर औरत के अपना भाई के भेजला के वर्णन बा। बहनोई के ना मिलला पर भाई के कुल के लाज बचा राखे खातिर बहिन से भाई के विनती के बड़ा मार्मिक अंकन एह जँतसार में भइल बा।

ए राम, हरि मीरा गइले बिदेसवा
त दूइ नवरगिया लवले हो राम।
ए राम, हरि के लावल नवरंगिया,
त नवरंग झुरा गइले हो राम।।
ए राम, भइया मोरे अइले हो पहुनवाँ,
त नवरंग छाँह ठाढ़ भइले हो राम।
ए राम, बहिना के कर लावल नवरंगिया,
त नवरंग झुरा गइले हो राम।।
ए राम, हरिजी के लावल नवरंगिया,
त नवरंग झुरा गइले हो राम।
ए बहिना पीस देहु जीरवा सतुइया
त हम जइबो बहनोई खोजे हो राम।।
ए राम, पुरुष खोजलीं, खोजेलीं पछिमवाँ,
अबरू दखिन खोजलीं हो राम,
ए राम, तीनु भुवन खोजि अइलीं,
त कतहूँ बहनोइया न मिले हो राम।।
ए राम, घींचि बान्हे बहिन अँचरवा,
त बाबा कुलवा रखिहे न ए राम।

कथनः– अगिला जँतसार में कवनो नायिका अपना प्रियतम के परदेस जाये से मना करत उनुकर रूप के वर्णन करत बिया। ऊ कहत बिया कि ऐ लोभी तोहार मुहँ सुरज के जोति अइसन प्रकाशमान बा, तोहार आँख आम के फाँक अइसन सुन्नर बा, तोहार नाक सुगना के ठोर अइसन सुडोल आ नोकदार बा आ तोहार भौंह चढ़ल कमान अइसन टेढ़ बा। तोहार ओठ कतरल पान अइसन पतला बा आ मुहँ कड़ा–कड़ा बा। तोहार बाँह सोना के छड़ी जइसन मोट आ सुघड़ बा आ पेट पुरइन के पात अइसन चिक्कन। ऐ लोभी, तोहार पीठ धोबी के पाट अइसन मोटा आ चौड़ा बा आ पैर केदली के गाछ जइसन चिक्कन आ सुडौल। गीत सुनीः–

सहगानः–

गहिरी नदिया अगम बहे राम पनिया।
पिया चलेले परदेसवा, बिहरेला राम छतिया।।
जाहु हम जनितीं ए लोभिया, जइबें रे बिदेसवा।
पिया के पयेंतवा ए लोभिया, आँचरा छिपइतीं।।
दह रोवे चकवा–चकइया।
बिछोहवा कइले राम बलमू।।
मुहँ तोर हवे ए लोभिया, सुरुज के जोतिया।
आँख तोर हवे ए लोभिया, आमवाँ के फरिया।।
नाक तोर हवे ऐ लोभिया, सुगवा के ठोरवा।
भँहु तोर हवे ए लोभिया, चढ़ल कमनिया।।
ओठ तोर हवे ए लोभिया, कतरल पानवाँ।
अउरू तोर हवे ए लोभिया, कड़ी–कड़ी मोछिया।।

www.bhojpurisahityangan.com

बाँहि तोर हवे ए लोभिया, सोबरन सोंटवा।
पेट तोर हवे ए लोभिया, पुरइन पातवा।
पीठि तोर हवे ए लोभिया, धोबिया के पाटवा।
गोड़ तोर हवे ए लोभिया, केरवा के थुम्हवाँ।।

कथनः– भोजपुरी–प्रदेश में प्यार से पति के भला–बुरा कहे के गाली देबे के प्रथा बहुते प्रचलित बांटे। औरत पहिले अपना पति के परदेस आये से मना कइलस। जब पति अपना बात पर अड़ल रह गइले तबे औरत उनका के धन आ केहू अउर के प्रेम के लोभी समझलसि।

झाँकी–दू

कथनः– भोजपुरी प्रदेश के संस्कृति के वर्णन करत एह लोक–गीतन में जाँत के कठोर मेहनत के प्रतीक मानल गइल बा आ हिंडोला के फुरसत के छन में आनन्द के प्रतीक। कठोर मेहनत के संदर्भ में अब धान के रोपनी करत गाँव के गोरी के गीत सुने सावन–भादो का कादो में चली।

(पानी से भरल धान के खेत में कतार में रोपनी करत दस–पंद्रह औरतन के सुर में सुर मिला के गावल)

सुनों कवनो नायक के नायिका के प्रति प्रेम का साथे–साथ मातृ–भक्ति के सामंजस्य के वर्णन :–

सहगानः–

हरि मोरा चलले उतर बनिजिया
दुअरा कदम लाई गइले हो राम।
जब–जब धनिया रे मनवां तोर उदसिहें
तब तू कदम त ठाढ़ होइहे हो राम।।
बारहो बरिस पर हरि मोरा अइले
ओही रे कदम त गोनिया ढारेले हो राम।।
माई लेई दउरेली लोटवा के पनिया
वहिना सिंहासन पीढ़वा हो राम।।
धनि लेई दउरेली पंचरंग बेनिया।
बेनिआ हो लेले धनि तेवइली हो राम।।
माई के काढ़ेले पंचरंग छिटिया
आरे बहिना के लहर पटोखा हो राम।।
धनिया के काढ़ेले फटही लुगरिया
लुगरी के लेके धनि तेंवइली ही राम।।
उहवाँ से रूसल धनियाँ बन–बन चलली।
आई के पहुँचली आपन नइहर हो राम।।
कहना बबुआ हो आपन कुसलवा।
तोहरो कुसलवा हम सुनबि हो राम।।
हमरो त बाड़े आमा बड़ी रे कुसलिया।
धनि के कुसलिया हम चाहिले हो राम।।

कथनः– कवनो स्त्री के उज्ज्वल, पवित्र आ आदर्श के वर्णन सुनीं। आम आ महुआ के घना बगइचा बा जवना के बीच से रास्ता जाता। एही बगइचा में एगो पेड़ के नीचे खड़ा एगो सोहागिन अपना बढ़ियाइल आँखिन से लोर गिरा रहल बिया। कवनो राही के पूछला पर ऊ जवाब दे तिया कि– तोहरे लेखा हमरो पति पातर बाड़न, हम उनके राह देख रहल बानी। राही के कहला पर, कि –ए सुन्दरी, तू डाल भर सोना ले ल आ पति के आसरा छोड़ के हमरा साथे चल ऊ औरत कहत बिया कि हे बटोही हम तोहरा डलिया भर सोना में आग लगा देब आ अपना पति के राह देखब। आवे दे हमरा पति के, तोहरा के जूता से ना पिटववलीं त असल के ना। सुनीं एह रोपनी–गीत के–

सामूहिक गानः–

आम आ महुइया के घनी रे बगिया।
ताहि बीचे राह लागि गइले हो राम।।
ताहि तर ठाढ़ भइले एक रे सोहागिनी।
नयनवां से निरवा ढारे हो राम।।
बाट के बटोहिया पूछे काहे तूहूँ ठाढ़।
केकर जोहेलू तू बटिया नयन नीर ढारे हो राम।।
लेहु ना साँवरि डाल भरि सोनवाँ।
छोड़ू परदेसिया के आस हो राम।।
आग लगइबो में डाल भर सोनवा।
करवो परदेसिया के आस हो राम।
कबहीं त लवटिहें मोर बनिजरवा।
पनही से तोहि के पिटइबो हो राम।।

अइसे त रोपनी के गीत हजारन बाड़े स। हम त खाली नमूने खातिर एक–दू अपने सभे का सामने राख सकत बानीं। एगो अउर गीत के बानगी देखीं जवना में नायिका अपना ससुरार के तकलीफ के वर्णन अपना पति से करत बियाः–

सहगानः–

www.bhojpurisahityangan.com

जहिया से अइलीं पिया तहरी महलिया में
राति–दिन कइलीं टहलिया रे पियवा।।
घर के करत काम देही के सूखल चाम
सुखवा सपनावाँ होई गइले रे पियवा।।
बड़की गोतिनियाँ जे हई मलकिनियाँ से
भसूर जी छयला चिकनिया रे पियवा।।
हरवा जोतत तोर गोड़वा पिरइले
रुपया के मुहँ नाहीं देखले रे पियवा।।
तोहरे इरिखवा से जाइबि नइहरवा में
भउजी के लरिका खेलाइबि रे पियवा।।
चिपरी के पाथि–पाथि दिन हम काटबि
अब नाहीं आइब तोर दुअरिया रे पियवा।।

रोपनी के बाद सोहनी के पारी आवेला। खेत चाहे धान के होखे भा आउर कुछ के रोपाई के बाद खेत सूख जाला आ ओह में बेकार के पौधा उग जाले स। एह फालतू पौधन के उखाड़ के फेंक देला से फसल में बाढ़ आ जाला। एही से सोहनी खेती–किसानी के एगो प्रधान अंग ह। जइसन कि हम पहिलहीं कह चुकल बानी कि काम के आसान बनावे खातिर हर काम के समय सामूहिक गान भोजपुरी प्रदेश के सभ्यता के सबसे बड़ खूबी बा। अब आई सभे कुछ सोहनी–गीतन के बानगी देखल जाय। भाव उहे दिनचर्या, सिंगार, गाँव के पृष्ठभूमि के रोमांसः–

सहगानः–

ए रामा कवना बने फूलेला बेइलिया,
कवना बनवा केसर हो राम।
ए रामा बाबा बनवा फूलेला बेइलिया,
भइया बनवा केसर हो राम।।
ए रामा कथी में रंगइबो रे चुनरिया,
कथी में रंगइबो पगिया हो राम।
ए रामा बेइली में रंगइबो रे चुनरिया,
त कुसुम में पगिया हो राम।।
ए रामा बाबा मोरे दिहले भंइसिया,
त भइया धेनु गइया हो राम।
ए रामा आमा मोरे दिहली चुनरिया,
त भउजी बिरहिया बोले हो राम।।

फिर सुनीं हाजीपुर के मेला में जाये खातिर नायिका के अपना पति से राह खर्च माँगलः–

कातिक मासे हरि मोर बिदेत जइहन, ए सजनी।
लागी गइल हाजीपुर बजरिया, ए सजनी।।
गोड़ तोरे लागिले सइयाँ गोसइयाँ
कीनी देहु ललकी टिकुलिया, ए सजनी।
इसर किरिये परमेसर किरिये
एकहूँ पइसव नइखे पासवा, ए सजनी।।
घड़ी रात गइली, पहरी रात गइली
परि गइल टेंटवा में हथवा, ए सजनी।।

अउर सुनीं पति के रूस के परदेस गइल आ माई के घर लवट चले के निहोरा। भावज कहत बाड़ी कि हमरा ननद के आँगन में लवंग आ चंदन के पेड़ बा जवना से रात भर लवंग चूबेला। हम लवंग के चुन–चुन के सेज बिछवलीं आ ओह पर सूते खातिर राजा के कुँअर हमार पति चलले। अउर एही गीत में देखीः–

सहगानः–

ननदी अँगनवा चनन गाछि बिरवा हो।
लबंग चूवेला सारी रात हो राम।।
लबंग बीनि–बीनि सेजिया डसवली हो।
सोवन चलले राजा के कुँअरवा हो राम।।
आगे हटु, आगे हटु राजा के कुँअरवा हो।
पातर चोलिय भीजेला पसेनवा हो राम।।
भींजता त भींजे देहु ननदी के भउजी हो।
धोबी धरवा देहब हम धोआई हो राम।।
धोबिया के पूतवा जे बड़ा रंगरसिया हो।
चोलिया मरोरि रस लूटे हो राम।।
अतना बचनिया प्रभु सुनही ना पवले हो।
चलि भइले पूरब मोरंग देसवा हो राम।।
मचिया बइठल तूहूँ सासु बड़इतिन हो।
आपन बेटा लेहु ना बोलाई हो राम।।
फिरू चलू, फिरू चलू, बबुआ अब घरवा हो।
बिरही कोइलिय सेजिया बोले हो राम।।

झाँकी–तीन

भोजपुरी समाज हमेशा से सांस्कृतिक जीवन के काफी महत्त्व देत रहल बा। हर संस्कार के समय

www.bhojpurisahityangan.com

सामूहिक–गान के एगो परंपरा हमेशा से भोजपुरी प्रदेश में रहल बा। वस्तुतः कवनो संस्कार के, कवनो अनुष्ठान के नीके–नीके निबह गइला पर खुशी से मन के झूम गइल अस्वाभाविको नइखे। एही से जन्म, छठी, यज्ञोपवीत, विवाह, गवना आदि के संस्कार गीत गवला का बाद 'झूमर' गावे के चलन बा। 'झूमर' माने कि जेकरा के गावत–गावत मन झूम जाय, जवना के सुनत–सुनत मन झूम जाय।

कव्वाली के बदलल रूप भोजपुरी क्षेत्र में 'कजरी' के रहल बा। 'कजरी' के 'दंगल' अक्सर आषाढ़–सावन के राम में होला। त आई अब कुछ झूमर आ कजीर के आनन्द लेत आज के राम के आनन्दायक बनाईः–

सहगानः–

कहबाँहि रामजी के जनम भइल हरि झूमरी।
अब कहवाँ में बाजेला बधाव, खेलब हरि झूमरी।।
अवध में रामजी जनम भइल हरि झूमरी।
अब जनकपुर में बाजेला बधाव, खेलब हरि झूमरी।।
सीता जे चिठी लिखि भेजेली हरि झूमरी।
अब उमड़ि न आई सिरि राम खेलब हरि झूमरी।।
राम जे चिठी लिखि भेजेले हरि झूमरी।
अब सीता सुन्दरी करसु सिंगार, खेलब हरि झूमरी।।
केकरा ही हाथे लागे बुकावा हरि झूमरी।
केकरा ही हाथ अबीर खेलब हरि झूमरी।।
सीता के हाथ लागे बुकावा हरि झुमरी :
अब राम के हाथे अबीर खेलब हरि झूमरी।।
उड़त आवेला बुकावा हरि झूमरी।
अब चमकत आवेला अबीर खेलब हरि झूमरी।।

कथनः– पति के वन में चल जाये से उत्पन्न बेचैनी बाकिर उनुकर बांसुरी के आवाज सुन के धीरज धइल इहे अगिला गीत के भाव बा। नायिका पति के वियोग में अत्यंत व्याकुल बाड़ी बाकिर जमुना किनारे में आवत बंसी के टेर उनका हृदय के जलन प, पीर के मरहम के काम करता आ प्रफुल्ल बदन अपना काम–काज में लाग जात बाड़ी। उनकर सब दुख जइसे बांसुरी के एगो आवाज पर दूर हो जाताः–

सहगानः–

निहुरल–निहुरल अँगना बहरलों हो दरदिया उठे ना।
आरे मोरे कमर में दरदिया हो हरदिया पिसलों ना।।
मचिया बइठल रउरा सास हो बढ़इतिनि हो कवन रे बिधिये ना।
यदुबंशी गइले बनवाँ हो, कवन रे बिधिये ना।।
सुपुली खेलत तू हूं ननद हो बढ़इतिनि हो केकर रे बंसिया ना।
आरे, बाजेला जमुना तीरवा हो, केकर रे बंसिया ना।।
उठहूँ भउजी रे करहूँ रसोइया हो भइया के बंसिया ना।
आरे, बाजेले जमुना तीरवा हो, भइया के बंसिया ना।।
भँड़सर पइसल तूहूँ गोतिनी बढ़इतिनि हो केकर के बंसिया ना।
ओर बाजेला जमुना तीरवा हो केकर रे बंसिया ना।।
उठहूँ बहुआ रे करहूँ रसोइया हो बबुआ के बंसिया ना।
आरे बाजेला जमुना तीरवा हो, बबुआ के बंसिया ना।।

अगिला झूमर में कवनो नायिका के गंगा में स्नान करत बेरा झूलनी गिर जाये के आ कवनो मछली द्वारा लील गइला पर ओह मछली के जाल में फँसावे खातिर मल्लाह भइया से अनुरोध के वर्णन बाः–

ठाढ़ गोरी गंगा हिलोरे झुलनिया ले गई मछरिया ना।
गोड़ तोरे लागिला भइया मलहवा, सागर में डाल महजलवा ना।।
एक ओर लागेले धुँधली सेवरवा, एक ओर राघेव मछरिया ना।
ठाढ़ गोरी गंगा हिलोरे, झुलनिया ले गई मछरिया ना।।

फिर भला अइसन प्रेम देखले होखब? नायिका के प्रति नायक के आसक्ति के चरम परिणति! यक्ष–विरह के रउरा पारखी होखब बाकिर एह प्रेमी नायक के मन के आन्ही तूफान के के आँक सकीः–

सहगानः–

गोरिया चलली नइहरवा, बलमु अँचरा धइ के रोवे।
बाग में रोवे, बगइचा में रोवे, गुलरी के पेड़ तर सुसुकि मारि रोवे।।
दुअरा पर रोवे, दलनिया में रोवे, चउकी पर मुड़िका पटकि के रोवे।
सेज पर रोवे, पलंग पर रोवे, खटिया के पाटी पकड़ि के रोवे।।
गोरिया चलली नइहरवा, बलमु अँचरा धइ के रोवे।।

कथनः– जइसन कि रूपक के प्रारंभ में कहल गइल बा, हाड़–तोड़ मेहनतों के सयम जे गीत गा–गा के ओह कठिन सयम के हलुक करता ऊ भला बइठका के दिन में मौन रही? फुरसत के सुखद छन के सुंदर मधुर ढंग से बितावे के ऊ भुला नइखे सकत। भादो का कादो पाँक में कठोर मेहनत के बाद सावन में कृषक–बाला झूलुहा लगावेली आ एह झला से आसमानी बरखा के साथ–साथ मधुर संगीत के बरखा होला। एह मधुर प्रश्नोत्तर पूर्ण गीत परंपरा के कजरी कहल गइल

www.bhojpurisahityangan.com

बा। दूगो समूह में बँटाइल युवतियन के एगो दल सवाल करेला जवना के जवाब दोसर दल देला।

कजरी भोजपुरी प्रदेश के सबसे मधुर आ ठाटदार मौसमी लोग गीत ह। कजरी में दूगो गोल के पारा–पारी सहगान होला। भोजपुरी अंचल पूर्वी उत्तर प्रदेश में त कजरी के व्यावसायिक दंगल होखल करेला। एकरा खातिर बड़ा जोर–शोर से तइयारी होला। एगो बड़हन मैदान में 40–50 फीट के दूरी पर बनल अलग–अलग मंचन पर दूगो दल बइठेला आ कजरी के कार्यक्रम शुरू होला।

अब सुनीं मनभावन सावन में कजरी खेले खातिर भावज के ननद से उक्ति–

सहगानः–

कइसे खेले जाइबि हम सावन में कजरिया।
बदरिया घेरि आइल ननदी।।
तूँ त चचेलू अकेली, तोहरा संग सहेली
गुण्डा घेरि लीहें तोहि के डगरिया
बदरिया घेरि आइल ननदी।।
कतना जना खइहें गोली, कतना जइहें फँसिया डोरी
कतना जना पीसिहें, जेलखाना के चकरिया
बदरिया घेरि आइल ननदी।।

कथनः– ननद के अतना कहला पर कि तू अकेले कजरी खेले जात बाड़, तहरा साथे कवनो संगी–सहेली नइखी, रास्ता में कवनो बदमाश छेड़खानी करे त? भउजाई के जबाब होता कि यदि एह तरह के गुस्ताखी कोई करी त कतना लोग के गोली खाये के पड़ी, कतना लोग के फाँसी हो जाई आ कतने लोग जेलखाना में जाके चक्की चलावत अपना करम पर रोई।

एह रूपक के अंत हम एगो अखड़िया कजरी गीत से कइल चाहब। एक से एक नमूना अपने सभे के कजरी में मिली बाकिर हमरा पास सभ के समेटे के समय आ समरथ दूनों के अभाव बा। तबो जनानी आ मरदानी कजरी के नोक–झोंक के एगो उदाहरण देखींः–

सहगानः पुरुष दलः–

एतना आँख न देखाव, तनी धीरे बतियाव,
नाहीं हमरे अइसन पइबू नगरिया में।
बाटीं सुधर जवान, कहना मान मेरी जान,
रोज तड़के नहाइला पोखरिया में।
हईं अइसन रसीला, भाग तीनो जून पीला,
मजा लूटीला घुमाई के दुपहरिया में।
अइसन तोहरो के बनाइब, रोजे भंगिया छनाइब,
पइबू बड़ा मजा घीव के टिकरिया में।
नोट रुया ली आइब, तोहरे हाथ में थमाइब,
जानी गिन–गिन के रखिह पैटरिया में।

महिला दलः–

आँख रोज हम देखाइब, तोहसे टेढ़े बतिआइब,
नाहिं केहू से डेराइब हम सहरिया में।
बाड़ा सुधर जवान, ठीक मुसहर समान,
मूस मारल करिह रोज तू बखरिया में।
तोहरे अइसन भँगेड़ी, रोज चाटे हमार एँड़ी,
भोरे आई–आई हमरे ओसरिया में।
हमें सीखी ना देखाव, के हू गैर के भुलाव,
तोहरे बजर पड़े घीव के टिकरिया में।
मोहर रुपया से नोट, गिन्नी बड़ा अउर छोट,
हमरे भरल बाटे अपने पेटरिया में।।

कथनः– एगो अइसने नोक–झोंक के नमूना अपने सभे अगिला कजरी में देखबि।

सहगानः पुरुष–दलः–

आइल बरखा बहार, कहना मान सुन्दर नार,
मान राख द तू अबकी कजरिया में।
साँची कहीला तिरवार, तोहरे सूरत के निखार,
डेरा कइले बाटे हमरी नजरियाँ में।
चाहे गारी तू सुनाव, तनी लगवा त आव,
तोहे चुनरी रंगाइब लहरिया में।
देबे हैकल गढ़ाय, बाजूबंद बनवाय,
डैमल काट कटवाय देब सिकरिय में।
चोली बंद आसमानी, देब पटना से आनी,
जानी दूध पीह चानी के कटोरिया में।
रोज हलुआ मलाई, खइह घरहीं बनाई,
बइठल खाइल करिह हमरी ओसरिया में।

एह पर महिला दल के टका अइसन जवाब त सुनीं–

महिला दलः–

www.bhojpurisahityangan.com

माटी मिलउ तोहार, लेब जुलुफो उखार,
हमरो करब छेड़खानी जे कजरिया में।
तोहरे अइसन हजार, करे नौकरी हमार,
काहे आग लागल तोहरे नजरिया में।
गारी अइसने सुनाइब, कबो लगवा ना आइब।
महा माई पड़े तोहरे चुनरिय में।
हैकल, हँसुली हूमेल, देबो ठेहुना से ठेल,
लात मारब तोहरे पनवा सिकरिया में।
चोली पटना क दूर, मोर तलवा क धूर,
तोरे चाकी मारे चानी के कटोरिया में।
दूध हलुआ मलाई, खोआ बरफी मिठाई,
भर साई पड़े तोहरी ओसरिया में।।

एह तरी देखल जाय त भोजपुरी के जन–जन के जीवन एकरा लोक गीत में बसेला। गीतन के एह जंगल में के एगो सबसे छोट पगडंडी से अपने सभ अभी गुजरलीं। साँच पूछीं त भोजपुरी के लोक गीतन क अलग करके भोजपुरी सभ्यता–संस्कृति के कल्पना नइखे कइल जा सकत। लोक गीत एकरा उद्व लन के, एक–एक धड़कन के पूँजीभूत थाती ह। जिनिगी के एह धूप–छाँही छन में अगर सचहूँ कहू बहादुरी के साथ जीये के चाहता त ओकारा खातिर भोजपुरी लोक–गीतन के नाँव से गुजरल अभीष्ट होई।

✧ ✧ ✧

सर्वभाषा ट्रस्ट से प्रकाशित भोजपुरी किताब

सर्वभाषा ट्रस्ट
नई दिल्ली

8178695606
sbtpublication@gmail.com
www.sarvbhashatrust.com

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी कहावतन में जीवन के रूप

- प्रो. (डॉ.) संत साह
हिन्दी-विभागाध्यक्ष जीवछ कॉलेज, मोतीपुर

कहावत अइसन कथन ह जेकरा में समय चाहे कुछ दिन बीतला पर भी ओकरा रूप में परिवर्तन ना होला। कहावत में पूरा वाक्य होला जबकि मुहावरा में अधूरा।

अशोक मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश के अनुसार– "लोक में प्रचलित ऐसा बँधा चमत्कारपूर्ण वाक्य जिसमें कोई अनुभव या तथ्य की बात संक्षेप में कही गई हो।"

अवधी बृहत् लोकोकित कोश में कहल गइल बा– "लोकोक्तियाँ आदिकाल से सतत प्रवहमान मानवीय संस्कृति का विचार स्रोत है, जिसकी जीवन में अत्यधिक उपयोगिता है। लोकोक्तियाँ, जिन्हें कहावत या 'मसल' कहा जाता है, लोक व्यवहार तक व्याप्त होती है। अपने शब्दिक अर्थ लोकउक्ति अर्थात सामान्य जन द्वारा कही गई उक्ति के अनुसार लोकोक्तियों का प्रयोग लोक व्यवहार एवं लोक प्रज्ञा तक होता है।"

लोकोक्तियन के माध्यम से आपन देश चाहे विदेश में प्रचलित जातीय संस्कृति आ प्राचीन से प्राचीन रूप सुरक्षित मिलेला। कहावत विविध संस्कृतियन के धरोहर हई सन। एह में इतिहास, भूगोल रूप–रंग, व्यवहार–विचार आदि के पुरान स्वरूप देखल जा सकेला।

भोजपुरिया समाज बहुश्रुत रहल बा। इहाँ मनई के आदिकाल से कुछ कहे–सुने के समृद्ध परंपरा रहल बा।

इहाँ के कहावत में जीवन से जुड़ल विविध अनुश्राव देखे के मिलेला। भोजपुरी समाज जनसंख्या आ क्षेत्रफल के हिसाब से बहुत बड़ा बाटे। एकर अन्तराष्ट्रीय स्वरूप बा। लोक जीवन में फइलल इ कहावत न के अभी तक ले समग्र रूप से संग्रह भी नइखे हो सकल। हमनियों के प्रयास कइले बानी जा। भोजपुरी कहावत कोश लिखा गइल बा। प्रकाशन के इंतजार बा। वोही में से चुन के कुछ महत्त्वपूर्ण कहावत न के हम सामने राखे के प्रयास कइले बानी।

बरसात के शुरूआत आद्रा नछत्तर से मानल जाला।

अगर आद्रा में पानी ना भइल आखेली ना हो सकल आ जाते–जाते हथिया नछत्तर ना बरसल त ऽ फसल बढ़िया ना होई। घर पर आइल पाहुन के आद–सत्कार ना भइल आ जात बेरिया विदायी ना दियाइल तऽ संबंध अच्छा ना रही। एकरा के कहावत में सजावल बा–

आवत आदर ना दियो, जात दियो ना हस्त।
ऐते में दोनों गए, पाहुन आ गृहस्त।।

एगो नीतिपरक कहावत बा–

करज काढ़ी के करज लगावे, टाटी के घर ताला।
साला के संग बहिन पेढावे, तीनू के मुहँ काला।

तात्पर्य इ बा कि, करजा लेके दोसरा के करजा ना देवे के चाहीं, टाटीवाला घर में केतने मजबूत ताला लगा के सुरक्षित नइखे भइल जा सकत। सार के संगे आपन बहिन कहीं ना भेजे के चाही। अगर अइसन जे करत बा ओकर मुहँ काला एक ना एक दिन होइए जाई। एही तरे एगो कहावत में आसकती किसान, खांखी वाला चोर, गंदा आ कुरूप वेश्या तथा मिरगी वाला पासी के जीविकोपार्जन में कठिनाई हो जाई। वोकर भविष्य चउपट समझीं–

आसकत काम किसाने नासे, चोरे नासे खांसी।
काँची कूची वेश्या नासे, मिरगी नासे पासी।।

पारिवारिक कलह, फूट का खमियाजा पूरे परिवार के भुगते के पड़ेला।

खेत में फेर तऽ सब केहु खाय।
घर में फरे तऽ घरे के खाय।।

रामकथा भोजपुरिया समाज में घर घर कहल सुनल जाला। कुश के जनम के तरे भइल। एकर एगो कहानी कहल जाला–मैया सीना आपन बेटा लव के पालना में सुना देली आ बालमीकि जी से कहली की हम नदी के तीरे जा तानी। देखत रहब। कुछ दूर आगे गइला पर उनका मन में विचार आइल कि बाबा ध्यान–चिंतन में मगन रहेनी। कहीं कवनो जंगली जानवर आके उठा

www.bhojpurisahityangan.com

ले गइल तब हम का करेब? ऊ फिर के अइली आ आपन बालक के गोद में लेके चल दिहली। एने बाबा के ध्यान टूटल तऽ देखनी की बालक हइले नइखें। ऊहाँ के कुश काट के एगो बालक बना देनी आ पालना में लेटा देनी। अब सीता लवर के वापस अइली तऽ देखतारी ओइसने एगो बालक पालना में खेलत बा। ऊ बाबा से पूछली कि इ बालक कइसन तऽ बाबा बतवनी। एकरा बुक्तऊल के रूप में कहावत कहल जाला–

हड़बड़ में गड़बड़ भइल, बिना बाप के लइका भइल।
लइका भइल कब, जब ओकर माई ना रहली तब।।

अपन जवानी मऊर सुन्दरता खो चुकल एगो बूढ़ औरत के पछतावा वाला भी कहावत बड़ा प्रसिद्ध बा–

जोबन रहे तब रूप के, गाहक रहल सब कोइ।
जोबन रतन लूट गयो, बात न पूछें कोइ।।

स्त्री के साथ ही मरद जब बिआह करके घर–गिरहस्थी बसा लेलें तब उनका मौज–बहार के बात पुरान हो जाला। एह सन्दर्भ मे इ कहावत प्रचलित बा–

भूल गइल राग–रंग, भूल गइल चौकड़ी।
तीन चीज इयाद रहल, नून तेल लकड़ी।।

हर आदमी के जीवन में सुख–दुख के आगमन होत रहेला। नीरोगी आ लमहर उमर खातिर नीचे लिखल कहावत प्रेरणा के काम करेला–

जियादाखय, जल्दी मर जाय, सुखी रहे जे थोड़ा खाय।
रहे निरोगी जो कम खाय, बिगड़े काम न जे गम खाय।।

हिन्दी साहित्य में एगो कहावत मसहूर बाटे– खेत खाय गदहा, मार खाये जोलहा। एकरे समानान्तर भोजपुरी में एगो मजेदार कहावत कहल जाले– मजा मरले गाजी मियाँ, मार खइहें डफाली।

एक चीज पर धेयान जरुर रखे परी कि समय के साथे भाषा आ संस्कृति में परिवर्तन होत रहेला आ जेकर कहावत सब पर कुछ असर पड़ेला। एके कहावत अलग–अलग जगह, अलगा मुहँ से थोड़ा फेर बदल के साथे कहल सुनल जाला। जब हमनी लइका रहनी जा तऽ हर जगह, हर बात में कहावतन के प्रयोग सुने के मिले। आज क जवान पीढ़ी इन्टरनेट आ मोबाइल के माया जाल में फँस गइल बा। आज तकनिक के जुग बा। साहित्य आ संस्कृति दुनु पर संकट के बदरी मंडरा रहल बा। पहिले भूखमरी जियादा रहे, तऽ घर में खाना–पीना में लोभ–लालच खूब रहे। एगो घर में एगो मेहरारू अपना ला नव सेर के एगो रोटी पका लेवे, आ अपना मरदा लग सात सेर में सात गो रोटी बनावे। एह पर बड़ा नीमन कहावत कहल गइल बा–

सात सेर के सता पकवलो, नवसेर के एके। इ कुलबोरना सातों खइलक, हम कुलवंती एके।

बूढ़–पुरनिया के जियते उपेक्षा आ तिरकार आ मरला पर देखावा अपना समाज में बहुत पहिले से चलल आवत बाटे– जियत पिता से पूछे ना बाता, मरत पिता के दूध आ भाता।

जे जवना काम के लूर जानेला, उहे ओकरा के ठीक ढंग से कर सकेला।– एह पर भोजपुरी में बहुप्रचलित कहावत बा–

जेकर बनरी, सेही नचावे, दोसर नचावे तऽ काटे धावे। कहीं–कहीं देखल जाला कि मरद मेहरारू में एकसता आ जाला। वोहसे जीवन नीरस हो जाला। अइसने एगो स्त्री के व्यथा एह कहावत में कहल गइल बा–

कबहुँ ना हँसी के कुच गहे, कबहुँ ना रीसी के केश।
जइसे कंता घर रहे, ओइसे रहे विदेश।

भोजपुरी कहावतन में बुझौवल आ दोहरा (लाक्षणिक अर्थ) के खूब प्रयोग होत रहल बा। एगो नमूना अपने सबन के सामने राखल बानी–

पानी डालके आटा सननी, काट–काट के बनौनी लोई।
सैंया जी से मैया भइनी, अब भइनी ननदोई।।

एह संदर्भ में एगो कथा बा। एगो पालकी पर दुलहन अपना ससुराल जात रहली। संगे–संगे दुलहो पीछे–पीछे चलत रहलन। बीच में कँहार लोग के गाँव आ गइल। ऊ लोग बगीचा में पालकी रख देलक आ कहलक कि हमनी के अपना–अपना घर के हालचाल लेके आवत बानी सन। घरे गइला पर पता लागल कि नदी में मछरी बड़ा आइल बाड़ी सन्। उहो लोग मछरी मारे चल गइल। एने इंतजार करते–करते दुल्हा घबरा गइलें। ओह बेरा परदा व्यवस्था एतना रहे कि दुलहिन घूघ तानला के कारण ठीक दुलहो ना देख पावस। दुल्हा लोग के दुलहिन देखे के कवनो बाते ना रहे। दुल्हा कहलन हम जात बानी कंहार लोग के बोलावे। तू एही

www.bhojpurisahityangan.com

में बइठल रहऽ जब दुल्हा चल गइलन तब गाँव के एक कुँवार आ चालाक मरदा के अवसर मिल गइल। ऊ दुलहिन लगे आके कहलक कि कँहार लोग मछरी मारे में लागल बा। हमरो घर लगीचे बा। पैदले चल चलल जाव। एह तरे उहे दुलहिन के अपना घरे लेके चल गइल। जब कंहार आ दुल्हा आइल लोग तब पालकी खाली रहे पछता के कंहार लोग पालकी लेके चल गइल। दुल्हा गाँव में पता लगावे खातिर रूक गइलें। दू–चार दिन के बाद पता चलल। रात में दुलहिन से भेंट कइलें आ चले के कहलन। दुलहिन कहली, अब तऽ हम नसा गइनी। रऊआ घरे जाईं आ बायन लेके आईं। एह घर में एगो जवान ननद बिया ओकरे से बिआहक के बदला ले लीं। ऊ घटे गइले ढेर सारा बायन–सामान ले के अइलें। दुलहिन अपना नइहर धनवान बता के ननद से शादी करा दिहली। बुझौवल के तारतम्य केतना रोचक होत रहल ह एकर सबूत मिल गइल।

संदर्भ –

1. अशोक मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश संपादक–डॉ0 शिव प्रसाद भारद्वाज शास्त्री, प्रकाशक–अशोक प्रकाशन 2615, नई सड़क, दिल्ली–06,संस्करण–2001, मूल्य–300रु, पृष्ठ–130
2. अवधी बृहत् लोकोक्ति कोश–संकलन कर्त्ता–कमला शुक्ल, प्रथम सं.–2002, मूल्य–300रु0, प्रकाशन–उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, से प्रकाशीय अंश

✧ ✧ ✧

सर्वभाषा ट्रस्ट से प्रकाशित भोजपुरी किताब

सर्वभाषा ट्रस्ट
नई दिल्ली

8178695606
sbtpublication@gmail.com
www.sarvbhashatrust.com

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी में चंपारण के संतन-भक्तन के वाणी

- डॉ. विनय कुमार सिंह

संत लोगन के साहित्य से, उनकर शब्द के सान्निध्य से सात्विक ऊर्जा के संग्रहण के संयोग बनेला, जहँवा सुयोग्य बन जाये के संभावना सबल–प्रबल होला। होखे भी काहे ना, 'शब्द' के एही से 'ब्रह्म' कहल गइल बा। संत के उपस्थिति में समय से संवाद होला। अइसन स्थिति में कइसन मन बा, जे मगन ना हो जाए, अपना राम में रम ना जाए। भक्त कवि कबीर के 'सबद' के महिमा त अनंत बा–

कबीर सबद सरीर मैं, बिन गुन बाजै ताँति।
बाहर भीतर रमि रहा, तातैं छूटि भराँति॥

कबीरदास जी कहत बानी कि हमरा भीतर अनाहत नाद बिना तार के बाजा के समान बज रहल बा, गूँज रहल बा। उ भीतर–बाहर चारो ओर रम रहल बा। एहिसे, हमर चित्त शब्द–ब्रह्म में लीन हो गइल बा, हमर सब भ्रान्ति छुट गइल बा।

चंपारण के भोजपुरी संत साहित्य के विकास में देस के अनेक संप्रदाय के प्रभाव रहल। सिद्ध–नाथ परंपरा के संत लोगन के भी योगदान रहल। लगभग हजार बरिस पहिले गोरखनाथ के भासा देखीं–

हबकि न बोलिबा, ठबकि न चालिबा, धीरै धरिबा पाँव।
गरब न करिबा, सहजै रहिबा, भणत गोरष राँव।।

11वीं शताब्दी के सिद्ध संत चम्पकपा के आचार्य द्विवेदी जी चंपारण के मनले बानी। सिद्ध कवि कोकालिपा भी चंपारणवासी रहनीं। चंपारण में भक्त कवि कबीर के प्रभाव भी कम ना रहल।

चंपारण में संत कवि–भक्त कवि के परंपरा :–

रमेश चंद्र झा जी लिखले बानी कि चंपारण में सरभंग के मोटामोटी पाँच गो परंपरा मिले ला–(1.) सदानंद जी, (1ण) करता राम, (3ण) भीनक राम, (4ण) हरलाल बाबा, आ (5ण) भीखम आ टेकमन राम के परंपरा।[1]

भीनक राम जी के ग्यान के बानी बा–

"प्रेम–पियाला जब मुख में आवे,
सुतल भिनक उठ जागल सजनी।"

भीनक राम के ही समकालीन रहनीं, छत्तर बाबा, जे चंपारण के पंडितपुर के निवासी रहनीं। इनकर रचना भोजपुरी में बा। एगो उदाहरण–

देखली में ए सजनिया सइयाँ अनमोल के।
दसो दुअरिया,लागे केबड़िया मारे सबद का जोर के।
सून भवन में पिया निरेखो नयनवा दुनू जोर के।
छत्तर निज पति मिलले भर कोर के।।[2]

हरलाल बाबा (संवत 1801 से 1896, बड़हरवा मठ) लिखले बानी–

"माई रे, पिया के खेल कठिनाई,
अरध–उरध बिच कमल फुलानी ताहि बिच भौंरा लुभाई।"[3]

गुरु के महिमा के बखान करत भीखम राम जी (माधोपुर, पूर्वी चंपारण) लिखनीं–

सुतल रहली नींद भरी गुरू दिहलीं जगाय।
गुरू का चरन–रज अंजन हो नैना लिहली लगाय।।
वोही दिन से नींदों ना आवेला हो नाहिं मन अलसाय।
प्रेम के तेल चुआवहु हो बाती देहू जलाय।।
नाम चिनगिया बारहू हो दिन राति जलाय।
सुमती गहनवाँ पेन्हहु हो कूमती धरना उतार।।
सूत के मांग संवारहु हो दूरमति विसराय।
ऊँचि अटारि चढ़ो बैठहु हो बाहाँ चोरवो न जाय।।
राम भिषम ऐसे सतगुरू हो देखि काल डराय।[4]

नाम के महिमा बतावत टेकमन राम जी (झखरा, पिपराकोठी, पूर्वी चंपारण) लिखले बानी–

नाम के महिमा जानै, साधे घोर अघोर।
काया अछत फल पावही, सत्य वचन सुनी मोर।।[5]

एह परंपरा में दरसन दास, डीहू राम, इनर राम, सवल राम सहित अनेक संत कवि रहे लोग।

कबीर पंथ के ही एगो संत रहनी केसो/केशव दास (बेलवतिया मठ, जीवधारा)। उनकर एगो पद देखीं–

आजू मोरा हरि के अवनवाँ
जब हम सुनलों हरि के अवनवाँ
चंदन लिपलो हो भवनवाँ

www.bhojpurisahityangan.com

सिरी पंडितपुरवा में मेरो गुरुगदिया
उतर बहे हो लखनवाँ
गगन मंडल से गुरु मोरा अइलें
केसो लोटे हो चरनवाँ [6]

भक्ति काव्यधारा में ही परशुरामपुर मठ, तुरकौलिया के एगो संत रहनी, बाबा रामजीवन दास (संवत् 1880 के आसपास)। इनकार एगो रचना बा–

चरन चरन रइन दिन मानो देवी कालिका
शरण शरण तोहि पुकारो भइ कठोर कालिका
डुबत जन के काहे बिसारो भइ बेहाल हालिका
लछमी सरोसती पारबती जानकी समस्त लोक मालिका
रामजीवन जन तुम्हारे डूबत भवसागर धारे,
त्राहि त्राहि मो पुकारो दरस दीन चंद्रिका![7]

भक्ति के ई काव्यधारा सतत प्रवाहित रहल बा। एकरा के एगो लघु शोध–आलेख में ना लिखल जा सकत बा। अगर वर्तमान के सर्जन के बात कइल जाय त अनेक कवि लोग आज भी एह से सम्बद्ध लिख रहल बा। एह क्षेत्र में व्रतराज दूबे एगो प्रतिनिधि कवि बानी, जेकर कई गो संग्रह भक्ति पर आधारित बा। उहाँ के 'सिरिमद करुनाकर रामायन' (भोजपुरी महाकाव्य) में लिखले बानी–

राम कथा आराम लुटावे। गावत जीव परम सुख पावे।।
राम कथा के रूप सजाई। हरसित मन से कथा सुनाई।।
हउयें राम कथा के नायक। के बा कथा कहे के लायक।।
पहिले ऊ अपने समुझावें। तब पाछे कथवा लिखवावें।।
कपट भेद ना जहँवा होला। निरमल मन बन जाला भोला।।
राम तत्व ऊहे पावेला। राम नाम जेके भावेला।।
राम नाम के तथ जे जाने। सबसे बड़ा राम के माने।।[8]

चंपारण के भक्ति साहित्य के इतिहास आ वर्तमान के परिदृश्य के देखे खातिर ऊपर के सब उद्धरण एगो सामान्य रूपरेखा भर प्रस्तुत करत बा,काहे से कि कई गो महत्त्वपूर्ण बड़ नाम इहाँ छुट गइल बा। जे होखे, बाकि कुल निष्कर्ष इहे बा कि चंपारण में भोजपुरी में लिखल संत–भक्त कवि लोग के रचल साहित्य समृद्ध बा।

संदर्भ :–

1. चंपारण की साहित्य साधना, रमेशचंद्र झा, भारती प्रकाशन संवत 2013, पृष्ठ–36
2. हिंदी साहित्य और बिहार, प्रथम खंड, शिवपूजन सहाय, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, 1960, पृष्ठ–120
3. चम्पारण की साहित्य साधना, रमेशचंद्र झा, पृष्ठ 43
4. महर्षि कबीर और चंपारन, डॉ० शोभाकांत झा, 2003, पृष्ठ–92
5. चंपारन महिमा, डॉ० शोभाकांत झा, ललिता प्रकाशन, 1994, पृष्ठ–8
6. चंपारण की साहित्य साधना, पृष्ठ– 50
7. उपरिवत, पृष्ठ 50
8. सिरिमद करूनाकर रामायन, व्रतराज दूबे विकल, नित्याश्री प्रकाशन, 2014, पृष्ठ–22

✧ ✧ ✧

भगवान बुद्ध का उपदेसन सबसे पहिले 'पूरबी बोली' में भइल, बाद में ओकर अनुवाद पालि में कइल गइल। – सम्राट अशोक के राजभासा 'पूरबी बोली' रहे आ मौर्य लोग का राजत्वकाल में सउँसे आर्यावर्त में इहे 'पूरबी बोली' समुझल आ बेवहार में ले आवल जात रहे।

– डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी

बारहवीं सदी में कोसली का अवध क्षेत्र का भासा–रूप के अवधी आ भोजपुर क्षेत्र का भासा–रूप के भोजपुरी कहल गइल। भोजपुरी आ अवधी क्षेत्रीय नाम आ रूप भेद के आधार पर एके कोसली के दूगो अलग–अलग नाम से प्रसिद्ध भइल।

– हिड्स डेविड (बुद्धिस्ट इंडिया)

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी साहित्य के चंपारण के देन

- डॉ. संतोष पटेल
अध्यक्ष, भोजपुरी जन जागरण अभियान

अइसे त भोजपुरी साहित्य के विकास के दिशा में आज बहुत काम हो रहल बा बाकिर विकास के गति कछुआ नियन धीमा बा, जेकरा चलते भोजपुरी भासी भारत के 25 करोड़ जनता आजो भोजपुरी के एगो बोली के रूप मान के दम साध ले ले बा। हँ, कुछेक जागरूक भोजपुरी भाषी के बात अलग बा आ ईहे कुछ जागरूक लोगन के बले भोजपुरी के जवन रूप भारत में आज देखाई दे रहल बा उ एकदम सराहनीय बा लेकिन संतोषप्रद न कहल जा सकेला। 'संतोषप्रद' से हमार मतलब ई नइखे की भोजपुरी साहित्य के सृजन काफी नइखे होत भा एकरा ओर जागरूकता नइखे। संतोषप्रद होखे के बात तब मानल जा सकेला, जब जन साधारण खातिर रचना होखे, साहित्य के सृजन होखे आ जन साधारण के साहित्य के विकास के दिसा में जागृत कइल जाय।

भारत के कइगो भोजपुरी भाषी क्षेत्र जइसे, चंपारण, सारण, भोजपुर, बलिया, बनारस, गोरखपुर, कुशीनगर आ देवरिया आदि में निहिचित रूप से भोजपुरी के बढ़ावा के काज में कुछ प्रबुद्ध लोग दसन साल आ अउरो जादे समय से लागल बानी बाकिर इनकर काम में एकरूपता के अभाव विकास के दर के कुंठित करत बिया। इ बात के बिना कवनो संकोच के मानल जा सकेला। आ इहे वजह बा कि भोजपुरी के साहित्य का चोला पहिरावे में जवन एगो लम्बा दौर गुजरल बा, ई दौरान ना जानी केतना मनीषी लोग आपन चोला बदल लेले।

आजू भोजपुरी के विस्तार 50 हजार वर्ग मिल से बढ़ के जादे हो गइल बा। बिहार राज्य के चंपारन, सारन, रोहतास, भोजपुर, बक्सर, कैमूर, बाँका जिला के मंदार हिल क्षेत्र, उत्तर प्रदेश में गाजीपुर, बलिया, वाराणासी, मिर्जापुर, जौनपुर, आजमगढ़ गोरखपुर, देवरिया आ बस्ती क्षेत्र, लखनऊ, मध्य प्रदेश के सरगुजा रियायत आ जसपुर के पुर्वी क्षेत्र में, छत्तीसगढ़, रायपुर, दुर्ग, भिलाई, झारखण्ड में गढ़वा, पलामू, जमशेदपुर आ साहबगंज बाकी झारखंड के आउर क्षेत्र जइसे तेनुघाट, बेरमो, धनबाद, बोकारो, रामगढ़ हजारीबाग आ राँची में।

देखल जाव त भारत के प्रत्येक महानगर आ औद्योगिक नगर में भोजपुरी भाषी भरल बाड़न। देश के राजधानी दिल्ली के दक्षिण पच्छिम, पच्छिम जिला आ औधोगिक एरिया, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र एकरा में गाजियाबाद, साहिबाबाद, गुड़गाँव, सोनीपत, पानीपत आवेला। पंजाब के लुधियाना, जालंधर, गुजरात के सूरत, महाराष्ट्र के मुंबई, नासिक, पुणे, पश्चिम बंगाल के कोलकत्ता, खड़गपुर, असाम के डिब्रूगढ़, तीनसुखिया, गोहाटी में भोजपुरी भाषा–भाषियन के संख्या करोड़न में बा जेकरा में कई गो रचनाकार भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति के बढ़वा में दिन रात लागल बाड़न।

भोजपुरी भाषा–भाषी भारत वर्ष के कई राज्यन में बसल बाड़न आ भोजपुरी भाषा के समृद्ध कर रह बाड़न। हमनी के ना भुलाए के चाहीं कि भारत के पड़ोसी राज्य नेपाल के तराई के जिलन में भोजपुरी बोलल जाला। ऊहाँ भोजपुरी क विकास हो रहा बा। पूर्वी उत्तर प्रदेश आ बिहार से गइल शर्तबंध मजदूर जेकरा गिरमिटिया कहल जाला ऊ सभ 1834 ई. से लेके 1920 ई. तक दक्षिण अफ्रीका, मॉरिशस, सुरीनाम, फीजी, गुयाना, हॉलैंड गइलें आ भोजपुरी के ऊहाँ पौढ़ करने में भागीदारी कइलन।

वइसे एह बात से हैरानी ना होखे के चाही कि भोजपुरी भाषी पाकिस्तान के कराची के अलावा जावा, सुमात्रा द्वीप, वर्मा (रंगून), मिडिल ईस्ट में कतर, दुबई, सऊदी अरब, बहरीन, अमीरात, मक्का, आदि देशनो में बा लोग।

ईहाँ ई बात के उधृत कइल जरूरी बा कि भोजपुरिया लोग सरकारी स्तर पर बिहार में 1979 में भोजपुरी अकादमी स्थापित करवला के बाद दिल्ली में सन 2008 में आ सन 2013 में भोपाल मध्य प्रदेश में भोजपुरी अकादमी के स्थापना करावे में सफल बाड़न। उत्तर प्रदेश में भोजपुरी अकादमी 2014 में कैबिनेट से

www.bhojpurisahityangan.com

पास भइल बाकिर योगी सरकार ओकरा ठंडा बस्ता में रख देले बीया। छत्तीसगढ़ आ पं बंगाल में भोजपुरी अकादमी खुलने की संभावना बन रहल बा।

अब हम मूल प्रश्न पर आवत बानी। हमार विषय बा– भोजपुरी साहित्य के चंपारण के देन का बा? एकर एगो सिंहावलोकन इहाँ दे रहल बानी जवन भोजपुरी क्षेत्र के जनता आ विशेष रूप से चंपारण के जनतो ई गर्व के अनुभव करस कि एहू दिशा में चंपारण के धरती कबो बाँझ नइखे रहल। ई अउर बात बा कि चंपारण के सिद्ध आ संतन के लिखल भोजपुरी रचनन के जवन परिपाटी चलल ओकरा के सधुकड़ी भाषा भा दुसर कुछ कह के ओकर उपेक्षा करल गइल। बाकिर आधुनिक साहित्य के शुरुवात अइसन बुझात बा कि 'प्रतिवाद गीत' (प्रोटेस्ट सोंग) से शुरू भइलः

19 वीं सदी के अंत के बात होई, बेतिया राज (अभी 'बेतिया' पछिमी चंपारण के मुख्यालय) के महाराजा के सोझा पकड़ी–गोबिन्दगंज के स्व शिवशरण पाठक के फरियाद –

'राम नाम भए भोर गाँव लिलहा के भइले
चँवर दहे सब धान गोएड़ में लील बोइले
भए आमिल के राज प्रजा सब भएउ दुखारी
नित दिन लुटे गाँव गुमस्ता आ पटवारी'

स्व. पाठक जी के ई पंक्तियन के 'प्रतिवाद गीत' के जवलंत उदहारण मानल जा सकेला। हम इहाँ एगो बात साफ कर दी कि 19वीं सदी के अंत से आजू तक के सहित्याकारन आ उनकर लिखल रचनन के चर्चा ई लेख में भइल बा उ खाली बानगी के तौर पर प्रस्तुत करे जा रहल बानी जेसे लेख बोझिल ना होखे आ लेख के प्रस्तुत करे के हमर मनसो पूरा हो सके। एही से एह क्रम में जाने–अंजाने में कवनो साहित्यकार के चर्चा ई लेख में होखे से रह जाये ओकरा ला हम क्षमा प्रार्थी बानी।

सन 1935 ई के पहिले, उ कवन विद्वान लोग बा जे चंपारण में भोजपुरी के रचना कइलें, एकर कवनो ठोस सबूत हाथ नइखे लागल। बाकिर एगो बात सुने में आवेला की बेतिया के महाराजा भोजपुरी के कुछेक स्फुट रचना करत रहलें। 1935 के बाद चंपारण के धरती पर पंडित श्याम बिहारी तिवारी 'देहाती' के भोजपुरी के जाप खातिर भइल उदय के एगो ऐतिहासिक घटना मानल जा सकेला। चंपारण में भोजपुरी के 'आदिकवि' जदि हम देहाती जी के कहीं त एहमे कवनो अतिश्योक्ति न होई। सन 1950 के उहाँ के देहांत के पहिले खली 15 साल में अवधि में देहाती जी के सैकड़न कविता भोजपुरी में लिखल रहे बाकिर उ रचनन के भोजपुरी के रचना के श्रेणी में ना राख के 'देहाती भाषा' के कविता के रूप में मान्यता मिलल। देहाती जी के रचनन के कुछ बानगी देखीं –

"का कहीं का देखनीं, का का देखनीं
भीतर के तना देखनीं, बाहर के लिफाफा देखनीं।

चइत चाँदनी चंद्रमुखी के
झगरा अब फरियाते नइखे
गगरी भरल खिंचाते नइखे"

स्व. देहाती जी के अनुसरण करत मो कमरुल आलम के प्रवेश भोजपुरी जगत में भइल आ उहाँ के स्फुट रचना भोजपुरी में पावल जाला। जइसे –

"हमन के राज भइल दुःख छुटल गरीबवन के
तेहु पर खाइले सतुआ उधार हमनी का"

आलम साहेब के ई रचना देश के आजादी मिलला के बाद के ह।

भोजपुरी के आसमान के एगो चमकत सितारा आजो हमनी के सोझा आपन जोति बिखेर रहल बानी। उ सितारा के नाम ह– आदरणीय विन्ध्याचल प्रसाद गुप्त जी जेकर पहिला भोजपुरी कहानी "केहू से मत कहब" जनवरी 1948 ई में भोजपुरी पत्रिका में प्रकाशित भइल। आ तब से ले के अब ले रेडियो रूपक, स्फुट कविता आदि भोजपुरी जगत के गुप्त जी से मिलत रहल।

चंपारण (नवतन थाना के भीतरी 'बथना' गाँव) के एगो सपूत श्री ब्रज बिहारी प्रसाद 'चूर' के 'चंपारण गुणगान' उर्फ 'चंपारण के लोग हँसेला' जब 1955 चंपारण के अबाल वृद्ध के मुंह से तिरोहित होखे लागल त चंपारण के पड़ोसी जिलन के लोगन में खास कर के साहित्याकारन के आपन आ आपन जिला के अवमानना के बोध होखे लागल। इहाँ तक कि कवि गोष्ठियन में मल युद्ध के नौबत आ जाये (मल युद्ध के दृश्य के हम खुदे गवाह बानी)। लोग ई रचना के काफी बदनाम कइलें बाकिर सच्चाई इ रहे कि चूर जी एह रचना के माध्यम से चंपारण के इतिहास के सही तस्वीर हमनी के सोझा

www.bhojpurisahityangan.com

रखले बानी। चूर जी के दोसरो कइगो अउर रचना आजो उनका लगे पड़ल प्रकाशन के बात जोहत बिया। चूर जी का 'चंपारण गुणगान' के बस्ता में बंद रहित आ ओकरो उहे हालत होइत जदि ओकर प्रकाशन के वेवस्था सिकटा निवासी (राम नगर के लगे) के साहित्य मर्मज्ञ महंथ धनराजपुरी जी ना करवले रहतीं।

बेतिया के बारे में चुर जी लिखले बानी :–

"बेतिया के मीना मशहूर गिरजा भइल भूकंप में चूर,
अब तक बाटे हजारी मेला लगे दशहरा भारी
हाथी–घोड़ा बैल बिकेला, चंपारण के लोग हँसेला
चंपारण के लोग हँसेला...।"

श्री सरयू सिंह सुन्दर वइसे त सारण के निवासी बानी लेकिन उहाँ केकार्यक्षेत्र चंपारणे रहल। एही से, चंपारण के धरती पर रह के उहाँ के चांदनी गीत 'फगुनी अंजोरिया' के रचना के काफी धूम चंपारण में रहल। भोजपुरी साहित्य के चंपारण के देन में सुन्दर जी के उ रचना के कबो भूलाइल नइखे जा सकत। (प्रकाशन हिंदी कविताओं के संग्रह 1953 में) स्वतंत्रता संग्राम के दौरान एक ओर जहवाँ चंपारण से बाहर के कवियन के रचना जन–जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभावत रहे जइसे– रघुवीर नारायण के बटोहिया गीत, प्रिंसिपल मनोरंजन प्रसाद सिन्हा के फिरंगिया आदि, उहें चंपारण के कविलोग कबो पाछे ना रहलें। चंपारण के एगो कांग्रेसी कार्यकर्ता आ कवि मनोरंजन के 'करुण–क्रंदन' आ स्वनामधन्य कवि रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त' के रचना 'तोहर घरवा में पइसल बाटे चोर, अंजोर कइके देख भइया' सार्वजनिक सभा में खूब धूम मचावत रहे।

श्री अलमस्त जी के ई रचना 'उदयन' नामक हिंदी संग्रह में दूसर– हिंदी भोजपुरी कवितन के संगे 1955 में प्रकाशित भइल रहे। अलमस्त जी के दोसरो कई गो स्फुट रचना आजो अप्रकाशित बा। अलमस्त जी आजो कवनो कॉलेज में प्रोफेसर बानी। उनका चाहीं की आपन सभ स्फुट रचनन के संग्रह प्रकाशित करायीं जेसे चंपारण के जनता आ चंपारण के साहित्यिक इतिहास के लाभ हो सके। चंपारण के धरती पर आपन रचनन के माध्यम से हास्य बिखेरे वाला कवि बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव उर्फ बल्ली लाल के चंपारण के माटी से जवन प्यार–स्नेह मिलल उ केकरा से छुपल बा। उनकर भोजपुरी रचनन के एगो संग्रह 'चंपारण के गीत' 1957 में प्रकाशित भइल जवन चंपारण के गौरवशाली साहित्यिक इतिहास के अमर धरोहर ह।

प्रो शिवशंकर मिश्र के बात के गुण–दोष पर विचारात्मक मुक्त छंद के संग्रह 'बात बहु बात' सन 1979 ई में प्रकाशित भइल। एकरा से भोजपुरी कवितन में मुक्त–छंद के परम्परा खातिर चंपारण के धरती प्रेरणादायक बनल।

प्रो शिवशंकर मिश्र के बात के गुण–दोष पर विचारात्मक मुक्त छंद के संग्रह 'बात बहु बात' सन 1979 ई में प्रकाशित भइल। एकरा से भोजपुरी कवितन में मुक्त–छंद के परम्परा खातिर चंपारण के धरती प्रेरणादायक बनल। श्री रामचंद्र मिश्र के उनकर ग्रामीण इलाका में (पूर्वी चंपारण के ढाका क्षेत्र) में लोग उनका के 'लोक कवि' के उपाधि देले रहस।उहाँ के ना कागज के जरुरत पडत रहे अउर ना कलम के बाकिर दस लोगन के बीच बैठ जात रहीं त कवितन के झड़ी लगा देत रहीं। उनकर एक गो छोट किताब 1975 में 'आग लगी तब पानी में' प्रकाशित भइल।

डॉ. विश्वनाथ प्रसाद के राधा–कृष्ण विआह पर राधा–मंगल खंड–काव्य 1977 ई. में प्रकाशित बा। ओकरा पहिले 1971 में लोक छंद, लोक धुन अउर लोक भावना पर आधारित विवाह गीत संग्रह श्री विश्वनाथ प्रसाद 'चन्दन' का चंपारण के पारिवारिक परिवेश में बहुत सराहनीय रहल। प्रो हरेन्द्र हिमकर जी के लेखनी बड़ा सधल बा ऊहाँ के 'रमबोला' खंड काव्य 1977 ई में प्रकाशित भइल जवन चंपारण के साहित्यिक इतिहास के एगो कड़ी के रूप में सामने आइल। प्रो हरेन्द्र हिमकर एक नौजवान कवि बाड़न, बाकिर उनकर लेखनी बड़ा सधल बा।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मलेन कार्य समिति के सदस्य श्री विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव जे सुगौली के निवासी रहनी, भोजपुरी साहित्य के भंडार भरे खातिर अपन बड़हन योगदान देले बानी। भोजपुरी व्याकरण पर उनकर शोध लेख, स्फुट कविता आ कहानी कुल निहिचित भोजपुरी के एगो थाती बा। उनकर ललित निबन्ध त काफी महत्वपूर्ण बा जवन हमेशा कवनो न कवनो पत्र–पत्रिकन में प्रकाशित होत रहल।

'सुरमा सगुन विचारे ना' आदरणीय श्री रमेश चन्द्र झा के ई उपन्यास धारावाहिक रूप से भोजपुरी

www.bhojpurisahityangan.com

पत्रिका 'अंजोर' में प्रकाशित भइल रहे। जहवा ले हमार जानकारी बा, झा जी के ई उपन्यास चंपारण के धरती पर लिखे जाये वाला पहिला उपन्यास ह। वइसे त झा जी हिंदी के रचनाकार बानी बाकिर कविता, कहानी, उपन्यास आ निबंध आदि भोजपुरी में लिखे के उहाँ के जवन भोजपुरी के सेवा कइले बानी, ऊ वर्णानातित बा।

भोजपुरी गद्यकार के रूप में प्रो रामाश्रय प्रसाद सिंह के नाम बहुत आदर के साथ लिहल जाला। उनकर रेखाचित्र अकादमी पत्रिका में प्रकाशित हो चुकल बा। श्री हरिश्चन्द्र प्रसाद के भोजपुरी पर समीक्षात्मक लेख आ श्रीकान्त पाण्डेय के समीक्षात्मक लेख के हम ओझल नइखी होखल दिहल चाहत, काहे कि भोजपुरी के गागर भरे में उनकर बरियार योगदान बा। सोमेश्वर यात्रा पर संस्मरणात्मक लेख लिखे वाला श्री ज्वाला प्रसाद श्रीवास्तव जी भोजपुरी रचानाकरन के पंगती में आ गइल रही जबकि उहाँ के साहित्यिक गोष्ठियन भा ई कहीं की आत्म–प्रचार से हमेशा दूर रहत रहीं। उहाँ के अउरी रचना देखे के नइखे मिलल।

श्री लव प्रसाद शर्मा 'प्रशांत' चंपारण के भोजपुरी साहित्यिक में आपन विशिष्ट स्थान रखेनी। शिकार पर उहाँ के एगो कहानी बहुत पहिले 'भोजपुरी कहानियां' में प्रकाशित हो चुकल बा। शिकार पर प्रकाशित होखेवाली चंपारण के साहित्याकरन के ई पहिलका कहानी ह। प्रशांत जी के दुसर अउर कहानियन, कवितन के समय समय पर अलग अलग पत्र–पत्रिकन में प्रकाशित होत रहे। उनकर दू गो भोजपुरी के किताब 'जवाब' नाटक, चम्पारण के गीत, 'शिकार कथा' कहानी संग्रह प्रकाशित बा।

भोजपुरी के वरिष्ठ साहित्यकारन में पंडित नन्द किशोर झा का नाम बड़ा आदर से लिहल जाल। स्व झा बेतिया राज संस्कृत विद्यालय में शिक्षक के काम निभावत बराबर साहित्य साधना में लागल रहीं। उहाँ के कबो कवनो साहित्यिक गोष्ठी में ना जात रहीं। उहाँ के हमेशा प्रचार से दूरे रहत रहीं। आर्थिक संकट के कारण उनकर जादातर रचना अन्हार में पड़ल बा। छोट छोट किताबन के रूप में कुछ रचना अँजोर में आइल बा जेकरा में वुदिवक बहार, चाल्हाक चौकड़ी आदि प्रमुख बाड़ी सन। एक बार हम जब श्रीनगर, उनकर आवास पर गइल रहीं तब उहाँ से भइल बातचीत से ईहे लागल की उहाँ के आपन रचनन के कवनो तरे लोगन के सोझा लावे ला बेचैन रहीं। अब उनकर बेटा के ई दायित्व बा की उनकर सब रचनन के कवनो तरीका से अंजोरिया में लावस जेसे झा जी के आत्मा के शांति मिले।

'कंगना कटार बन जाला' के रचयिता श्री शिव प्रसाद किरण के भोजपुरी साहित्य के जवन देन बा उ चंपारण के जन–मानस भलेही गंभीरता से ना लेस, बाकिर उहाँ के जादातर भोजपुरी रचनन के 'टेप' मॉरिसस में बड़ा चाव से सुनल जाला। मोतिहारी के निवासी मोहमम्द खलील जिनकर कार्य–क्षेत्र इलाहाबाद बा, श्री किरण के रचनन के संगीत में सजा के लमहर–लमहर समारोह में प्रस्तुत करेलन, त श्रोतागण आत्मविभोर हो जालन। अइसन आर्थिक विपन्नता के कारण श्री किरण के रचनन के अब ले कवनो संग्रह प्रकाशित न हो पावल बा।

चंपारण के धरती पर भोजपुरी ग़ज़ल के तरन्नुम के साथे प्रस्तुत कर के श्रोतान के मन्त्र–मुग्ध करे वाला हस्ती के नाम बा दिनेश भ्रमर। भ्रमर जी दोसरो भोजपुरी के रचना कइले बानी आ भोजपुरी के इतिहास में आपन नाव पक्का करवा लेले बानी। दिनेश भ्रमर के साथ एगो अउरी नाम पाण्डेय आशुतोष के बा। भ्रमर जी के रचनन में जहवा कमनीयता के प्रतिक बा उहें पाण्डेय आशुतोष अपन रचनन में रौद्र रूप के पुट भर के श्रोता के वाह–वाही करे के मजबूर कर देले। ई दुनु कवियन के रचनन के दू रूप भोजपुरी साहित्याकाश में उदित इन्द्रधनुष के रंगन के बढ़ावे के प्रतिक बा। चंपारण के माटी में जनमल कुछ दोसरो भोजपुरी साहित्याकारन के स्फुट रचना चंपारण के गौरवशाली भोजपुरी साहित्य के इतिहास में आपन आपन तरीका से पन्ना जोड़ रहल बड़ी सन।

भोजपुरी लोक साहित्य के क्षेत्र में चंपारण के क्रमशः श्री तारकेश्वर प्रसाद, ईश्वरी प्रसाद गुप्त के नाव बड़ा आदर से लिहल जाला। श्री तारकेश्वर प्रसाद के थारू लोकगीतन आ भोजपुरी लोकगीतन पर लेख एगो ऐतिहासिक दस्तावेज ह। एही तरेह श्री ईश्वरी प्रसाद गुप्त के लोक कथा भोजपुरी के प्रकाशित बा बाकिर उनकर बहुत रचना नइखे एकरा बादो उहाँ के जवन कुछ लिखले बानी ओकर ढेर महातम बा। भोजपुरी साहित्य के अनुसंधान खातिर एगो चलत फिरता पुस्तकालय इनसाइक्लोपीडिया के नाम से विख्यात भोजपुरी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति के संग्रहक, संक्षरक आ विकास में पूर्ण रुपेन समर्पित विलक्षण प्रतिभा के धनी

www.bhojpurisahityangan.com

व्यक्तित्व के नाम ह– पंडित गणेश चौबे। भोजपुरी भाषा के दधिचि के रूप में प्रसिद्ध पं0 चौबे भोजपुरी आन्दोलन के पुरोधा मानल जात रहीं। इनकर महत्व के बारे में श्रीरंजन सुरिदेव कहलें– "चौबे जी लोक साहित्य, विशेषकर भोजपुरी भाषा और साहित्य के अनुसंधान को नई शैली और चिन्तनपूर्ण भूमिका व प्रभावशाली पीठिका प्रदान की है। वे भोजपुरी के गौरवलंकार हैं।"

पंडित चौबे भोजपुरी लोक साहित्य पर देर काम कइले बानी। चौबे जी के सात हजार (7000) पृष्ठ पर संग्रहित बा। एकरा में लोकगीत, बुझौवल, कहावत, रस्म रिवाज, लोक विश्वास, लोक संस्कार आदि विषय पर बहुत सामग्री बा। हिन्दी, अंग्रेजी आ भोजपुरी भाषा, साहित्य आ विद्वानन पर लिखल संस्मरण हमनी के सोझा बा। जेकर संख्या लगभग 300 के आसपास बा। चौबे जी भोजपुरी लोक साहित्य के दुर्लभ साहित्यिक सामग्रियन के खोज के अनुसंधान के दिसाई एगो अमन काम कइले बानी। सरभंग सम्प्रदाय (हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल के भीतरी राखल जाला) जवना के जनम चम्पारण (बिहार) में मानल जाला। ओकरा ऊपर प्रसिद्ध विद्वान धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी के शोध में प0 चौबे बहुत सामग्री देले रहलीं। प0 चौबे 'भोजपुरी–हिन्दी शब्दकोश' के सम्पादनों कइनी। अइसन ऐतिहासिक काम से चौबे जी भोजपुरी के संगे अउर भाषा–भाषियन विद्वानन के बीचे विख्यात हो गइनी।

पं0 चौबे अंग्रेजी, हिन्दी आ भोजपुरी के कईगो पत्र–पत्रिकन के सम्पादको रहीं। क्षेत्रीय सम्पादन, इंडियन फोकलोर (1956.81), अंग्रेजी पत्रिका।

भोजपुरी भाषा के विकास खातिर इहां के कइगो संथन के साथे जइसे – भोजपुरी संसद, वाणारसी, नगरी प्रचारिणी सभा (1942.80), हिन्दी अर्न्तजनपदीय, भोजपुरी सेवा संघ– 'मिथिक सोसाइटी, बंगलोर, बिहार रिसर्च सोसाएटी, पटना', अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पटना के उपाध्यक्ष, न्छ॰ के संपादित कोश के समीक्षा खंड के विशेष समिति के सदस्य,

बिहार वि0 वि0 भोजपुरी पाठ्यक्रम कमिटि के सदस्य, लोक वार्ता परिषद, टीकमगढ़ (म0 प्र0) के सदस्य, भोजपुरी अकादमी, पटना के सदस्य, आकाशवाणी, पटना के स्वर–परीक्षा समिति (1990), फोकलोर सोसायटी, कलकत्ता।

पं0 चौबे के समग्र व्यक्तित्व के विषय में मोती बी0 ए0 के कहल बा कि "भोजपुरी लोकभाषा (जनता के भाषा) ह। लोक भाषा में लोक जीवन के अभिव्यक्ति रहल। लोक जीवन आ लोक जीवन से जुडला के चलते भोजपुरी में पण्डित जी के लोक कल्याण के संभावना जादे दिखाई देलस। जेसे उहाँ के भोजपुरी के ओरि पूरा तरेह समरपित हो गइनी।"

रामरेखा सिंह (1894.1961) जितवार गाँव, गोविन्दगंज, पूर्वी चम्पारण के निवासी रही। इनकर प्रकाशित रचना में घर की घून, चौथ चन्दा, स्त्री संगीत सुमन, हरिनाम यश संकीर्तन बा। विन्देश्वरी प्रसाद वर्मा पंकज बेतिया, प0 चम्पारण के निवासी रहीं। इहां क प्रकाशित काव्य संग्रह में बेतिया के महावीरी झण्डा के धूम रहे। जनार्दन पाण्डेय विप्र के प्रकाशित भोजपुरी संग्रह आज की दुनिया गीत संग्रह, शबरी चरित्र नाटक आ माटी के महक (2001) (भोजपुरी काव्य संग्रह) बा। विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव (1929.2006) जी के भोजपुरी रचना में मन के मौज (1977), भोजपुरी ललित निबंध के संग्रह, आई, पढ़ीं–लिखीं (1994), 40 सवैया के साक्षरता से जुड़ल भोजपुरी मुक्तक काव्य ह, मेघदूत (1998) संस्कृत के महाकवि कालिदास के अमर कृति मेघदूतम के भोजपुरी–गद्य–पद्यानुवाद बा। भोजपुरी व्याकरण के रूपरेखा (1999) में भाषा विषय पर महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। धरती माँग रहल बा पानी (2004) में जवन भोजपुरी संगीत रूपक बा।

इन्द्रदेव कुँअर भोजपुरी कविता संग्रह 'माई के अंचरा' हऽ। डॉ0 उमाशंकर प्रसाद सिंह (1951–2004) इहाँ के सरभंग सम्प्रदाय और उसके अवदान पर डि.लीट के उपाधि के खातिर शोध कइनीं। आकाशवाणी पटना से इनकर कइगो भोजपुरी कहानियन आ वार्ता प्रसारित भइल। इहाँ के भोजपुरी में 'बुढ़ऊ', 'निशाबजवा', 'रऊआ उहाँ मत जायीं' आदि लोकप्रिय कहानी बाड़ी सन। डॉ. सिंह पं. गणेश चौबे के सहायक रूप भोजपुरी–हिन्दी शब्दकोश के सम्पादन कइनी जवन 'विश्व भोजपुरी सम्मेलन' से प्रकाशित भइल। आचार्य वशिष्ठ उपाध्याय अनंत (1956) के रचना में अहिल्या उद्धार (भोजपुरी), कहानी संग्रह (फुलदारी) भोजपुरी आ कविता कुंज (भोजपुरी कविता संग्रह) बड़ी सन। रउआ ग्रामः रानी पकड़ी, पत्राचार जिवरा पकड़ी, थाना–बेतिया (मु.), पश्चिमी चम्पारण के रहेवाला बानी।

www.bhojpurisahityangan.com

डॉ0 अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा दैनिक नवराष्ट्र के सम्पादीय आ व्यंग्य आलेख 'मौजी राम के डायरी' लेखन से भी ख्याति हासिल कइनी। देश–विदेश में पत्र–पत्रिकन में खूब छपनी। प. चम्पारण जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्षो पद पर रहनी। भोजपुरी काव्य संकलन 'चम्पा के फूल' में राउरो कविता के संग्रहित कइल गइल बा। व्रतराज दुबे विकल बेतिया निवासी सेवानिवृत्त शिक्षक आचार्य व्रतराज द्विवेदी 'विकल' भोजपुरी के आध्यात्मिकता से जोड़ रहल बानी। रऊरा रामचरितमानस, गीता, दुर्गा सप्तशती, सत्यनारायण व्रत कथा आदि के भोजपुरी में अनुवाद काइले बानी। कैकेयी माई, उर्मिला, बहरियावल बहू, वैदेही विवाह समेत दर्जनों खंडकाव्य लिखले बानी। पश्चिम चंपारण के लौरिया प्रखंड स्थित सीतापुर में जनमल आ बगही हाई स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा पास करि के एमजेके कॉलेज के प्रथम बैच (1955) में स्नातक की परीक्षा पास कइनी।

डॉ. गोरख प्रसाद मस्ताना के जनम बिहार के पश्चिम चम्पारण जिला मुख्यालय, बेतिया में 1954 में भइल। इहाँ के चर्चित भोजपुरी कविता संग्रह 'जिनगी पहाड़ हो गइल', 'अंजुरी में अंजोर' आ भोजपुरी प्रबन्ध काव्य 'एकलव्य' हऽ। राउर भोजपुरी लघुकथा संग्रह 'लगाव' भोजपुरी कथा संग्रह 'अगरासन' प्रकाशित बा। 'बहुजन के अनमोल रत्न' 2021 में प्रकाशित काव्य संग्रह बा जवन भोजपुरी में बहुजन विमर्श पर आधारित काव्य संग्रह बा। डॉ. मस्ताना भोजपुरी भाषा केन्द्र, इग्नू खातिर सर्टिफिकेट कोर्स (भोजपुरी), एस.सी.आर.टी. पटना (बिहार) में भोजपुरी पाठ्यक्रम, एन.सी.आर.टी. (दिल्ली) बाल लोक कहानी निर्माण समिति आ पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र (ईजेडसीसी) कलकता के भारत सरकार में बिहार सरकार के ओर से कार्यकारी सदस्य रहल बानी। दिल्ली से प्रकाशित होखे वाला भोजपुरी पत्रिका 'भोजपुरी जिंदगी' के प्रधान संपादक बानी।

उमेश चन्द्र तिवादी 'उमेश' विज्ञापन प्रकाशन अउर साहित्य के राजनीति से दूर रहके भोजपुरी, हिन्दी के कापफी संख्या में गजल, गीत लिखले बानी। किशोरी लाल 'अंशुमाली' प0 चम्पारण जिला शाखा साहित्य कुंज के सचिव पद पर प्रतिष्ठित रहनी। प्रो0 अरविन्द कुमार वर्मा 'अरविन्द' रामलखन सिंह यादव कॉलेज बेतिया में भोजपुरी विभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत। इहाँ के लिखल भरत चरित खण्ड काव्य अउरी एक दूगो काव्य संकलन बा। ढेर सारी पत्र–पत्रिकन में इहाँ के रचना छपल बाड़ी सन। ओम प्रकाश पंडित बेतिया से प्रकाशित 'हालचाल' अनियकालिक भोजपुरी पत्रिका के रउआ सह–सम्पादक हई। डॉ. देवीलाल यादव जी लोक संस्कृति में रचल–बसल सरल हिरदया के धनीक, प्रकृति प्रेमी, पर्यावरणविद आ पेशा से शिक्षक देवी लाल यादव के जनम पश्चिम चम्पारण के लौरिया प्रखण्ड स्थित इतिहास प्रसिद्ध गाँव मठिया के एगो सामान्य किसान परिवार में भइल। इहाँ लिखल दू गो किताब 'चम्पारण के नंदियाँ' पर्यावरण के गीत बा। स्व. रामस्वरूप प्रसाद जी हिन्दी के अलावे भोजपुरी भाषा में भी अनेक सारगर्भित रचना कइले बानी। तारकेश्वर प्रसाद कहानीकार का रूप में सामने अइलें। तब एह क्षेत्र में ऊ सफल ना हो सकलें त उहाँ का कुछ कविता लिखनी। पाठक लोग उनुकर लिखल कवितन के सराहलें बाकिर तारकेश्वर बाबू के एहू से संतोष ना भइल। एकरा बाद तारकेश्वर बाबू के साहित्यकार एगो नया विधा के तलाश में लाग गइल ऊ आखिर में शोध–निबंधन के क्षेत्र में आ गइलें। एह क्षेत्र में अइला का बाद उहाँ का हमनी के बहुते शोध से भरल निबंध देहनी।

श्री हरिशंकर वर्मा के जनम 1 जून, सन् 1928 के पूर्वी चम्पारण जिला के सतपीपरा गाँव में भइल रहे। इहाँ के देसी आ विदेशी साहित्य के नाँव ह 'जीवन गीता'। एकरा अलावे इनकर लिखल अंग्रेजी आ हिन्दीयो में किताब प्रकाशित बा। अंग्रेजी के किताब के नाँव 'आर्ट ऑफ सुपरभीजन' आउर हिन्दी किताब के नाँव 'पर्यवेक्ष की कला हऽ'। एह संग्रह में 'जनम आ छठी' नाँव के भोजपुरी लेख हरिशंकर जी के 'जीवन गीता' किताब से लिहल गइल बा। 'जीवन गीता' में जिनगी के क्षेत्र के व्यावहारिक रूप के तस्वीर खींचाइल बा। 'जनम आ छठी' लेख में जनम से लेके बुढ़ापा तक ले आदमी कवना–कवना मोड़ से गुजरे ला आ कइसन अनुभव होला ई सबके वर्णन बड़ा सफल ढंग से कइल गइल बा। डॉ मधुबाला सिन्हा सामाजिक, साहित्यिक आ सांस्कृतिक गतिविधियन में सहभागिता आ पुरस्कृत चाँदमारी चौक, मोतिहारी के निवासी बानी। भोजपुरी साहित्य के विकास में राऊर महत्त्वपूर्ण योगदान बा। राउर पहिलकी भोजपुरी कविता संग्रह 'अँखुआइल शब्द' हालिए छपल ह।

बेतिया (प. चम्पारण) निवासी भोजपुरी के कवि रामचंद्र राही के भोजपुरी कविता तूरीं ई जंजीर (भोजपुरी

www.bhojpurisahityangan.com

लोकगीत संग्रह) बड़ा प्रसिद्ध पुस्तक बा। रवीन्द्रनाथ ओझा (03ण12ण1932.2010) के जनम सिहंनपुरा संमरी, जिला–मोजपुर में भइल रहे। प. जा. कु. महाविद्यालय में अंग्रेजी विभाग में अध्यक्ष प्रोफेसर रहनी। आ उहे से सेवानिवृत भहली। ओझा जी अंग्रेजी के अलावा हिन्दी संस्कृत आ भोजपुरी के लिखन रही। उहाँ के भोजपुरी रचना पत्र–पत्रिकन में समय–समय पर छबल रहे। कबीर पंथ के भगताही भाषा के महंत श्री रामरूप गोस्वामी चटिया बड़हरवा के 19वाँ आचार्य बानी। रउआ प. चम्पारण भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के निदेशक मण्डल में रहनी। भोजपुरी के लगाव के फल राउर भोजपुरी भक्ति काव्य संग्रह 'चौरासी' जिकरा प्रकाशन धनुषधानी कुशवाहा जी कइनी। वधवा मठ से 'अजगूत कबीर' के प्रकाशन सहयोग भइल रहे। जवन 'अजगूत कबीर' धनुषधारी कुशवाहा के कबीर साहेब का जिनगी पर लिखल खण्ड काव्य है।

सेतुबन्ध पाठक : 'बडगो' गांव, थाना रामनगर (प. चम्पारण) के निवासी बच्चा पाठक के बेटा शेतुबंध पाठक के जनम 15 जनवरी, 1934 के भइल। इहाँ के शिक्षा दिक्षा एम. ए. (हिन्दी आ इतिहास) डिप् इन एड रहे। विपिन उच्च वित्र में प्रधानाध्यापक रही। प. चम्पारण भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से इहाँ के जुडाव रहल। भोजपुरी नाटक प्रसिद्ध बा। इहाँ के रचना पत्र–पत्रिकन में छपन रहल बाडी सन। रघुनाथ प्रसाद 'विभोर' जी योगापट्टी बेतिया, प. चम्पारण पं. निवासी रही। इहाँ के हिन्दी के संगे भोजपुरी के लमहर कवि रहनी। इहाँ के गीत संकलन 'भोजपुरी बहार' 1983 में प्रकाशित भइल। हिन्दी आ भोजपुरी दुनू भासा में रचना करेवाला डॉ रविकेश मिश्र जी के जनम नईपुर बगहा में भइल। भोजपुरी 121 छंद के 'गंगा तरंगिनी' भोजपुरी काव्य संग्रह प्रकाशित बा। भोजपुरी रचना के संग्रह 'कवने वन फूलेलऽ बेइलिया' प्रकाशित बा। अखिलेशर नाथ त्रिपाठी जी के जनम बनकटवा में 1951 में भइल। बनकवटा बगहा के लगही बा। बाकिर भोजपुरी के कवनो संग्रह प्रकाशित नइखे। स्वर्णकार परिवार में जनमल हरिद्वार प्रसाद 'मस्ताना' के जनम रतनमाल बगहा में 18.03.1946 में भइल। मस्ताना जी के भोजपुरी काव्य संग्रह 'कहल बेकहल' प्रकाशित बा। इहाँ के कविता पत्र–पत्रिकन में छपल बाड़ी सन।

गणेश विशारद जी के भोजपुरी गीत 'पिया हो उभरता घटा घनघोर' बडा प्रसिद्ध रहे। ध्रुव पाठक जी के 'का करिहे पाकिस्तानी', रोपनी गीत मशहूर भोजपुरी रचना बा। सीमा स्नधा एगो सशक्त कहानीकार हईं। मुरारी भरण प्रसाद, योगेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव भोजपुरी भासा में राउह ढेर रचना बाडी सन। उनकर लोकप्रिय 'अभागा हमरा देशवा के बाड़े हो किसान। सतई बाबा के नाम से प्रसिद्ध सत्यनारायण मिश्र 1939 में बगहा से पैदा भइल रही। रउआ हिन्दी आ भोजपुरी दूनू भासा में लिखत रही। पत्र–पत्रिकन में राउर रचना छपल बाड़ी सन। विम्लेन्दु सत्यकाम जी के भोजपुरी में 'फागुन के गीत' पाइयो तइसे गीत गइले, 'साल के कहिनयाँ राम' प्रसिद्ध बा। जय प्रकाश 'प्रकाश' जी के भोजपुरी पुस्तक 'रतनमाला', 'भोजपुरिया रसमलाई', 'महाभासा' 'प्रकाशगीत' आ 'ललटेन' प्रकाशित बा। स्पदंन में आउरी कवि लोगन के रचना बा। अविनाश कुमार पाण्डेय जी चम्पारण परिषद्, बगहा के सचिव बानी। अविनाश जी के भोजपुरी कविता संयुक्त रूप में स्पंदन आइल बा। डेजी रानी उपाध्याय के भासा सरल आ सहल बा। इहाँ के एगो मंचीय कवयित्री बानी।

7 जनवरी 1964 के गड़हिया गाँव, चौतरफा थाना प. चम्पारण में जनमल रवीन्द्र गिरि के शिक्षा दीक्षा मेहुड़ा उच्च विद्यालय में भइल। नालंदा ओपन वि. वि. से हिन्दी में एम. ए. कइनी। इहाँ के हिन्दी के संगे संगे भोजपुरी रचना कर रहल बानी। डॉ. दिलीप कुमार गुप्त जे. एन. यू. से हिन्दी में एम. ए., एम. फिल आ पीएच. डी. कइले बानी। इहाँ के सम्पति लोक सेवा आयोग, यू.पी. में 2001 में चयनित होखे आर. टी. ओ. (गोरखपुर) बानी। इहाँ के 'भोजपुरी मे किरपामंद बाबू' एगो महत्वपूर्ण रचना बा। विनय कुमार मिश्र के जनम हाँसा गाँव, रानीगंज अररिया में भइल। अंग्रेजी के व्याख्या पद पर जी. एम. एच. पी. कॉलेज बगहा में कार्यरत बानी। 'भोजपुरी के भविष्य' आलेख 'अमोला' स्मारिका में छपल रहे जेकर इहाँ के संपादक रही। इहें के रविन्द्रनाथ टैगोर के 'अंग्रेजी कविता 'Where the Mind is without Çen', चाल्से मैक्की 'Symrpatty' के भोजपुरी अनुवाद कइले बानी।

बच्चा प्रसाद 'राही' जी नरकटिया गंज, प. चम्पारण में जनम भइल रहे। इनकर कविता 'ताकि ताकि रिनपवा सिराइल, जवनवा के परिओ ना आइल कवनो कुटनिया के हियवा जुड़ाइल, गवनवा के पतिओ ना

www.bhojpurisahityangan.com

आइल।' रामचन्द्र मिश्र 'जनकवि' इहाँ के जनम नरकटिया गाँव, थाना ढाका, मोतिहारी में भइल रहे। चम्पारण के प्रसिद्ध साहित्यकार प. चन्द्रशेखरधर मिश्र के चौथका पीढ़ी में विधुधर मिश्र के जनम 11.12.1959 ई. में बगहा के रतनमाला ग्राम में भइल बा। स्नातक के बाद विधि स्नातक क के वकालत के पेषा से जुड़ल बानी। भोजपुरी के इहाँ के लागल रही ले। इहाँ के भोजपुरी स्फूट कविता बाडी सन। जैसे 'किसान हऽ' प्रमुख बा। रउआ विष्व भोजपुरी सम्मेलन के राष्ट्रीय अधिवेशन में भाग लेली बानी। फुलेनामणि त्रिपाठी जी जनम पूर्वी चम्पारण के नगदाहा (थाना–गोविन्दगंज) गाँव में भइल रहे। इहाँ के एगो आशु कवि रहनी।

अश्वनी कुमार 'अशरफ' महारानी जानकी कुमार महाविद्यालय में दर्शनशास्त्र के प्रध्यापक बानी। भोजपुरी में इहाँ के लिखल रचना पत्र–पत्रिकन में छपल बा। पुष्कंठ कवि अशरफ जन्माध बानी बाकिर रचनाधर्मित के मामला में एगो सषक्त आ बेजोड कवि हईं। चतुर्भुज मिश्र जी के जनम मठिया गाँव, नरकटियागंज (प. चम्पारण) में भइल बा। रउआ महराजा हरेन्द्र किशोर मुख्यालय, बेतिया में पुस्तकालाध्यक्ष रही। सन् 1984 में भोजपुरी साहित्यिक पत्रिका 'हालचाल' (अनियतकालित) भोजपुरी पत्रिका के संपादन पर रहल बानी। इहाँ के भोजपुरी काव्य संग्रह 'चम्पक वन' (कविता संग्रह) प्रकाशित ब। इहाँ के आजकाल 'लोक चिन्तन' के सम्पादन मण्डल में बानी। भोजपुरी विकास परिषद् प. चम्पारण आ. आ. भा. भो. भासा सम्मेलन से जुडल रही। अरूण चम्पारणी के जनम रामनगर, प. चम्पारण में भइल बा। मंच के सषक्त कवि चम्पारणी के भोजपुरी कविता पत्र पत्रिकन में प्रकाषित बाडी सन। इहाँ के भोजपुरी गीतन क साथ व्यंग्यपरक रचनो कइले बानी।

रामाश्रय प्रसाद श्रीवास्तव 'देसू' जी के जनम पाण्डेय टोला, नरकटिया गंज में भइल बा। आई (कृषि) में करने स्वर्णपदक अमीन रहली। कृष्ण परागकर्मी के पद से निवृति हो गइल बानी। इहाँ के आनंदमार्ग के पत्रिका 'भोजपुरी वार्ता' के संपादक रही। 1997.2001 तक एकर संपादन काम कइनी। 'हालचाल' पत्रिका में इहाँ वे रचना छपल बाडी सन। स्फुट रचना में भोजपुरी कविता, कहानी, निबंध, नाटक आदि बा। रघुनाथ दास जी के जनम 6 मई 1959 के भइल। इहाँ के माई सूरती देवी आ बाबू जी रामसेवक रजक रहेली। सातवां पास दास–हरिदया चौक, षिकारपुर थाना, प. नरकटियागंज जिला प. चम्पारण क रहे वाले बानी। इहाँ के भोजपुरी कहानी हालचाल, सम्मेलन पत्रिका में छपल बाड़ी सन। मंगलपुर निवासी विजयनाथ तिवारी (नौतन, प. चम्पारण) भोजपुरी में रचना कहेनी। जवन पत्र–पत्रिकन में छपे सन। नरकटियागंज के निवासी सत्यदेव पथिक जी हिन्दी आ भोजपुरी इग्नू भारत में लिखले बानी। 'वाण–वाणी–वीणा' हिन्दी संग्रह में भोजपुरी कविता प्रकाशित बा।

हरीन्द्र हिमकर (ग्राम–पोस्ट) झिनवा पटना, पूर्वी चम्पारण के निवासी हईं। 1953 में जनम हिमकर जी हिन्दी के प्रध्यापक होने खतौत में कार्यरत बानी। हिन्दी आ भोजपुरी में बराबर रूप से लिख रहल बानी। भोजपुरी में गीतन के गाँव में गीत संग्रह, पेट के माया (नाटक) आ भोजपुरी खण्ड काव्य 'सपनों का' (1977) में प्रकाशित बा। जोगापट्टी, मछरगाँव के रहनिहार विनय विहारी भोजपुरी फिलिम के गीतकार रउन। अवही विहार विधानसभा के लौटिया से बानी।

रामचन्द्र राही जी के जनम पिपरिया, बड़गाँव, बगहा–एक प. चम्पारण में भइल रहे। आपू काल्ह इहाँ के बेतिया पीउनी बाग में रहेनी। पेषा से षिक्षक राही जी भोजपुरी आ हिन्दी दूनू भासा के काव्य कर्म करेनी। इहाँ के रचना देष के अनेकानेक पत्र–पत्रिकन में छपल बाड़ी सन। भोजपुरी में कविता संग्रह 'तूटी ई जंजीर' (2005) में प्रकाशित भईल। बेतिया क्रिष्चियन क्वार्टर निवासी एडवर्ड राफायल साहेब हिंदी, अंग्रेजी आ भोजपुरी में लिखल रहेनी। रामनगर निवासी शिवनाथ चौबे 'अनपढ़' जी के भोजपुरी पत्र पत्रिका में छपल रहेली सन। नौरंगा, बेतिया निवासी चन्द्रिका राय के भोजपुरी रचना प्रकाषित बा। बेतिया, प. चम्पारण निवासी (गैसलाल चौक) सुरेश कुमार गुप्त हिन्दी के संगे भोजपुरी में लिखत रहेनी। भोजपुरी पत्रिका हालचाल, भोजपुरी जिनगी आदि में इहाँ के रचना, आलेख प्रकाशित बा। मढ़िया, ग्राम नरकटियागंज निवासी विनोद कुमार राव भोजपुरी रचना पत्र पत्रिकन में छपल बा।

नवका टोला, बसदरिया निवासी (बेतिया) के अनिल कुमार 'अनल' जनवादी लेखक संघ से जुडल बानी। 'हालचाल' अनियतकालीन भोजपुरी पत्रिका के प्रकाषन से जुड़ल बानी। इहाँ के रचना भोजपुरी रचना पत्र पत्रिकन जइसे भोजपुरी जिंदगी, भोजपुरी विष्व आ हालचाल में छपेली सन। जगजीवन नगर, बेतिया में

www.bhojpurisahityangan.com

रहेवाला प्रीतम बाबरा भोजपुरी मे कलम चलावत रहेनी। पत्र पत्रिकन में इहाँ के रचना प्रकाशित बा। मिथलेश उपाध्याय (08.02.1957) मिथिलेष नगर, चौतरफा प. चम्पारण के निवासी हई। इहाँ के स्वतंत्र लेखन करेनी। भोजपुरी कविता लिख के भोजपुरी भासा के अलख गाँव गछई में। जगइले बानी इहाँ के रचना में ग्रामीण क्षेत्र के महक बा। बेतिया निवासी रिजवाना परवीन गुलाब मेमोरियल कॉलेज बेतिया में व्याख्ता बाडी। इनकर लिखल हास्य व्यंग्य के भोजपुरी रचना प्रकाशित बा।

साठी चनपटियां निवासी अरूण गोपाल भोजपुरी मंच के दमदार कवि हई। आवाज के जाइ इहाँ के भोजपुरी गजल के प्रस्तुति में के बेजोड़ बना देला। इहाँ के रचना पत्र पत्रिकन में छपल बाडी सन। बेतिया गाँव (चनपटिया) के निवासी रिपुसूदन पाण्डेय 'देवल' के रचना ढेर पत्र पत्रिकन में छपल बा। चन्द्रभानराम (13.11.1969) भुवलपट्टी, कोइरभट्टी, ठकराहाँ के निवासी चन्द्रभान राय पेषा से शिक्षक बानी। हिन्दी में एम. ए. करके पीएच. डी कर रहल बानी। इहाँ के इग्नू भोजपुरी सर्टिफिकेट कोर्स में पाठ्यक्रम 'लघुकथा' पर तैयार कइले बानी। विश्व भोजपुरी सम्मेलन में चन्द्रभान तन भाग लेले रहनी। इहाँ के रचना भोजपुरी पत्र–पत्रिकन में छपल बाडी बा। जेमे कहानी, आलेख, आलोचना आ कविता प्रमुख बा।

एकरा अलावा, डॉ. संजय कुमार यादव (वैद्यनाथ नगर, नौतन), रोशनी विवकर्मा (बेतिया), ज्ञानेश्वर गुंजन (ठकराहाँ)', आनंद अख्तर (बेतिया) रवि कुमार (बेतिया) दिवाकर राय (शिकारपुर) से युवा भोजपरी सेवी लो जेकर रचना पर पत्रिकन में छपल बा। एकरा अलावा डॉ. रविशंकर उपाध्याय (बगहा), डॉ. ब्रजभूषण प्रसाद श्रीवास्तव (बेतिया) भोजपुरी विभागाध्यक्ष आ अमरेश ठाकुर (बेतिया), मिर्जा खोंच, रूस्तम घायल, डॉ. जफर इमाम जफर, मजीद खान 'मजीद', मंजर सुल्तान, के भोजपुरी गीत, गजल के क्षेत्र में योगदान उल्लेखनीय बा। डॉ. मधुबाला सिन्हा जी के जनम एकमा छपरा (सारण) जिला के भइल बा। इहाँ के एम. ए., पीएच. डी. कर के डि. लिट् कर रहल बानी। हिन्दी आ भोजपुरी दूनू भाषा में लेखन जारी बा। रउआ जय मंगल अनूया चम्पारण पहिला इन्टर कॉलेज में अध्यापन करेनी इहाँ के मोतिहारी के निवासी हई।

पेशा से अधिवक्ता दीपक सिन्हा 'अश्क' के जनम 11.01.1949 के पूर्वी चम्पारण के मोतिहारी भइल। इहाँ के रंगकर्मी आ कवि हई। भोजपुरी कविता लेखन से इहाँ के जुड़ाव रहल बा। भोजपुरी आ हिन्दी भासा के कवि ध्रुव त्रिवेदी के जनम 4 मार्च सन् 1944 के ग्राम ममसरा अंचल आरेज जिला पूर्वी चम्पारण में भइल रहे। इहाँ के रचना 'पुरुष', 'डगर', दझीना में प्रकाशित भइल रहे। स्व. शिवराज शर्मा के सपूत योगेन्द्र नाथ शर्मा के जनम चकिया (बाराचकिया) पूर्वी चम्पारण में भइल बा। इन्टर पास शर्मा जी बहुमुखी प्रतीभा के धनी हई। हिन्दी आ भोजपुरी दूनू भासा में बराबर रूप से लिखत हई। हिन्दी आ भोजपुरी बिहान (बलिया), अंजोर (पटना), पूरवइया, अंजोरिया, भोजपुरी कहानियाँ, भोजपुरी साहित्य, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, में छपल बा। विष्व विद्यालय द्वारा प्रकाषित भोजपुरी काव्य संग्रह में इहाँ के दूगो कविता आ बी. ए. पाठ्यक्रम खातिर चयनित बा। इहाँ के 'लुकाठी' के सम्पादन कइले बानी जेमे 1980 में मोतिहारी भोजपुरी सम्मेलन के विशेषांक प्रमुखता से जानल जाला। इहाँ से भोजपुरी एवं खातिर सम्मान मिल बा। भोजपुरी में कविता कोर्स करेवाला विश्वनाथ प्रसाद जी जनम लगढ़वा पूर्वी चम्पारण में भइल बा। इहाँ के अगरवा (पूर्वी चम्पारण) मोतिहारी में निवाल बा। 'भारत के गाँव' इहाँ के एगो प्रसिद्ध भोजपुरी रचना हई। शिववनारायण जी अरेराज, पूर्वी चम्पारण के निवासी रहीं। हिन्दी आ भोजपुरी दूनु रचना में इहाँ के लिखत रही।

तपस्वी तिवारी (ममरखा, अरेराज), बाबूलाल त्रिपाठी, षंभुनाथ त्रिवेदी (ममरखा अरेराज) के रहे वाला रहनी सभे जे भोजपुरी काव्य में योगदान देले बानी। रविन्द्र रवि : झिसवा पटना निवासी रविन्द्र रवि पूर्वी चम्पारण के निवासी हई। इहाँ के प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में भइल। एकरा बाद के एम. ए. तक ले पढ़ाई कइले। इनकर कविता, कहानी लिखे में रूचि रहल। अ. भा. भो. स. स. से छात्र कहानी 'वागीश्वरी प्रसाद पुरस्कार' इनकर कहानी 'मातम' खातिर पुरस्कृत भइल। इनकर कहानी संग्रह के नाव – 'साँझ' रहे जवन 1944 ई. में प्रकाशित भइल कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'मातम', खुषी के लोर, हमरा भाग के लीला, चाँद आ उर्मिला बा। पण्डित राम प्रसाद शर्मा के जन्म 11 जनवरी 1901 ई॰ में नेपाल में भइल रहे। बाद में उहाँ का चम्पारण जिला में आके खाटी भोजपुरिया हो गइनी।

अश्विन कमार आँसू जी के जनम 1 फरवरी, 1944 के गाँव–झुगाँव, सुगौली, पूर्वी चम्पारण में भइल

www.bhojpurisahityangan.com

रहे। इहाँ के हिन्दी में एम. ए. कइले बानी। इहाँ का भोजपुरी हिन्दी आ हई में गीत गजल अ कविता लिखिल। आँसू जी करीब 40 बरिस से लगातार भोजपुरी गीत, कविता लिखत बानी। धनुषधारी कुशवाहा जी के जनम खगनी गाँव पूर्वी चम्पारण में भइल रहे। इहाँ के पिता जी धनराज भगत हई। अपने के शैक्षणिक योग्यता स्नातक (प्रतिष्ठा) बाने। अपने के प्रकाषित कृतियन में 'झलिया', 'दुलारी', 'माहे के आख्यान' बटना के भाई बुधना बा। राउर लिखल खण्ड काव्य 'अजगूत कबीर साहेब' बा। कोलकता, दिल्ली के कार्यकाल में भोजपुरी थे दिसाई भाग लेत रहेनी। विश्व भोजपुरी सम्मेलन में रउआ इ बार दिल्ली में भोजपुरी काव्य पाठ 2008 आ 2012 में कइले बानी। जनवाडी लेखक संघ के कोषाध्यक्ष बानी। भोजपुरी रंगमंच में रउआ जुड़ल बानी। संतोष शर्मा जी 5 जुलाई 1944 में पूर्वी चम्पारण के (रघुनाथपुर) में जनमल बानी। रउआ युवा हस्ताक्षर हई। भोजपुरी नेपाली आ हिन्दी में लिखत रहेनी। रउर लिखल गीत चम्पारण के गीत में शामिल बा।

डॉ. लटपट ब्रजेश के कौडिहार रोड, खगौल, पूर्वी चम्पारण के रहनीहार बानी। भोजपुरी संस्था 'भोजपुरी बौद्धिक निवास मंच' के अध्यक्ष पद पर र हके भारत नेपाल के भोजपुरी साहिलबाद के बीच दूनू के काम करेनी। रउआ भोजपुरी के विकास में लागल रहेनी। अपने के भोजपुरी गजल सम्मेलन में छपल बाड़ी सन। हरिश्चंद्र साहित्यालंकार जी भोजपुरी सेवी साहित्यकार लोगन पद कलम चलवाये हमनी। इहाँ के लिखल साहित्यिक जीवनी रमेशचन्द्र बा : श्रद्धांजलि, भाषा सम्मेलन पत्रिका में अंक 12 में 1944 अगरज में छपल रहे। रामदेव त्रिपाठी अलमस्त, देहाती जी संभ पद इहाँ के आलेख छपल बा। ठाकूरबाडी, मोतिहारी (पूर्वी चम्पारण) में रहे वाला हरिश्चन्द्र जी भोजपुरी गद्य में 'जीवनी लेखन' आ साहित्यिक मीमांसा पर खूब कलम चलवले बानी। इहाँ के तीसरका चम्पारण महोत्सव स्मारिका 1993 ई॰ के संपादक रही। हरिश्चन्द्र प्रसाद समीक्षात्मक लेख खातिर प्रसिद्ध रही।

प्रसाद रत्नेश्वर जी ढाया अगरवा, मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण में रहीला। इहाँ के एम. ए. बानी आ कल्चरल एन्थ्रोपोलिजिस्ट) में पीएच. डी करत बानी। चम्पारण महोत्सव के प्रणेता के रूप में जाने जाये वाला रत्नेष्वर जी सन् 1991 साल से 'चम्पारण महोत्सव के सांस्कृतिक–साहित्यिक धरोहर के सहेजे में लागल बानी। इहाँ में 2009 में चीन के कुनमिंग षहर में आपन षोध पत्र प्रस्तुत कइले बानी। इहाँ के 1991 से 'चम्पारण महोत्सव' नाम के स्मारिका के प्रकाषन समय समय हरि नेपाल चम्पारण महोत्सव में करावत रहिले। रउआ भोजपुरी हिन्दी के गजलकारो बानी। भोजपुरी में लिखल कविता आ गजल प्रकाषित होखन रहेली सन। प्रो. राम सनीवन सिंह जी हिन्दी के आलावे भोजपुरी में इहाँ रचना करत रहनी। 'अश्वपाली' नामक इनकर भोजपुरी रचना उपलब्ध बा जवन ऐतिहासिक सन्दर्भ के कलात्मक उत्कर्ष बा। 'अम्बपाली' रचना अँजोर अंक–5, किरिन– 1,2 में छपल बा। एही पत्रिका में प्रो. सिंह के अउर भोजपुरी रचना छपल बाड़ी सन। (पृष्ठ 37, परम्परा के कीर्ति स्तम्भ)

सोमेश्वर पर संस्मरणात्मक लेख लिख के ज्वाला प्रसाद श्रीवास्तव जी भोजपुरी रचनाकारन के पक्ति में आ गइनी। इहाँ के आत्म आ साहित्यिक बोधियन के दूर रहत रही। इहाँ के दोसर रचना देखे के ना मिलल। चम्पारण के माटी में मोतिहारी के रामसमल सिंह 'प्रकाश', बेतिया से मोहन मधुर, जोगापट्टी से सुदेव मिश्र, जितेन्द्र अनल, अमवलिया (बगहा) से थास नन्दन प्रसाद वर्मा, मोतिहारी से चन्द्रधर मिश्र आदि लोगन के छिटपुट रचना आइल बा। भोजपुरी लोक साहित्य में 'चम्पारण के क्रमशः तारकेश्वर प्रसाद आ राजेश्वरी प्रसाद गुप्त का नाम बड़ा आदर से लिहल जाला। तारकेश्वर प्रसाद 'थारू लोकगीत आ भोजपुरी पर लेख एगो ऐतिहासिक दस्तावेज ह। एही तरह ईश्वरी प्रसाद गुप्त के लोककथा भोजपुरी में प्रकाशित बा। पश्चिम चम्पारण के जोगापट्टी अंचल के बपुआ गाँव में सावलिया विकल के जनम भईल। प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में, फेर महरानी जानकी कुमार महाविद्यालय से उच्च षिक्षा लिहला के बाद 1957 से सरकारी नौकरी आ गइनी। भोजपुरी साहित्य के ओरि 1965 से प्रवृत भइनी। इहाँ पहिल भोजपुरी रचना 'रमना के शहीद', भोजपुरी कहानियाँ (वाराणसी) से प्रकाशित भइल। फेर मोटी के बोली (छपरा), भोजपुरी जनपद (वाराणसी) से कहानी आ कविता प्रकाशित भइल। मंच आ आकाषवाणी पटना में सक्रिय विकल जी भोजपुरी के अनियतकालिन पत्रिका 'जोखिम' के संपादन 1980 ई. में कइनी। भोजपुरी प्रधान परिषद् के संचालन का भोजपुरी के मान बढ़वले बानी। विनोद कुमार राव के जनम 05.11.1967 में भइल बा। इहाँ के घर खिरिया, मठिया, नरकटियागंज, प.

www.bhojpurisahityangan.com

चम्पारण। एम. ए. (भूगोल) से कइला बाद बीएड. करके इकइले बानी। इहाँ के भोजपुरी रचना हालचाल, भोजपुरी स्मारिका, व्यग्र निजल्क (संपादक डेजी रानी उपाध्याय, बगहा, अंकर, 2011) में, भोजपुरी विष्व (पटना) में भइल बा। आकाषवाणी पटना से इहाँ के भोजपुरी काव्य पाठ कऽ चुलक बा बानी।

भोजपुरी साहित्य में गुलरेज़ शहजाद के योगदान केहू से लुकाइल नईखे। पश्चिम चंपारण में मिर्जा खोंच लेखा तन्मयता से गुलरेज जी के लेखन उर्दू आ हिंदी में समान रूप से चलेला। साहित्यकार पिता मो.अली अख्तर साहित्यिक उर्फ डॉ०अख्तर सिद्दीकी जी बेटा गुलरेज शहजाद के जनम 05 जून 1976 के भइल। रऊरा एम. ए. (उर्दू).एम.बी.ए.(एच.आर.) तक शिक्षा हासिल करके पी०एचडी० कर रहल बानी। राउर प्रकाशित भोजपुरी कृतियन चंपारण सत्याग्रह गाथा (भोजपुरी प्रबंध काव्य) 2018 में भईल बा। राउर अप्रकाशित कृतियन में धाह (भोजपुरी कविता/गजल संकलन) नारायणी के दुख (भोजपुरी प्रबंध काव्य) बाड़ी सन। सम्प्रति रऊरा वार्ड संख्या–04 नगर निगम, मोतिहारी के निगम पार्षद बानी।

चंपारण के समकालीन भोजपुरी कलमकार में दिवाकर राय के नाम बहुत सम्मान से लिहल जाला। रऊरा स्नातकोत्तर द्वय (हिन्दी, भोजपुरी), लब्ध स्वर्ण पदक बानी थारू जनजाति के लोकगीतों का सामाजिक– सांस्कृतिक अनुशीलन पर राऊ पीएचडी बा। सम्प्रति रउरा प्रधानाध्यापक, राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय, मलकौली– पटखौली, बैरिया, जिला–प.चम्पारन, बिहार कार्यरत बानी। राउर अप्रकाशित भोजपुरी कृतियन में भोजपुरी लोकगीतन में देशभक्ति के भावना पर।आधारित काव्य संकलन 'हम त चरखा से लेब सुराज' आ भोजपुरी नाटक चंपारण के गांधी प्रमुख बा जवान जलदिए हमनी के सोझा आई।

भोजपुरी साहित्य में दिलीप कुमार के योगदान मल्टी डाइमेंशनल बा। पश्चिम चंपारण के बगही गांव में इहा का जनम भइल बा। दिलीप जी के शिक्षा दू भाषा में एम ए (भोजपुरी आ हिंदी) बानी। हिंदी में नेट पास दिलीप जी के काम भोजपुरी के बरियार बा। इहां के प्रकाशित कृति यशस्वी आलोचक नागेंद्र प्रसाद सिंह बा बाकीर संपादित भोजपुरी के प्रतिनिधि गज़ल भाग 2, नागेंद्र प्रसाद सिंह रचनावली भाग 3,4, और 5, सरदार रघुवंश नारायण सिंहः व्यक्तित्व एंव कृतित्व, भोजपुरी कथाकोश, माटी करे पुकार आदि प्रमुख बा। रऊरा हाल चाल, भोजपुरी जिनगी, भोजपुरी विश्व, भोजपुरिया अमन, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के संपादकीय प्रभाग से जुड़ल बानी। दिलीप कुमार जी भोजपुरी आलोचना में तेजी से उभर रहल बानी।

बिहार प्रांत के चम्पारण के ऐतिहासिक धरती पर जनमल जलज कुमार अनुपम शिक्षा अभियांत्रिकी के लिहले बाड़ें बाकिर उनकर मन साहित्य–संस्कृति में दीक्षित बाटे। जलज के मुख्य रूप से एगो सफल उद्यमी, हिंदी अउरी भोजपुरी के प्रेरक वक्ता, समसामयिक ब्लॉगर चाहे राष्ट्रीय अखबारन में भोजपुरी अउरी हिन्दी के जागरूक कॉलम लेखक के रूप में जानल जाला। दिल्ली सरकार के सहयोग से भोजपुरी के पहला लिटरेचर फेस्टिवल आयोजित करे के श्रेय जलज के हिस्से बाटे। मैथिली–भोजपुरी अकादमी, दिल्ली से जलज का एगो भोजपुरी कविता संग्रह 'हमार पहचान' नाम से प्रकाशित बाटे। जलज के एगो भोजपुरी बालगीत संग्रह 'अटकन चटकन' भी प्रकाशित हो चुकल बाटे। जलज के हिन्दी उपन्यास 'उचक्का राग' भी खूब चर्चा बटोरले बाटे। जलज बेबाक व तार्किक पक्ष रखला के संगे ही नवाचार प्रवृति के प्रखर राष्ट्रीय हित के वक्ता बाड़ें। जलज के राष्ट्रीय स्तर के अनेक पुरस्कार प्राप्त बाटे। एकरा अलावा जलज वर्तमान में भोजपुरी मंथन के संपादक अउरी राष्ट्रवाक् के प्रबंध संपादक बाड़ें।

11 सितम्बर, 1982 में नरकटियागंज में जनमल डॉ. उज्ज्वल आलोक जी के शुरुआती पढाई कस्बा के सरकारी स्कूल में चम्पारण नवोदय से पढला के बाद दिल्ली विश्वविद्यालय से कॉमर्स में बीकॉम कईनी आ प्राइवेट कम्पनी में कुछ समय तक काम कईनी आ आपन रोजगार भी कईनी। साहित्य से जुड़ाव के चलते नौकरी छोड़ के जेएनयू से हिंदी में एम. ए., एमफिल आ पीएचडी कईनी। पीएचडी के दौरान भारत सरकार के अकादमिक परियोजना में शैक्षणिक सलाहकार आ ई–लर्निंग विशेषज्ञ के जेएनयू में ही नौकरी कईनी। वर्तमान समय में सहायक प्रोफेसर के रूप में बाबा साहेब भीमराव अम्बेदकर विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर में कार्यरत बानी।

5 जनवरी 1991 के बिहार प्रांत के पश्चिम चंपारण जिला के दुधा चतुरी गांव में जनमल सुशांत शर्मा भोजपुरी के युवा रचनाकारन में प्रमुख रूप से जानल जालें। सुशांत के प्रारंभिक शिक्षा बेतिया के ख्रीस्त राजा

www.bhojpurisahityangan.com

उच्च विद्यालय आ इंटरमीडिएट की शिक्षा महारानी जानकी कुँवर महाविद्यालय से भइल बा। काशी हिंदू विश्वविद्यालय से इतिहास विषय में स्नातक की उपाधि ग्रहण कइला के बाद जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से हिंदी साहित्य में परास्नातक की उपाधि आ दिल्ली विश्वविद्यालय से 'मीर तकी मीर एवं घनानंद के काव्य में प्रेम का स्वरूप' विषय पर आपने एमफिल कइले बानी। सम्प्रति आप काशी हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में 'मध्ययुगीन राम भक्ति काव्य का वैचारिक परिप्रेक्ष्य' विषय पर शोध कार्य कर रहल बानी। सुशांत शर्मा के साहित्यिक उपलब्धियन के बात कइल जाव त आपन स्नातक के पढ़ाई के दौरान 'जटायु' नामक कथा काव्य के रचना कइनी। 'जटायु' खातिर 2019 में सर्व भाषा ट्रस्ट की ओर से 'धरीक्षण मिश्र सम्मान' मिलल। वर्ष 2021 में नया पुस्तक 'ओरहन' आइल बा जवन अपने आप में विशिष्ट बा। एकरा अलावा सुशांत महाकवि जयदेव विरचित गीत–गोविंद के अष्ट पदियन के भोजपुरी अनुवाद, रवीन्द्रनाथ टैगोर के बांग्ला गीतन के भोजपुरी अनुवाद कईले बाडन। भोजपुरी गीतन में नया शिल्प आ नया संवेदन के प्रयोग के संकलन 'पानी के धार पे माटी के दीया' जलदिये प्रकाशित होखे वाला बा।

डॉ. संतोष पटेल के जनम 4 मार्च, 1974 के बेतिया (पश्चिम चम्पारण) में भइल। इहां के दिल्ली में विगत 23 साल से रहत बानी आ दिल्ली में भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति के प्रचार–प्रसार में लागल बानी। इहाँ के अंग्रेजी में एम.ए.,एम.फिल, हिन्दी में एम.ए. भोजपुरी में एमए स्वर्ण पदक हासिल कइले बानी। अनुवाद में, बुद्धिजम, संगीत में पीजी डिप्लोमा के इग्नू से भोजपुरी में पीएच. डी. कइले बानी। इहाँ के दिल्ली से प्रकाशित होखे वाला भोजपुरी तिमाही 'भोजपुरी जिंदगी' के संपादक हई, पूर्वांकुर (भोजपुरी–हिन्दी) के सह–संपादक आ भोजपुरी पंचायत के सहायक संपादक हई। दिल्ली में पुर्वांचल एकता मंच के महासचिव के पद पर रह के दस गो विश्व भोजपुरी सम्मेलन के सफल आयोजन में राउर भूमिका महत्वपुर्ण बा। इहाँ के दर्जनों रचना विभिन्न पत्र–पत्रिका में छपल बिया। रउआ राश्ट्रीय भोजपुरी सम्मेलन, 2009 में भोजपुरी कीर्ति सम्मान मिलल बा। राऊर भोजपुरी में दू गो कृति मैथिली भोजपुरी अकादमी, दिल्ली से भोर भिनुसार बा आ काव्य संकलन अदहन काव्य कृति अकादमी में प्रकाशित होखे खातिर स्वीकार बा। भोजपुरी जन जागरण अभियान के अध्यक्ष पद पर रहत रउरा दिल्ली में जंतर मंतर पर 2015 से लगातार अब तक 15 गो धरना प्रदर्शन करा चुकल बानी।

निहोरा: चूंकि हम दिल्ली में नौकरी करिला एकरा चलते दुनु चंपारण में भोजपुरी साहित्य के दिसाईं बहुत गतिविधि के जानकारी कम बा। हो सकेला जे लोगन के नाम के चर्चा ईहां भईल बा ओकरा अलावा बहुत लोग के नाम रह गईल होई। एकरा खातिर हम क्षमाप्रार्थी बानी।

✧ ✧ ✧

भोजपुरी साहित्य जेतना मीठ बा, ओतने हृदय के छूवे वाला बा। ओकरा में संवेदनन के संसार निरंतर स्पन्दनशील बा। हम ओकरा से सदैव रस लेत रहिले।

– डॉ. रामकुमार वर्मा

भोजपुरी सशक्त लोकभासा ह आ ओकरा में भारत का धरती के उर्वरता आ आकाश के ब्यापकता एके सङ्गे मिल जालें।

– डॉ. महादेवी वर्मा

जइसे लायक बेटा का मतारी के देह पर फाटल लुगरी बा त माई के ना ओह बेटा के कमी बा ओइसहीं सुशिक्षित साहित्यकार के मातृभासा में साहित्य के अभाव बा त ओह मातृभासा के ना, ओह मातृभासा के बोले वाला सुशिक्षित साहित्यकार के कमी बा।

– अज्ञात

www.bhojpurisahityangan.com

चंपारन गांधी से पहिले आ गांधी के बाद

- जलज कुमार अनुपम
लक्ष्मन नगर, पथरी घाट, बेतिया, बिहार, पिन - 845438
मो.– 91. 9971072032, E-mail : merichaupal@gmail.com

परिचयः

चंपारण, बिहार के उतर–पच्छिम सीमा पर अवस्थित बा, जवन वर्तमान में पुरबी चंपारण आ पश्चिमी चंपारण जिलन के नाँव से जानल जाला। पच्छिमी चंपारण के मुख्यालय बेतिया अउरी पुरबी के मोतिहारी बाटे। हिमालय के तलहटी में अउरी गण्डकी के आँचर में लपेटाइल चंपारण अपना ऐतिहासिक गौरव से महिमामंडित बाटे। चंपारण के चौहदी देखल जाव त उत्तर में नेपाल अउरी हिमालय के पर्वतश्रृंखला, दखिन में पुरान प्रसिद्ध गण्डकी के चंचल धार, पुरुब में बेगवती बागमती के उद्दाम लहर अउरी पश्चिम में कुशीनगर अउरी गोरखपुर के जिला बा। पद्म पुराण के अनुसार ध्रुव के तपोबन गण्डकी के किनारे बा।

"ततोध्रुवस्य धर्मज्ञ स्माविश्य तपोवनम्
गुह्यकेषु महाभाग मोदते नात्र संशय।।"

इतिहास :

चंपारण के साहित्य में ब्यापक चर्चा। चंपारण गाँधी जी के जुड़ला से बहुत पहिले से जगमगात रहे। त्रेता, द्वापर चाहे बुद्धकालीन सभ्यता संस्कृति के ध्वजा आ पहचान ई क्षेत्र आजो मजबूती से पकड़ के रखले बा। रामायण लिखे वाला महर्षि बाल्मीकि के आश्रम एही चंपारण में रहे जवन आज के बाल्मीकीनगर बाटे। हिमालय के तराई अउरी नेपाल से सटल बाल्मीकीनगर में बनजीव के संरक्षण खतिरा बाल्मीकि राष्ट्रीय उद्यान बाटे। एही में बाघ आरक्षित क्षेत्र (टाइगर रिजर्व) बाटे। लव–कुश अउरी श्रीरामचंद्र जी के लड़ाइयो एही इलाका में भइल रहे। महाभारत काल में पांडव लोग जब वनवास के समय राजा विराटनगर में छिपल रहल उ एही क्षेत्र में पड़ेला।

एह क्षेत्र से मौर्य वंश के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य के बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध रहे। सम्राट अशोक के बनवावल अशोक स्तम्भ आजो अरेराज से सटल पश्चिम लौरिया गाँव, बेतिया से सटल पश्चिम लौरिया अउरी रामपुरवा में जस के तस खड़ा बाटे।केसरिया से पिपरा जाए वाला सड़क पर सागरडीह नाम के एगो टीला बा जवना के बौद्ध कालीन स्तूप के भग्नावशेष समझल जाला। लगभग 400 ई. के आस–पास चीनी यात्री फाह्यान ओह जगह के देखलें रहल जहवा भगवान् बुद्ध राजसी वस्त्राभूषण उतार के संन्यासी के भेष धारण कइलें रहलें।

मध्यकाल में कर्नाट राजवंश के संस्थापक नान्यदेव से ले के गयासुद्दीन तुगलक तक के चंपारण से सन्दर्भ रहल बा। मुहम्मद इब्न युसूफ के बेदी बेन शिलालेख से ई सिद्ध होला की चंपारण के एक भाग पर तुगलक के अधिकार रहे। 1530 ई. में अलाउदीन हुसेन शाह के पुत्र नसरत शाह तिरहुत पर आक्रमण कइके अपना राज में मिला लिहलें। राजा उदयकरण के बीरता से प्रभावित होके राजा टोडरमल उनका के चंपारण के शासन के भार सउँप देहलें। 1582 ई. में राजा टोडरमल चम्पारण सरकार पर लगान निर्धारित कइलेन। अकबर के वित्तमंत्री अउरी विद्वान अब्दुल फज़ल आईने अकबरी (बलोच मैन के अनुवाद की तीसरकी पुस्तक) में चम्पारण के विशेष स्थान देहले बाड़ें। सूबा बिहार के उल्लेख करत लिखलें बाड़ें "चम्पारण के भूमि पर बिना जोतले दलहन के बीया बो देहल जाला, जवन बिना परिश्रम के उपजाऊँ होला। इहवाँ के जंगल में पीपर के पेड़ बहुत जलदी बड़ हो जाला।" अलीवर्दी से लगायत मीर कासिम से लेले 1762 ई. में ध्रुव सिंह के मृत्यु के बाद उनकर दौहित्र युगल किशोर सिंह मीर कासिम के सेना के खदेड़ देहलें।

बक्सर के लड़ाई में 22 अक्टूबर 1764 ई. के मेजर मुनरो एक संगे मुगल शाह आलम द्वितीय,अवध के नबाब शुजाउदौला अउरी मीरकासिम के संयुक्त सेना के पराजित कके अंग्रेजन के उतरी भारत के भाग्य बिधाता बना दिहलें। एकरा बाद दहशत के, परतंत्रता के, गुलामी के, आतंक के, जबरदस्ती राजस्व वसूली, भय अउरी डर के दौर के दौर शुरू भइल।

www.bhojpurisahityangan.com

किसान आन्दोलन :

चम्पारण के खेती आ किसानी के एह बात से समझ सकल जा सकत बा की डॉ. राजेंदर बाबू 'चम्पारण में गांधी' नामक किताब में चंपारण के प्रसंशा में कहले बानी कि "बाटे इहवें एगो जगह मझउआ जहवा भात ना पूछे कउवा।"

ब्रजबिहारी प्रसाद 'चूर' जी कुछ एह तरह से कहले बानी की –

रामनगर के धनहर खेती/एक–एक खेत रहू के पेटी,
भात बने बटुला गमकेला/चंपारण के लोग हँसेला।

लार्ड कैनिंग 29 अप्रैल 1859 के प्रजा लोगन के स्थिति के उन्नत बनावे खातिर बंगाल लगान अधिनियम के हरी झंडी देखवलख। बंगाल काश्तकारी अधिनियम 1885 के तहत 1891.99 ई. ले चंपारण जिला में कइल गइल सर्वे बंदोबस्त बहुत हद तक रैयत के अधिकार के सुरक्षित कर देहलस। 1875 के बाद अंग्रेज लोग चम्पारण में नील के खेती के मोटा–मोटी शुरुआत कर देहलें। 1888 में बेतिया राज अंग्रेजन के नील के खेती खतिरा 417 गो गाँव मुकर्ररी बंदोबस्त कर के दे देहलस।

चम्पारण में नील के खेती अंग्रेज लोग मुख्यतः दू तरीका से करावे। पहिला जीरात पद्धति कहाय आ दुसरका असामिवार पद्धति। एह दुनु प्रथा से निलहा लोगन के ख़ास फायदा होखे। चम्पारण एह दौर में निलहा अत्याचार के बोझा से दबल जात रहे। चम्पारण के पकड़ी गोविन्दगंज जवन आज पूर्वी चंपारण में बा, उहवाँ के एगो किसान कवि शिव शरण पाठक एक दिन आपन फरियाद लेके बेतिया राजा के दरबार में उपस्थित भइलन आ आपन दुखड़ा भोजपुरी में सुनवलें जवन निम्नलिखित बा –

राम नाम भये भोर, मोर गाँव लिलहा के भइले।
चवर दहे सब धान, गोंयड़ में लील बोअइले।।
भये आमिल के राज प्रजा सब भयेउ दुखारी।
मिल जुल लूटे गाँव गुमस्ता और पटवारी।।
थोरका जोते बहुत हेंगावे, तापर चेपा थुरवावे।
कातिक में तैयार करावे, फागुन में बोअवावे।।
जइसे लील दुपत्ता होखे, तइसे लगावे सोहनी।
मोरहन काटत थोर दुःख पावे, दोंजी के दुःख दोबरी।।
एक उपद्रव रहले रहल, दोसर उपद्रव भारी।
सभे लोग से गाडी चलावे सभे चालावे तांड़ी।।
ना बांचेला ढाठा पुअरा, ना बाँचेला भूसे।
जेकरा से दुःख हाल कहिला, से माँगेला घूसे।।
है कोई वीर जगत में धरमी, लील के खेत छोड़ावे।
बड़ा दुःख ब्राह्मण का भइले दुनू साँझ कोड़वावे।।
सभे लोग कहेला काहेला दुःख सहहूँ।
दोसरा से दुःख ना छूटत तब महाराजा से कहहूँ।।
महराजा जी प्रसन्न होइहें, छनही में दुःख छूटी।
काली जी जब कृपा करिहें मुँह बैरी के टूटी।।

ई कविता सुन के राजा के पीड़ा के अनुभूति भइल बाकिर ऊ कुछ कर ना सकत रहलें, काहे कि सारा अधिकार अंग्रेजन के पहिलही दे दिहल रहे। बजार में कृत्रिम नील के अइला से नील के बिरोध त 1893 से शुरू हो गइल रहे बाकिर 1907 ले ई बिकराल रूप ध लेहलस।

गाँधी जी के चंपारण आगमन :

नील के आतंक से मुक्ति खातिर चम्पारण के साठी क्षेत्र के शेख गुलाब, लौरिया के शीतल राय, सतवरिया के पंडित राजकुमार शुकुल, बेतिया के राधेमल एवं पीर मोहम्मद मुनीस, लौकरिया के खेन्हर राय अउरी साथ में किसान लोग मिल के आपन विरोध प्रदर्शन करत रहे। गांधी जी ओह बेरा दक्षिण अफ्रीका से आ गइल रहलें आ उनकर नाम सगरो चर्चा में रहे। एगो विशेष व्यक्ति यमुना प्रसाद के राय राजकुमार शुकुल जी के एह राय से मिलत रहे कि गांधी जी चम्पारण के उद्धार कर सकत बाड़ें। एही क्रम में राजकुमार शुकुल जी तमाम बिकट परिस्थीति से जुझत भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 31वाँ अधिवेशन लखनऊ में गांधी जी से भेंट करेके के लालसा अपना करेजा में लेहले पहुँचले। एह अधिवेशन में बिहार से राजेंद्र प्रसाद, ब्रज किशोर प्रसाद पहुँचल रहे। कांगेस के एह अधिवेशन में चम्पारण के निहला के अत्याचार पर प्रस्ताव पास भइल। गांधी जी एह बात के भरोसा दे के छोड़ देहनी की हम जल्दी उँहवा आइब। 3 अप्रैल के गांधी जी राजकुमार शुकुल जी के तार भेजनी की हम कलकता जात बानी आ उहवाँ हम भूपेंद्र बाबू के इहवाँ रुकब। शुकुल जी गाँधी जी से पहिलही उहवाँ पहुँच गइल रहलें आ गांधी जी के ई बात निमन लागल। 9 अप्रैल के राजकुमार जी गाँधी जी के राजेंदर बाबु किहाँ पटना में रुके के जोगाड़ कइनी। फेरु उहाँ कामुज्जफरपुर निकल गइनी। मुज्जफरपुर में निलहा संघ

www.bhojpurisahityangan.com

के मुख्यालय रहे। बिहार के तमाम नेता लोग मुज्जफरपुर पहुँचल। इहवाँ कुछ रणनीति कुछ बनल आ मोतिहारी के धरती पर गाँधी जी 15 अप्रैल के आपन कदम रखलें। उहाँ के संगे दू गो वकील धरनीधर बाबू आ रामनवमी प्रसाद रहले जे दू भाषिया के काम करे। गांधी जी के चंपारण अइला पर अंग्रेजी कोर्ट से नोटिस निकल आइल हाजिर होखे ला। 18 अप्रैल के 1917 के दिन चंपारण के इतिहास में यादगार दिन रहे जब गांधी जी कोर्ट के आदेश पर अपना आप के कोर्ट में सरेंडर करे पहुचलें।

मोतिहारी कोर्ट में हजारों के संख्या में लोग टकटकी लगवले गाँधी जी के अपना भाग्य बिधाता के रूप में सुने खातिर तइयार खड़ा रहे। गाँधी जी रैयत लोगन के दुःख आ तकलीफ देख के द्रवित हो उठलें आ कुछ करे के ठान लिहलें। इहवें से शुरुआत भइल चंपारण सत्याग्रह के आ मुक्ति मिलल चंपारण के किसान लोगन के निलहा आतंक से। 10 अप्रैल, 1917 के पहली बार महात्मा गांधी बिहार आइल रहनी। एह तारीख के एह साल सौ साल पूरा हो गइल। बिहार सरकारो गांधीजी के चंपारण सत्याग्रह के सौवाँ वर्षगाँठ मना रहल बा।

साहित्य कला अउरी संस्कृतिः

स्वतंत्रता आन्दोलन के समय एगो भाषा के लेके हिन्दियो आन्दोलन चलत रहे, जवना के बल देवे में सर्वाधिक जोगदान उतर भारत यू.पी. बिहार के रहे। एने के लोग अपना मातृभाषा के मोह त्याग के हिंदी के मजबूत करे खातिर हिंदी में अखबार, पत्रिका निकालें आ कविता दृसाहित्य हिन्दिये में लिखे।

रतनमाला (बगहाँ) के श्री चंद्रशेखरधर मिसिर जी भारतेन्दु के मित्र मंडली में रहनी। हिंदी में आशु कविता खातिर उहाँ के नाँव लियाला। हिंदी साहित्य के संस्कृत वृत्त में कुछ पद पहिले पहल मिसिरे जी के रहे। बेतिया राज का जमाना में ध्रुपद, धमार अउरी ख्याल गायन के चंपारण प्रमुख केंद्र रहे। खुद महाराजा हरेंद्र किशोर के लिखल एगो रचना ध्रुपद ताल तेवरा में मिलेला –

पावस रितु पाये दादुर उनै–उनै घनघोर गरजत
बून्द झरी लावत दामिनी कौंधत रैन अँधेरी सूझत ना कर है।
दादुर मोर शोर करत छत्रिक मिली झंकार
पवन झझकत झकझोरत तरु तोरहत पपिहा पिक टेरत वर है।

मूर्ति कला में चम्पारण के अलग शैली एगो अलगे विविधता लेले आजो खडा बा। सरभंग संप्रदाय से करता राम, धवल राम, भिखम राम, टेकन राम, राम स्वरूप राम, सदानंद, परम्पत बाबा, गौरीदत, मनसा राम, हरलाल बाबा, बालखंडी, भिनक राम, सीतलराम, योगेश्वराचार्य लेके बौद्ध धरम के ब्रजयान चाहे सहजयान से निकलल चौरासी सिद्ध अउरी नाथपंथी लोगन के नाँव एने आदर से लिहल जाला। भक्ति काल में छतरबाबा, केसोदास, बाबा रामजीवन दास, महाराजा आनंद किशोर, महाराजा नवल किशोर सिंह, अमृत नाथ झा, रामदत मिश्र राम, भुवन झा, शम्भू नाथ त्रिवेदी, तपसी तिवारी, राम प्रसाद सिंह, बाबूलाल त्रिपाठी, कमलाधर मिसिर, लक्ष्मी कान्त चौधरी लोग प्रसिद्ध बाटे। प्रबन्ध काव्य अउरी फुटकल काव्य चाहे खातिर गणेश प्रसाद निर्भीक, शक्ति नाथ झा, हरिहर गिरी, चन्द्रशेखर धर मिसिर, अयोध्या प्रसाद खत्री, शिव शरण पाठक आ अउरी लगभग 500 नाम बा केतना। शोभाकांत झा के लिखल 'हिंदी साहित्य को चंपारण की देन' के मुताबिक सिद्ध कवि चम्पकपा के मनाल जा सकत बा। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी आ प्रो. कामेश्वर शर्मा इनका के चंपारण के मनले बाड़ें। समकालीन साहित्य लेखन में ए क्षेत्र के गोपाल सिंह नेपाली, बृज बिहारी प्रसाद 'चूर', विंध्याचल प्रसाद गुप्त, ब्रजकिशोर नारायण, विमल राजस्थानी, शिव प्रसाद किरण, रमेश चन्द्र झा, विष्णुकान्त पाण्डेय, डॉ. अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा 'अखिलेश' राजेन्द्र 'अनल', दिनेश भ्रमर, डॉ. बलराम मिश्र, रविकेश मिश्र, डॉ. चतुर्भुज मिश्र, डॉ. उमाशंकर सिंह, हरीन्द्र 'हिमकर', डॉ. सतीश कुमार राय 'अंजान', गुलरेज़ शाहज़ाद, प्रसाद रत्नेश्वर, डॉ. रेवती रमन, मधुबाला सिन्हा, एंथोनी दीपक, महेंद्र प्रसाद सिंह, महेश्वर प्रसाद सिंह (कवि जी), अशोक कुमार 'राकेश', धनुषधारी कुशवाहा, योगेन्द्र नाथ शर्मा, ओमप्रकाश पंडित, अश्विनी कुमार 'आशु', अश्विनी कुमार 'प्रदीप', डॉ. जगदीश 'विकल', राम द्विवेदी 'अलमस्त', दिल मेहशवी, यमुना प्रसाद 'झुनझुनवाला', पंडित गणेश चौबे सब के नाम लेहल जाला।

पर्यटन स्थल :

पश्चिमी चम्पारण में बाल्मीकि नगर, त्रिवेणी के घाट बागहा में, बावनगढ़ी, भिखनाठोरी, सुमेश्वर, गवनाहा के वृन्दावन, गांधी जी के भीतहरवा आश्रम, नंदनगढ़,

www.bhojpurisahityangan.com

रामपुरवा के अशोक स्तम्भ आ सरेया के सरैया मन (सरोवर) देखे योग्य मनभावन बाटे।

पुरबी चंपारण के बात कइल जाव त केसरिया के बौद्ध स्तूप, लौरिया, नन्दनगढ़, गाँधी स्मारक (मोतिहारी), जॉर्ज ऑरवेल स्मारक, विश्व कबीर शांति स्तंभ, बेलवातिया, सोमेश्वर महादेव मंदिर अरेराज अउरी सीताकुंड पीपरा लगे बा आ ई सब भी मनोरम स्थान बा। एक बेर जे चम्पारन आवेला ओकर मन चंपारण में रम जाला। ओकर मन करेला की हम चम्पारण के ही बन के रह जाई।

आज के चम्पारण :

1971 में चंपारण पुरबी आ पश्चिमी में बाट देहल गइल। जिला बटाइल बाकिर दिल ना त बटाइल बा ना कबो बाटाई। आज के चम्पारण भारत के फलक पर हर क्षेत्र में आपन मजबूत स्थिति दर्ज करवले बा। राजनितिक इच्छा शक्ति के उदासीनता के कारण आजो चम्पारण पलायन के दरद से कुहकत बा। एकरा बादो हिम्मत नइखे हरले।

शिक्षा होखे, बिज्ञान होखे, व्यपार होखे, पत्रकारिता होखे, सिनेमा होखे चाहे बात प्रोद्योगिकी के होत होखे चम्पारण के बेटा बेटी हर क्षेत्र में आपन सफलता के झंडा हौसला के संगे बुलंद कइले बाड़ें। इंजीनियरिंग कॉलेज होखे चाहे बात मेडिकल कॉलेज के होखे चंपारण में शिक्षा के अवसर बेहतर मिल रहल बा।

पिछला दू दिन दशक में केंद्र चाहे राज्य सरकार में चम्पारण के मजबूत नेता ना हो सकला से विकास के रफ्तार तनी धीमा हो गइल बा। बाकिर ना त उम्मीद मद्धम पड़ल बा नाही अरमान। अपना प्राचीनता आ गौरवशाली भविष्य पर हर चम्पारनी के गर्व आ गौरव के अनुभूति होला आ एही मजबूत बिरासत से आगे के मार्ग प्रसस्त करे योग राह भी लउकेला।

सन्दर्भ :

- चम्पारण में गांधी : डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
- चम्पारण साहित्य और साहित्यकार : रमेश चन्द्र झा
- चंपारण की साहित्य साधना : रमेश चन्द्र झा
- हिंदी साहित्य और बिहार : आचार्य शिवपूजन सहाय
- हिंदी साहित्य को चम्पारण की देन : शोभाकांत झा
- बेतिया राज्य और चम्पारण के किसान : डॉ. बादशाह चौबे

✧ ✧ ✧

भोजपुरी क्षेत्र के हिन्दी सेवी साहित्यकार जब हिन्दी का भीड़भाड़ में भुलाये लागेलन त भोजपुरी का ऊँच चबूतरा पर खड़ा होके अपना ऊँचाई के एहसास करेलन आ भोजपुरी सेवी साहित्यकारन करावेलन। ओह लोग का साहित्य के 'रास' (ढ़ेरी) तउला के बेर्ही–खोंप भराला आ ओमें से 'अङ्ऊँ' निकाल के भोजपुरी के आँचर के खूँट में बन्हा जाला। एह हालत में भोजपुरी आ ओकरा साहित्य के सम्यक्–विकास कइसे होई?

– श्री सूर्य देव पाठक 'पराग'
अध्यक्ष, अ भा भो सा स–चउबीसवाँ अधिवेशन
26–27 नवम्बर, 2011 : जमशेदपुर (झारखंड)

भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल करावल जरूरी बा। ई खाली भाषा खातिर ना बलुक भोजपुरी क्षेत्र के विकास भी जरूरी बा। बाकिर मंच पर बोल देला से काम ना होई। एह खातिर जनमत तइयार क के जनांदोलन के लहर पैदा करे के पड़ी।

– प्रो. ब्रजकिशोर
अध्यक्ष, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

www.bhojpurisahityangan.com

मूल्यांकन

हँसी आ व्यंग्य के कवि बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव

- लव शर्मा 'प्रशांत'

बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव जी के हम कवि–सम्मेलन में एगो अलगे अंदाज में कविता पढ़त देखल करीं लेकिन उनका से हमर परिचय ना रहे। जब हँसी आ व्यंग्य से भरल कविता आपन विशेष अदा में उहाँ का पढ़ीं त सुननिहार तालियन के गड़गड़ाहट से पूरा हॉल के गूँजा देल करस। उहाँ का आशुकवि रहनी आ मंचे पर तुरंते दमगर कविता रचके सुना दे रहनी। एक बेर मोतिहारी के सुभाष पार्क में कवि–सम्मेलन भइल रहे। उहाँका एह में तुरंते क्रांति विषय पर कविता रच के सुना देहनी। एह सम्मेलन के अध्यक्षता विश्वनाथ प्रसाद एडवोकेट जी कइले रहनी। बाद में सन् 1962 ई0 में हमार गुरू राजेश्वर प्रसाद गुप्ताजी उनका से हमार परिचय करवलें। उहाँ का मार पीठ थपथपाके आशीर्वाद देवे में तनिकों देरी ना कइनी।

एकरा बाद हम कबो–कबो उनका से भेंट करे भारतेंदु प्रेस जाए लगनी जवना के उहाँका शुरू कइले रहनी। उहाँका हर दफे समय निकाल के हमार रचनन के देखनी आ ओकरा में जरूरी सुधारों कइनी। उहाँका अपना संपादन में निकलेवाला हिन्दी साप्ताहिक 'भारतेंदु' में हमार थोर–बहुत हिन्दी रचनन के प्रकाशितो कइनी। ओह समय ले हमरा लिखत कुछे बरिस भइल रहे तभहुँओ उहाँका हमारा के ई अनुभव ले जा होखे देहनी कि उनका सामने हमर अस्तित्व बौना बा। बलुक उहाँका हमरा के एतना स्नेह आ सहयोग देहनी कि हम अपना के उनकर शिष्य मंडली के सभसे अगिला सदस्य समझे लगनी।

बलदेव बाबू के जन्म पूर्वी चंपारन जिला के गोविन्दगंज थाना के नगदाहाँ गाँव में सन् 1906 इस्वी में भइल रहे। अपने के पिता के नाम मुंशी संगमलाल रहे जिनकर अपने दोसरका संतान रहनी। अपने के प्राथमिक शिक्षा गाँवे के स्कूल में भइल। एकरा बाद आगे के पढ़ाई पूरा करे वास्ते अपने सन् 1922 ई. में जिला मुख्यालय मोतिहारी चल अइनी। शिक्षा पूरा कके उहाँका मोतिहारी के गौरी शंकर मध्य विद्यालय में हिन्दी शिक्षक के नौकरी करे लगनी। ओही स्कूल में पढ़ावे के समय उनका नाम के जगहा मास्टर साहेब के विशेषन लाग गइल जवन उनकरा जिनगी भर लागल रहल। बरिसन शिक्षक के नौकरी कइला के बाद उहाँका शिक्षक के नौकरी कवनो कारन से छोड़ देहनी आ मोतिहारी के श्यामलाल प्रेस में नौकरी पकड़ लेहनी। साहित्यकार–पत्रकार सतीश भास्कर स्थानीय हिन्दी साप्ताहिक 'दफीना' के 3 सितम्बर सन् 1985 के अंक में लिखतानी–

'प्रेस के नोकरी के दरमियान उहाँका प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियन का वास्ते इतिहास भूगोल आ सामाजिक शिक्षा के बहुते किताब लिखनी लेकिन प्रकाशक के चतुराई के कारन ओह किताबन पर लेखक के रूप में बलदेव बाबू के नाम के बदला प्रकाशक के नाम छपल। एह किताबन में से इतिहास के एगो पातर किताब आजो हमरा लगे सुरक्षित बा। एह किताब में चंपारण से संबंधि त इतिहास के नीमन वर्णन कइल गइल बा। एह घटना के बाद उहाँका प्रेस के नौकरी से किनारा क लेहनी आ बी.पी. ब्रदर्स के नाम से किताबन का साथ संपत्ति के बँटवारा करे के परल। लेकिन उहाँका तनिको ना घबड़इनी, कहीं–कहीं से रोपेआ के जोगाड़ कके उहाँका भारतेंदु प्रेस के खड़ा कइनी। कुछे समय में भारतेंदु प्रेस चल निकलल आ बलदेव बाबू के आर्थिक स्थिति मजबूत होत गइल।

बलदेव बाबू व्यंग्य आ हास्य के बहुत बड़ कवि रहनी। उहाँका भोजपुरी आ हिन्दी दुनू भषन में समान रूप से कविता लिखल करीं। हिन्दी आ भोजपुरी दुनू में उनकर लिखल कविता सुनेवालन के दिल के छू लेत रहली स। मूल रूप से ठेठ देहात के पैदाइश भइला के कारण हिन्दी के बनिस्पत भोजपुरी भाषा में लिखल उनकर कविता दूर–दूर देहात ले आम–जनता के बीच आपन पैठ बनावे में कामयाब रहली स। उनकर भोजपुरी कवितन के सफलता के दोसर कारन इहो रहे कि उनकर महतारी भाषा भोजपुरी रहे। **'चम्पारण के गीत'** नाम के उनकर प्रकाशित पुस्तिका में उनकर भोजपुरी गीत– 'सुनीं सुनाईं कथा आज चंपारन के गाँव के' भाव, भाषा, शिल्प आ कथ्य में बेजोड़ बा। उहाँका हिन्दी में करारा चोट करेवाली व्यंग्य आ भोजपुरी में मीठ आ प्राणवान गीतन के रचना

www.bhojpurisahityangan.com

कइनी। उनकर भोजपुरी गीत गेय त होते रहली स चित्रण आ कथ्यो में बेजोड़ रहले स। 'डोम' मथेला भोजपुरी कविता त एतना ज्यादे जीवंत बा कि जवना के सुन के भारत क भूतपूर्व उप–प्रधानमंत्री बाबू जगजीवन राम जी के आँखि लोर से डबडबा गइल रहली स। 'डोम' मथेला कविता में स्व. बलदेच बाबू डोम के चित्रण एह तरह कइले बानी–

'गँवई का बाहर बगइचा का पास में
डोमन के घर ना खोभार बाटे बाँस में
जिनगी भर जनलस ना कुँआ के पानी
तेहू पर कहेला हिनुए नू बानी
सुअर के साथी ई सूअरो से बदतर
कुकुरो ना करिहें स एकनी के परतर
धोबी के धोअल ई कपड़ा ना जाने
बाते सफाई के मन में ना आने!
बाबू का बेटी का सादी का बेरा
भोरे से दुअरा लगवले स ई डेरा
धइलस ई दउरा में पत्तल बिटोर के
कउआ आ कुकुर से छीन के आ छोर के
अठवरन ई जूठे पर कइलस गुजारा
कफन के कपड़ा बा एकर सहारा
मालूम ना एकनी का कइसे सहाला
गरमी के गरमी आ जाड़ा के पाला
जुग–जुग के मारल सतावल धरम के
रोएला भकुहा ई अपना करम के
एकेगो मड़ई में परिवार भर के
सूतेला एके में गोड़–मुड़ कर के
कबहीं ना घर ई बनवले स फरके
गँवई के हो डोम चाहे शहर के
पीएला गड़हा ओ गुड़ही के पानी
मइले अँगवछा में सतुआ ई सानी
दोसरा के मइला ई फेंकेला पागल
मड़ई में एकरा गलीजे बा लागल
कहियो ना अभिमान जीवन में जागल
कहियो ना मनसा से भय–भूत भागल
बाबू के दुअरा बहारेला रोजो
नइखे ई मन में कि अपना के खोजो
कहिया ले सुतबे, खड़ा तनि हो जो
गइल पंच आगे दउर तेहूँ जो जो!
डगरा में रच दी कमल–फूल पत्ती
बारी ना घर में कबो तेल–बत्ती
सिंघा बजा के जगत के जगवलस
भय–भूत भारत का मन से भगवलस।
अपना के अइसे ई कइसे बनवलस
दुनिया बढ़ल ई कदम ना बढ़वलस
मुँह एकर कत्ता से कादो चिरल बा
उलटा विधाता बा कइसन फिरल बा
होके कलाकार बेबस घिरल बा
गड़हा गरीबी में गच से गिरल बा
मड़ई में एकरा अमावस रहेला
आन्हर अन्हेरा के कइसे सहेला!
कवन ह, कहाँ बा, कहाँ ले ई जाई?
बुद्धू, बहादूर के, के ई बुक्ताई?
जनबे ना कइलस पढ़ाई–लिखाई
के शंख फूँकी आ कहिया जगाई?
रे छोड़ रउरो कहइहें स कहिया,
कहिया कहइहें स बाबू ओ भइया!

बलदेव बाबू के प्रकाशित पुस्तक वृक्ष रक्षा सम्मेलन (हिन्दी–भोजपुरी संगीत रूपक) के आखिरी भोजपुरी गीत के एगो कड़ी नीचा देहल जा रहल बा जवना में उहाँका गाँव के परिवेश के बहुते सुन्नर चित्रण कइले बानी–

'लमहर शहरिया के ऊँची अटरिया से डर लागे
मोरी टुटही मड़इया सुघर लागे।'

एह गीत पर युवा महोत्सव में बलदेव बाबू के राष्ट्रपति पुरस्तकार मिलल रहे।

बलदेव बाबू चंपारण के ऐतिहासिक आ भौगोलिक जगहन के चित्रण आपन प्रकाशित पुस्तिका 'चंपारण के गीत' में बहुते सुन्नर ढंग से कइले बानी जवना के एगो बानगी नीचा देहल जा रहल बा–

तीरथ इहँवे बा तिरवनी,
भइल गाह–गजके सगराम।
प्रभुता थाक गइल जब आपन,
लिहलन गज गोबिन के नाम।
खुदे गोबिन छोड़वलन बंधन,
धा के गज का पाँव के।

www.bhojpurisahityangan.com

सुनीं सुनाईं कथा आज हम,
चंपारण के गाँव के।

बलदेव बाबू भोजपुरी भाषा के जवन सेवा अपना जिनगी में कइनी ओकरा ला सभे भोजपुरी भाषी आ भोजपुरी प्रदेश हमेशा उनकर कर्जदार रही। बलदेव बाबू आपन कठिन आर्थिक परिस्थितियों में भोजपुरी भाषा में जेतना दमगर रचना कइले बानी, ऊ दोसर कवनो कवि से संभव ना रहे। बिहार विश्व विश्वविद्यालय के तरफ से प्रकाशित भोजपुरी पद संग्रहो में बलदेव बाबू के गीत शामिल बा। आज बलदेव बाबू के लिखल गीत भोजपुरी लोकगीत के रूप ले चुकल बाड़े स जवन हर भोजपुरी भाषियन के कंठ पर बा। बलदेव बाबू भोजपुरी भाषा में कुछ खुदरो व्यंग्य रचना कइले बानी जवना में 'दुष्ट–दलन' प्रसिद्ध बा। एकर एगो कड़ी नीचे देहल जा रहल बा–

हमरे जामल बउवा बोधनाथ
अब बन गइलें शोधनाथ

बलदेव बाबू भोजपुरी के अलावा हिन्दी में भी सयकड़न कविता लिखनी जवन साहित्यिक दृष्टिकोण से बहुत दमगर मानल गइल बा। हिन्दी भाषा में उहाँका मुख्य रूप से हास्य आ व्यंग्य के कवितन के रचना कइनी। नीचा उनकर लिखल अइसने एगो हास्य–व्यंग्य से भरल कविता देहल जा रहल बा–

हँसने और हँसाने वाली मेरी कविता सो जा !
अब तक तू होली थी, होली अब मर्सिया हो जा!
मत कूको ऐ काव्य कोकिले कवि–कानन में,
जाकर किसी करील कुंज में कौवा हो जा !

बलदेव बाबू आपन हास्य आ व्यंग्य से भरल कवितन के माध्यम से हमेशे घूसखोरन आ समाज–विरोधी लोगन पर करारा चोट कइलें। अइसन कविता सुननिहार के हँसे ला त मजबूर करेला साथे–साथ भ्रष्टाचार पर तीखा चोटो करेला। अइसने उनकर एगो कविता नीचना देहल जा रहलि बा–

सुनकर गया कचहरी कल वे मैदा बाँट रहे हैं !
हिन्दी भी जो नहीं जानते अरबी छाँट रहे हैं !
कल तब जो पूछा करते थे कागज कैसे काटें?
बड़े मजे से देखा उनको चाँदी काट रहे हैं।

एक घड़ी साहित्य में व्यंग्य विधा के नाम पर कुछ लोग अइसन शब्दन के प्रयोग कर रहल बाड़न जवना के साहित्य से कुछो लेना–देना नइखे। बलदेव बाबू कबो हँसी पैदा करेला अइसन सस्ता शब्दन के प्रयोग ना कइनी। इहे कारन बा कि उनकर व्यंग्यवाली रचना स व्यंग्य विधा के बेशकीमती धरोहर आज ले बनल बाड़ी स। नीचे हिन्दी में उनकर लिखल एगो अवरो व्यंग्य रचना देखीं–

मेरी दूकान पर आ जाओ, भगवान तुम्हें दे दूँगा।
तप–त्याग नहीं करना होगा, वरदान तुम्हें दे दूँगा।।
सस्ता, महँगा, घटिया, बढ़िया हर मेल यहाँ मिलता है।
नकदी, उधार, पचा, गिरवी, हर मेल यहाँ मिलता है।।
आने आने, दो दो आने, जो जी चाहे तुम ले लो।
भगवान खिलौना बना हुआ है, शाम–सबेरे खेलो।।

मोतिहारी नगर में होखेवाला कवनो सांस्कृतिक कार्यक्रम आ कवि सम्मेलन उनका बिना अधूरे मानल जात रहे। अइसन हरेक कार्यक्रम में उहाँका जरूरे भाग लेत रहनी। 15 अगस्त आ 26 जनवरी के कवि–सम्मेलन के त उहें का आयोजक बनत रहनी। हमरा नीमन तरह इयाद बा, 31 दिसंबर सन् 1963 ई. के दिन फूलेना प्रसाद सारंगपुरी जी के साथ मिल के उहाँका के.बी. सहाय के जयंती पर एगो बड़का कवि–सम्मेलन के आयोजन कइले रहनी जवना में हिन्दी आ भोजपुरी भाषा के बहुते नामी कवियन के भागीदारी रहे।

बलदेव बाबू कट्टर कांग्रेसी रहनी आ अपना जिनगी भर कांग्रेस पार्टी से जुड़ल रहनी। आजादी के लड़इयों में उहाँका बढ़–चढ़ के हिस्सा लेले रहनी पार्टियों के भीतर उनका के जानल–मानल जात रहे। उनकर साथियन में बिहार के पहिलका मुख्य मंत्री डॉ. श्री कृष्ण सिंह, सांसद कमलनाथ तिवारी, नागेश्वर दत्त पाठक, चन्द्रिका पाण्डेय आ अइसने बहुते नामी नेता लोग रहे।

अचानक एक दिन लकवा रोग के हमला उनका पर भइल आ उहाँका बिछौना पकड़ लेहनी। दू दिन ले बहुते तकलीफ सहत 26 अगस्त सन् 1985 ई. के रात दू बज के बीस मिनट पर उहाँका हमनी के हमेशा ला छोड़ के विदा हो गइनी। ओह समय उहाँके उमिर 80 बरिस रहे। उनकर स्वर्गवास के बाद शहर के बहुते जगहन पर शोक–सभा स के आयोजन भइल जवना के अध्यक्षता विश्वनाथ प्रसाद एडवोकेट, रामेश्वर दत्त, रामदेव द्विवेदी

www.bhojpurisahityangan.com

'अलमस्त', 'अंगार' सप्ताहिक के संपादक कुमार कमला सिंह वगैरह कइनी। पूरा मोतिहारी शहरे बलदेव बाबू के स्वर्गवास के खबर पा के अपार शोक में डूब गइल रहे।

बलदेव बाबू ग्रामीण परिवेश आ आम जनता के कवि रहनी। मोतिहारी नगर में अपना जिनगी के बहुते कीमती बरिस बितवला आ नगर के निवासियन के अपार आदर, स्नेह आ प्यार पवला का बावजूद ग्रामीण परिवेश के ई कवि आपन जन्मभूमि ग्राम नगदाहाँ के कबहूँ ना भूलाइल रहे। एही कारन उनकर आखिरी इच्छा के अनुसार उनकर अग्नि संस्कार ग्राम नगदाहाँ में कइल गइल। नामी उपन्यासकार आ पत्रकार सुरेन्द्र कुमार 'भारतेंदु' साप्ताहिक में लिखले रहनी – 'हिन्दी–भोजपुरी साहित्य की एक जलती मशाल एक बारगी बुझ गयी।'

दुःख के बात त ई बा कि जेकर हिन्दी आ भोजपुरी कविता दशकन ले आम जनता के उद्वेलित कइलस ओही बलदेव बाबू के कुल चार गो छोट आकार के पुस्तक प्रकाशित बा जवना के सूची नीचा देहल जा रहल बा–

1. 'चंपारण के गीत' (भोजपुरी भाषा)
2. 'वतन का तराना' (भोजपुरी–हिन्दी भाषा) प्र. काल 1962
3. 'वृक्ष रक्षा सम्मेलन' (भोजपुरी–हिन्दी संगीत रूपक) प्र. कालः 1964।
4. 'चन्द्रिका पाण्डेयः व्यक्ति और व्यक्त्वि' (हिन्दी)

एकरा अलावें उनकर लिखल दूगो किताब 'हमार गाँव' (भोजपुरी) आ 'दुष्ट–दलन' (हिन्दी–भोजपुरी) अभई ले अप्रकाशित बा।

रमेशचंद्र झा जी बलदेव बाबू पर एगो पुस्तक 'एक कवि–सव. बलदेव प्रसाद श्रीवास्तवः जीवन और काव्य लिखले रहनी जवन अभई ले प्रकाशन के रास्ता बड़ बेसब्री के साथ जोह रहल बा। एकर पाण्डुलिपि स्वर्गीय बलदेव बाबू के पुत्र सुधीन्द्र कुमार श्रीवास्तव का लगे पड़ल बा।

✧ ✧ ✧

सर्वभाषा ट्रस्ट से प्रकाशित भोजपुरी किताब

सर्वभाषा ट्रस्ट
नई दिल्ली

8178695606
sbtpublication@gmail.com
www.sarvbhashatrust.com

www.bhojpurisahityangan.com

श्याम बिहारी तिवारी 'देहाती'

- (स्वर्गीय) हरिश्चन्द्र साहित्यालंकार

भोजपुरी साहित्य के समृद्ध करे में चंपारन के जवन साहित्यकार लोगन के योगदान रहल बा ओह में देहाती जी के प्रमुख स्थान बा। उनकर मूल नाँव त श्याम बिहारी तिवारी रहे लेकिन साहित्यिक क्षेत्र में उहाँ का देहाती नाँव से सुविख्यात रहीं। उनुकर वेश–भूषा आ रहन–सहन भी अइसने रहे, जेकरा के देखला से उनुकर 'देहाती' नाँव उपयुक्ते जँचत रहे।

'देहाती' जी के जनम पश्चिमी चंपारन–जिला के नवतन–प्रखंड के पिपराही गाँव में, सन् 1913 ई0 में, भइल रहे। उनुकर पिताजी के नाँव शिवधारी तिवारी रहे। गाँव का पाठशाला में शिक्षा पवला का बाद उहाँ का बेतिय आ गइनीं आ ओतही राज स्कूल से मैट्रिक के परीक्षा पास कइनीं। ओकरा बाद उहाँ का सन् 1932 ई. में अयोध्या का विद्वत्समिति से हिन्दी–विशारद आ सन् 1934 ई0 में ओहि समिति से हिन्दी–शास्त्री भइनीं। सन् 1937 ई0 में उहाँ का सी0टी0 के परीक्षा में उत्तीर्ण भइनीं।

'देहाती' जी के जीवन के अधिकांश भाग शिक्षण–संस्थन आ हिन्दी–भोजपुरी के प्रसार–प्रचार में बीतल। उनुकर सक्रिय साहित्यिकता के इहे प्रमाण बा कि उहाँ का लगातार कय बरिस ले बेतिया के एगो विशिष्ट संस्था 'कविवासर', जेकर स्थापना हिन्दी गीतन के राजकुमार गोपाल सिंह 'नेपाली' कइले रहनीं, के सफल संचालन कइनीं आ सन् 1944 ई0 में ओकरा तत्वावधान में प्रकाशित 'कविता' नाँव के साहित्य–संकलन के सुसम्पादन कइनीं। एतने ना, सन् 1943 ई0 उहाँ का बेतिया से सटले 'बँसवरिया' में अपने निवास–स्थान पर एगो मुद्रणालय (साहित्य–सागर–प्रेम) के नेव डलनीं आ ओतही से पहली जून के एगो साप्ताहिक पत्र 'सागर' के प्रकाश कइनीं जे कुछे दिन में अर्थाभाव के कारण बंद हो गइल। शुरूए से उनुकर संपर्क चंपारन–जिला हिन्दी–साहित्य–सम्मेलन से रहल। कुछ दिन ले त उहाँ का ओकर कार्यालय–मंत्री भी रहीं।

'देहाती' जी सुकवि आ अद्वितीय साहित्य स्रष्टा रहनीं। उहाँ का भोजपुरी आ खड़ी बोल दूनू भाषा में सुललित आ सरस कविता करत रहनी। पत्र–पत्रिकन में प्रकाशित फुटकर रचनन का अतिरिक्त उनुकर सन् 1947 ई. में चालीस पृष्ठन के एकमात्र भोजपुरी कविता संग्रह 'देहाती दुलकी' (पहली दुलकी) पुस्तकाकार प्रकाशित भइल। भोजपुरी साहित्य के इतिहास के निर्माता लोग 'देहाती दुलकी' के तीन भाग में प्रकाशन के बात कहले बाड़े जवन भ्रमोत्पादक बा। लेकिन ई बात सही बा कि एकर एके भाग छपल जवना के अन्तिम पृष्ठ पर लिखल बा– 'शीघ्र प्रकाशित' होगी देहाती दुलकी की 2री और 3री दुलकी।' संभव बा कि एही से अइसन भरम पैदा भइल होखे। भोजपुरी के जीवनदानी साहित्यकार पंडित गणेश चौबे जी 'देहाती' जी के हस्तलिपि में 'गगरी' नाँव से उनुकर प्रायः सब कवितन के संग्रह कइले रहलीं जवना के देखला से पता चलेला कि 'देहाती' जी तीन भाग में अपना चउवन कवितन के छपवावे लागि संपादन कइले रहनीं जवना में से बाद में चउदहगो कविता चुनके पहिली दुलकी प्रकाशित करववनीं आ शेष कविता उनुका रोगग्रस्त हो गइला से ना छप सकल। चौबेजी का संग्रह में 'देहाती' जी के छव दर्जन से अधिके कविता संगृहीत बा। 'देहाती' जी के सुपुत्र रामसागर तिवारी जी हमरा के सूचना दिहले रहले कि 'देहाती' जी गीता के भोजपुरी में अनुवाद कइले रहल जेकर भूमिका रामवृक्ष बेनीपुरी जी लिखले रहले।

'देहाती' जी के कविता–पाठ करे के ढंग निराला रहे। जइसही उहाँ का मंच पर खड़ा होखीं, श्रोतालोग उनुका के देख के हँसे लोग आ जब कविता के पहिला कड़ी सुने त लोट–पोट हो जात रहे। बाकिर, उहाँ का जब ओकरा के दोहरावत रहीं, त लोग कविता के गंभीरता पर दाँत का नीचे अंगुरी दबावे लागे। इहे वजह रहे कि बिहार में आयोजित होखे वाला सब कवि–सम्मेलन में उनुकर उपस्थिति अनिवार्य समझल जात रहे।

'देहाती' जी के निधन सन् 1950 ई0 में 5 अक्टूबर के बेतिया में अवस्थित उनुका निवास–स्थान पर हो गइल। उनुका गोलोकवासी भइला से हिन्दी–साहित्य मुख्यतः भोजपुरी साहित्य–गगन के एगो देदीप्यमान नक्षत्र विलुप्त हो गइल।

अबरले हमनिका 'देहाती' जी के जीवन के महत्त्वपूर्ण कार्य–कलापन के अवलोकन कइनीं, अब संक्षेप में उनुकर काव्य–सोष्ठव पर भी विचार कर लिहीं।

www.bhojpurisahityangan.com

'देहाती' जी के अधिकांश कविता ग्रामीण विषयन पर लिखल गइल बा जवना में श्रृंगार आ हास्य–व्यंग्य के बाहुल्य बा। उहाँ का श्रृंगार–रस प्रधान कवितन में न कहीं मर्यादा के उल्लंघन भइल बा आ न कहीं अश्लीलता के समावेश भइल बा। संयोग–श्रृंगार के ई चित्रण केतना मनभावन बा–

ननद– द्वारा व्यंग्य कइला पर भउजाई आपन विरह–वेदना एह तरह से प्रकट करत बा–

'सुन ननदी! अब तें का बनबे, बिरहा आग लागल का जनबे?
केतना दूर इहाँ से फनबे, उनका से बा लागल डोरिया।
सीतलपाटी देह तपावत, पछुआ कहँवा अगिन बुझावत?
चंदा अउरी आग लगावत, तकते बीतल रात दुआरिया।
आज चइत के चढ़ल अँजोरिया।।'

संयोग–श्रृंगार के मादकता पर भी जरा ध्यान दिहीं

हम लिलार में टिकुली साहब, रुनझुन नाच बजाइब पायल।
मारब नयन–बान दोसरा के, साजन तू मत होखिह घायल।
मेघ गरजिह मत तनिको तम, बरिसऽ जइसन तहरा आवे।
नाच गुजरिय कजरी गावे।।

'देहाती' जी के हास्य–व्यंग्य–मिश्रित कविता बड़ा गंभीर चुभत आ मुहावरेदार होखत रहे। उनुकर कहनात रहे कि सावन के मन–भावन महीना में जब मस्ती से भरल पुरवैया बहेला आ रिमझिम करत मेघ बरसेला, ओह समय कवन बेवकूफ आदमी बा जे आपन प्रियतमा के ससुरार छोड़ी?

सावन मास बहे पुरुबा, जनी केहू के छूटे मिलावल जोड़ी
का कहीं दोसद के बा इहाँ, जब जे ई सुतार में बाँगर फोड़ी
जाइब आज जरूर मुनेसर, भाई के माँग के हीछल छोड़ी
बोंच हई हमहूँ त पुरान, के ससुरार में मेहर छोड़ी'

श्रृंगार आ हास्य–रसन के वर्णन का अतिरिक्त 'देहाती' जी के कवितन में सामाजिक आ सामयिक विषयन के भी बड़ा सजीव चित्रण मिलेला। किसान लोग भूखा रहके बड़ा उम्मीद के साथे खेती कइल बाकिर, अनावृष्टि उनुका सब आशा पर पानी फेर दिहल। आखिर पछतावे के सिवा ऊ लोग करो त का?

'पेट काट के खेत कमइनीं
दाना बोअनी, भूसा खइनीं
माँटी में मिल माँटी भइनीं
जर गइल जाजात
सूख गइल बरसात'

गरीबी के रूप के चित्रण भी केतना स्वाभाविक बा–

'गरमी त भरसक कटि जाला
जाड़ हमनिएँ पर बउराला
देह उघारे सिसकत पाला
कवन कहीं हम बात
सूख गइल बरसात'

भारतीय परिवारन के विद्वेषपूर्ण वातावरण में भाई–भाई का बीच उठत लाठी के केतना व्यंग्यपूर्ण भाषा में उहाँ का चित्रण कइले बानीं, एह पर भी विचार करे लायक बा–

एक घर के रहवइया में
पछुआ झमके पुरवइया में
बादर गरजत बरसात

'देहाती' जी प्रकृति के भी सुन्दर चितेरा रहले। उहाँ का मानव जीवन का साथे–साथे प्रकृति के भी सांगोपांग आ सुकुमार वर्णन कइले बानी। नीचे के कविता में वसंत–ऋतु के वर्णन केतना प्रभावशाली बा–

उठल मास मधु आइल
बाग–बाग में मोज लरकल
जरल घास हरिआइल
मन मधु आइल बारे वन–वन
मोहकता मोजर भइल बिछावन
दिगमिग–दिगमिग नयन जुड़ावल
खेत–खेत सरसों पिअराइल
उठल मास मधु आइल

'देहाती' जी रहस्यवादी कविता भी कइले रहले। कबीर आदि रहस्यवादी कवियन का लेखा उहाँ का भी आत्मा आ परमात्मा का बीच कोई अंतर ना मानत रहीं। एकरा के प्रमाणित करे लागि परमात्मा के प्रियतम आ जीवन के प्रियतमा के प्रतीक मान के उहाँ का कहनीं–

'बनब टेम दिया के सइया
हम बन जाइब कीट पतंग
बनब जोत किरिन के साजन
हम बन जाइब सातो रंग
जब मस्ती में गइब बालम

www.bhojpurisahityangan.com

हम बसिया के तान बनब
तू हँस–हँस के जब–जब अइब'
हम सुन्दर मुस्कान बनब'

देहाती जी उर्दू–बहर में भी भोजपुरी में कविता करत रहनी। एकर प्रेरणा उनुका मोतिहारी–निवासी उर्दू के हास्य–रस के शायर स्व0 कमरूल आलम 'वहशत' से मिलल रहे। ओह समय 'वहशत' साहेब बेतिया के अनुमंडलीय कार्यालय में प्रधान लिपिक रहनीं आ बेतिया में आयोजित मुशायरा आ कवि–सम्मेलनन में सक्रिय भाग लेत रहनीं। ओही मंच पर दूनू महारथियन के अनायासे भेंट हो जात रहे जवन आगे चल के मित्रता के रूप धारण कर लिहल। एक बेर 'देहाती जी' कमरूल साहेब का सामने प्रस्ताव रखनी कि उहाँ का उनुका के उद्–बहर में कविता करे के तकनीक सीखा दिहीं। 'वहशत' साहेब ई शर्त पर तइयाद हो गइनीं कि उहो उनुका के भोजपुरी में कविता करे के वास्ते प्रशिक्षण देस। परिणाम ई भइल कि दूनू आदमी एक–दोसरा के प्रशिक्षित क दिहले। 'देहाती' जी उद्–बहर में कठो कविता कइले जवना में 'छपल बा' बड़ा प्रसिद्धि पावल। ओह कविता के कुछेक शेर पाठक का रसास्वादन वास्ते नीचे उद्धृत कइल जा रहल बा–

उनका दिमाग में त हर घड़ी अहेर छपले बा
गोलिओ कइसे मारस? ऊ नीचे ऊपर शेर छपले बा।
केहू का हुरकवला से कहीं तीतिर मिली?
उनका मन में त हर घड़ी बटेर छपले बा।
हमरा सरकार का बदलते बदल गइल कपड़ा
सुराज के मोह त उनका अनेर छपले बा।
बड़की कोठी में गइनी, बइठ गइनी भुँइएँ
गलइचा कहाँ सूझी, आँख में त नटकट–पटेर छपले बा।

ई कविता एतना प्रसिद्धि पावल कि बिहार विश्वविद्यालय भोजपुरी पद्य संग्रह के संपादक लोग एकरा के ओह संग्रह में सम्मिलित करे के लोग संवरण ना कर पावल।

'देहाती' जी खाली भोजपुरिये के कवि रहनी बलुक हिन्दी में भी कविता कइनीं जेकर कम महत्त्व नइखे। उनुकर खड़ी बोली के कविता भी गंभीर, बामानी आ हास्य–व्यंग्य से भरल–पुरल बा। रसास्वादन लागि एकाघ बानगी लिहीं–

'पागल की घोड़ी बढ़ती चल
दुनिया अंधी, तू है कानी
मंजिल दूर, बढ़ी चल रानी
नाता तोड़ टाँग से अपने पग को झार झटकती चल।'

अंत में, हम एह विनोदप्रिय आ आनन्दमूर्ति के 'पनघट' शीर्षक कविता के अविकल रूप से उद्धृत कर रहल बानी जेह से 'देहाती' जी के कल्पना के उडान आ भाषा के सफाई के दर्शन सहजे हो जाई–

'गगरी भरल खिंचाते नइखे

सास–नन्द के रह–रह ओठर मन से तनिक भुलाते नइखे।।
गगरी भरल।
पातर तिरिया धनुही भइली, छहरल केस झँपाइल अँखिया
अँगुरी सुबुक डोर बा घतियल, अब का करीं बतइबे सखिया
अधजल गगरी कइसे होइ? कवनो बात बुझाते नइखे।।
गगरी भरल।
लटकल केस केह तिरिया से कहितू त हम भीतर जइतीं
भरल गगरिया धीरे–धीरे हमहीं ऊपर खींच ले अइतीं
कान तोपाइल बा तोहरा से कुछऊ कहल सुनाते नइखे।।
गगरी भरल।
आँसू कहलस छोड़ बरौनी, भरल गगरिय हम त फोरब
निमने नया घइलिया आई, कब तक ले हम कुँआ अगोरब
अइसन अकिल कहाँ हम पाइँ, आपन अकिल समाते नइखे।।
गगरी भरल।
फूल गइल अब दुनू छतिया, गरम तिरियवा साँस चलावे
मोतियन बुन्द पसीना झलके, हैकल जुलुम जोर हलकावे
चइत चाँद ओह चन्द्रमुखी के झगड़ा अब फरिआते नइखे।।
गगरी भरल।
आखिर छूट गइल हथडोरी, डूब गइल गगरी इनरा में
आपन सब अरमान जगावल, बंद भइल अब त पिंजरा में
कइसे जाईं कहाँ लुकाई, मन आपन मनुआते नइखे।।
गगरी भरल।

'देहाती' जी एह कविता के बड़ा प्रश्रय देत रहले आ इहे कारण रहे जे प्रायः कवि–सम्मेलन मे एकरा के सुनावत रहले। सचहूँ ई उनुकर बेजोड़ रचना बा।

✧ ✧ ✧

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, मई, 1994

पुण्यश्लोक रमेशचन्द्र झा

- पाण्डेय कपिल

खबर मिल त बिश्वासे भा भइल कि सुप्रसिद्ध साहित्यकार रमेश चन्द्र झा के निधन हो गइल। कुछुए महीना भइल होई, श्री विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव से 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के प्रशंसा करत ऊ एह पत्रिका में लिखे के आश्वासन देले रहले। हमनी उनका रचना के इंतजारे करत रह गइलीं, तबले ई दुखद खबर सुने के मिलल।

रमेश जी मैट्रिक में रहले त बयालीस के आन्दोलन भइल। ऊ कूद पड़ले एह आन्दोलन में, आ एकरा में सक्रिय रूप से भाग लिहले। जेल गइले। उनका स्वतंत्रता–सेनानी के ताम्रपत्र मिलल रहे आ पेंशन मिलत रहे। चंपारन जिला बोर्ड प्रेस के मैनेजर का रूप में रमेश जी बहुत दिन काम कइले, जहाँ से ऊ 1948 में सेवानिवृत्त भइले। अस्वस्थ त ऊ काफी दिन से रहे लागल रहले, बाकिर पढ़ाई–लिखाई उनकर लगातार चलत रहल। पिछला होली का आस–पास उनकर बीमारी बढ़ गइल, जवना में सुधार ना हो सकल, आ अंततः 7अप्रैल 1994 के रात में अपना घरहीं उनकर निधन हो गइल।

स्वर्गीय रमेशचन्द्र झा के लेखकीय व्यक्तित्व बहुआयामी रहे। उपन्यास, कहानी, कविता, निबंध, संस्मरण, आ बाल–साहित्य का अलावे, साहित्यिक इतिहास आ शोध का क्षेत्र में उनका लेखनी के अवदान अप्रतिम बा। उनका लिखल प्रकाशित किताबन के संख्या पचास से ऊपर बा, जवना तेइस चौबीस गो त उपन्यासे बा। उनकर उपन्यास 'चीखती लकीरें' अपना समय में काफी चर्चिल भइल रहे। उनकर आउर प्रसिद्ध प्रकाशित किताबन में 'कुछ पत्ते कुछ फूल', 'अपना देश', 'वृद्ध बापू', 'भारत पुत्री' आदि प्रमुख बा। ऊ हिन्दी के तीन गो साप्ताहिक अखबारन के संपादनो कइले रहले।

रमेशचन्द्र झा जादे हिन्दीए में लिखले बाड़े। भोजपुरी में उनकर लेखन अपेक्षाकृत काफी कम बा। बाकिर, उनकर कुछेक हिन्दी कृतियन के जेतना महत्त्व हिन्दी खातिर बा ओकरा से जादे भोजपुरी खातिर बा। चंपारन जिला के साहित्येतिहास विषयक उनकर तीन गो किताब प्रकाशित बा– 'चम्पारण की साहित्य साधना', 'चंपारनः साहित्य और साहित्यकार' आ 'अपने और सपने।' एह तीनो किताबन में चंपारन जिला के हिन्दी आ भोजपुरी के साहित्यकारन के, ओह लोग के लिखल साहित्य के, आउर ओह क्षेत्र के साहित्यिक परंपरा आ सक्रियता के सविस्तर आकलन भइल बा। हिन्दी में लिखल उनकर ई तीनो किताब हिन्दी से जादे भोजपुरी के साहित्येतिहास खातिर महत्त्वपूर्ण आ उपयोगी सामग्री से भरल बाटे।

भोजपुरी में रमेशचन्द्र झा के लिखल गीत आ गजल अइसे कुछ कम नइखे आ कुछ कम महत्त्व के नइखे। कवि सम्मेलन का माध्यम से उनकर भोजपुरी कविता जनता के लोकप्रियता पवले बा। भोजपुरी में लिखल उनकर विशिष्ट अवदान बा, उनकर उपन्यास 'सुरमा सगुन बिचारे ना' जे धारावाहिक रूप से 'भोजपुरी कहानियाँ' में छपल रहे, आ काफी चर्चित भइल रहे। अफसोस कि पुस्तक रूप में ना त उनका भोजपुरी उपन्यासे के प्रकाशन हो सकल बा, आ ना उनका भोजपुरी कविते संग्रह के। एने उनकर ध्यान अपना भोजपुरी पुस्तकन के प्रकाशन पर गइल रहे, भोजपुरी में जमके लिखे पर गइल रहे, बाकिर एकरा के ऊ कार्यरूप ना दे पवले, तबले उनकर बोलावा आ गइल।

स्वर्गीय रमेशचन्द्र झा चम्पारण के भोजपुरी आ हिन्दी के साहित्यकारन के प्रेरणा–स्रोत रहले। उनका साथ–संघत में जाने केतने लेखक–कवि सामने अइले आ आगे बढ़ले। उनकर अभाव हिन्दी से जादे भोजपुरी के साहित्यिक जगत का, आ खास क के चंपारन के साहित्यिक लोगन का महसूस होत रही। उनका दिवंगत आत्मा के आत्मिक श्रद्धांजलि!

✧ ✧ ✧

www.bhojpurisahityangan.com

चंपारन के गान्ही : पंडित राजकुमार सुकुल

- भगवती प्रसाद द्विवेदी

महल के कंगूरा त अनसोहातो सभकरा के लोभावेला, बाकिर नेंव में दबल ईंटा के ना त केहू कीमत बूझेला, ना ओने निगाहे धउरावे के जरूरत महसूस करेला। इहां ले कि कंगूरो के एह तथ के एहसास ना होला जे नेंव के एकएगो ईंटे के बदउलत ओकर माथ गरब से उठल बा। देश के आजादी के लड़ाई में जे आपन तन–मन–धन, सउँसे जिनिगी हँसते–हँसत निछावर कऽ दिहल आ आखिरी दम ले गोरन के दमनचक्र का खिलाफ जमिके लोहा लिहल, ओकरा के आजु हमनीं के कतना जानेलीं जा! हालाँकि ओह लोगन के ई मनसो ना रहे कि लोग इयादि राखो, बाकिर हमनिओं के त किछु फरज बने के चाहीं। चंपारन के गान्हीं पंडित राजकुमार सुकुल नेंव के ओइसने ईंटा रहलन, जेकर लगातार उपेक्षे होत आइल बा। निलहा गोरन के अमानवी अनेति–अतियाचार ना खाली ऊ अपना आँखी देखलन, बलुक खुद ओकर भुक्तभोगिओ रहलन। उन्हुके पहलकदमी से गान्हीं जी आ सउँसे देश के धियान एह अमानवीयता का ओर गइल आउर तब ओह आन्दोलन के लुत्ती दुनिया–जहान में जंगल के आगी–अस फइल गइल रहे। इहे वोजह बा कि अहिंसक आंदोलन के ओह पहिल प्रेरनास्रोत के केहू 'चंपारन के गान्हीं' कहेला, केहू 'सतवरिया के संत' संबोधित करेला, त केहू 'बिहार के अख्यात गान्हीं' कहेला। उन्हुकरे भगीरथ प्रयास के परिणाम रहे कि गान्हीं जी ना सिरिफ पहिल बेर बिहार आ चंपारन के धरती पर अइलीं, बलुक उहवाँ अहिंसक सविनय अवज्ञा आंदोलन के अगुवाई कऽके शोषित किसान–मजूरन के ऐतिहासिक जीतो दियववनीं। एह दिसाईं लोकनायक जयप्रकाश नारायण के कहनाम रहे– 'स्वतंत्रता–संग्राम के इतिहास में श्री राजकुमार शुक्ल का नाम अमिट रहेगा, क्योंकि इनके द्वारा ही गांधी जी को चंपारण में निलहे गोरों के अत्याचारों की कहानी मालूम हुई और उन्होंने चंपारण पहुँचकर सत्याग्रह छेड़ने का निश्चय किया। चंपारण सत्याग्रह गांधी जी की अहिंसक लड़ाई का पहला अध्याय राजकुमार शुक्ल की प्रेरणा से शुरू हुआ।'

चंपारन में निलहा साहेबन के दईती अनेति के पराकाष्ठा। नील के खेती करे खातिर अलचार सभे छोट–बड़ किसान रैयत। गाहे–बगाहे किसिम–किसिम के कर के भरपाई के भार। इचिकियो चूँ–चपड़ कइला, मुँह खोलला भा अलचारी जाहिर कइला प कठोर सजाइ। नील के खेती ना सिरिफ ओह उपजाऊ जमीन खातिर, बलुक सउँसे मनुजतो खातिर सराप रहे। तबे नू एह भावभूँइ प मंचित नाटक 'नील दर्पण' देखते ईश्वरचंद्र विद्यासागर जी अगिया बैताल हो गइल रहलन आ निलहा गोरा बनल कलाकारे के जूता से पिटाई कइले रहलन।

आगा चलिके राजकुमार सुकुल जब सन् 1916 में 26–30 दिसंबर के आयोजित लखनऊ कांग्रेस में उहाँ के दुरदसा आ उत्पीड़न के दारुन दास्तान सुनवले रहलन,त 'शर्म–शर्म' के आवाज गूंजि उठल रहे आ पहिला बेर राष्ट्रीय मंच प ई ममिला रोशनी में आइल रहे। निलहन के आतंक के करुन कहानी पं राजकुमार सुकुल के भाषन के जबानी– '...चंपारण के निलहों और रैयतों के बीच संबंध बहुत दिनों से सौहार्दपूर्ण नहीं रहा है। निलहे पहले तो रामनगर और बेतियाराज से जमीनों के ठेके प्राप्त करते हैं और नील की खेती आरंभ करते हैं। अनुबंध की शर्तों के अनुसार, किसान के प्रत्येक बीघे में तीन कट्ठा जमीन रैयतों द्वारा नील की खेती के लिए अलग कर दी जाती है, लेकिन निलहे ये शर्तें पूरी करने पर भी संतुष्ट नहीं हैं। निरीह रैयतों को अपने खेतों में बेगार कराने के लिए मजबूर करते हैं और जब कभी रैयत किसी कारणवश उनके किसी हुक्म का पालन नहीं कर पाते हैं तो वे उनकी प्रताड़नाओं के शिकार होते हैं। निलहे इतने शक्तिशाली हो गये हैं कि खुद ही दीवानी और फौजदारी मुकदमों के फैसले करते हैं तथा जिस तरह चाहते हैं, गरीब रैयतों को दंडित करते हैं। इस बात की जाँच करने के लिए सरकार को कई बार अनुरोध किया गया, लेकिन बहुत दिनों तक हमारी कोशिशें बेकार साबित हुईं। निलहों के अत्याचार के कारण चंपारण में 1908 ई में बहुत बड़ी अशांति हुई। बंगाल सरकार ने इस बात की जाँच करने के लिए एक अधिकारी को प्रतिनियुक्त किया, लेकिन इस जाँच का परिणाम सार्वजनिक नहीं किया गया है और सैकड़ों की संख्या में गरीब रैयतों को जेल भेज दिया गया है। मैं चंपारण का एक रैयत हूँ। मैं नहीं जानता कि जब मैं चंपारण वापस

www.bhojpurisahityangan.com

जाऊँगा तो यहाँ आने तथा आप सबों को यह सुनाने के कारण मुझे क्या–क्या भुगतना पड़ेगा...' ('शर्म–शर्म' के आवाज)

पच्छिमी चंपारन के जिला मुख्यालय बेतिया। उहाँ से दस–बारह किलोमीटर उत्तर–पच्छिम दिशा में मौजूद बा सतवरिया गाँव। पाँच हजार के आबादी वाली बस्ती। नजदीक के रेलवे स्टेशन चनपटिया। ओही सतवरिया गाँव के ब्रह्मभट्ट साधारन किसान कोलाहल सुकुल के एकलउत पूत का रूप में 23 अगस्त,1875 के राजकुमार सुकुल के जनम भइल रहे। कबो ऊ गिरहत्त परिवार धनी–मानी आ खुशहाल मानल जात रहे, जब बीस गो बैल, तीस–पैंतीस गो गाय आ सैकड़न भइँसि दुआर के शोभा बढ़ावत रहली स, बाकिर निलहा गोरा सभ किछु तहस–नहस कऽके धऽ देले रहलन स।

होस सम्हारते राजकुमार निलहा गोरन के बर्बरता अपना खुलल आँखि से देखले रहलन आ भीतरे–भीतर उन्हुका बालमन में बगावत के लुत्ती ज्वालामुखी बनिके दहके लागलि रहे। अभाव में इस्कूली पढ़ाई कायदा से ना हो पावल। बस जइसे–तइसे लिखे–पढ़े भर के ज्ञान हासिल भइल। ब्रह्मभट्ट बाभन के कारन जजमनिको ना अपना सकत रहलन। एह से एगो महमूली किसान बनल नियति रहे।

गोर रंग, दुबर–पातर काया, मझोला कद–काठी। रूखल–सूखल बार। गाढ़ा के अंगरखा, ठेहुन ले सस्ता धोती आ कान्ह प अँगवछा। आगा चलिके माथ प टोपिओ सोभे लागल। कुल्हि मिलाके एगो ठेठ गँवई के सूरत रहे सुकुल जी के, जेकरा टूटल–फूटल हिन्दी आ भोजपुरी का अलावा अउर कवनो भाषा ना आवत रहे।

सुकुल जी ना चहलो प अपना पनरह फीसदी उपजाऊ जमीन पर नील के खेती करे आ मनमाना ढंग से लदाइल सिंचाई, बपही–पुतही, बेंटमाफी, मड़वच, कोल्हुआवन, चुल्हियावन, बेचाई, फगुअही, दशहरी, अमही, कटहरी, दस्तूरी, हिसाबान, तहरीर, महापात्री नियर अनगिनत कर भरे खातिर अलचार रहलन। मजबूर रैयत किसान सुकुल जी बेलवा कोठी के अधीन मुरली भरहवा में खेती करत रहलन। कोठी के मैनेजर मिस्टर ऐमन बड़ा सख्त आ क्रूर अंगरेज अफसर रहे। ओही घरी घर आ कोला के जमीन पर लगान ना लागत रहे। सुकुल जी खूब मेहनत–मशक्कत कऽके अपना कोला में आलू के खेती कइले रहलन। बाकिर जब फसिल तैयार भइल, त मिस्टर ऐमन के कारिन्दा आ धमकलन स आ फसिल के आधा हिस्सा बेलवा कोठी पहुँचावे के हुकुम दिहलन स।

"ई त सरासर नाइंसाफी बा। जब कोला के जमीन लगान–मुकुत बा, त अइसन आदेश काहें?" सुकुल जी हाथ जोड़िके पुछलन।

"यह मेरा हुक्म है!" मिस्टर ऐमन उहाँ पहुँचिके फरमान जारी कइलस, "अगर यह ऐसे नहीं मानता, तो इसके घर के सारे सामान नष्ट कर दो और झोंपड़ी में आग लगा दो।"

सुकुल जी गलत आदेश माने खातिर कतई तैयार ना रहलन। फेरु त उन्हुका आँखिए के सोझा सभ किछु तहस–नहस कऽ दिहल गइल। पलानी के आगी त किछु देरी में बुता गइल रहे, बाकिर उन्हुका भीतर आक्रोश आ नफरत के आगी लगातार धू–धू कऽके जरते रहि गइल रहे। ओइसे त सुकुल जी के लरिकाइएँ में बतावल गइल रहे कि ईस्ट इंडिया कंपनी के जरिए गोरन के अतियाचार 1600 ई से चंपारन में बदस्तूर जारी रहे आ उनइसवीं सदी के पहिलहीं से उहाँ के रैयतन के माली हालत लगातार खस्ता होत चलि गइल रहे, बाकिर मैनेजर ऐमन आ ओकरा कारिन्दन के कारगुजारी त उन्हुका के हिलाके राखि देले रहे। उन्हुका आंतर में अंगरेजन के खिलाफ विदरोह के चिनगारी के बीया बोआ गइल रहे।

फेरु का रहे! सुकुल जी 'जो घर जारे आपनो, चले हमारे साथ' के ऐलान करत रैयत किसान–मजूरन के संगठित करे के अभियान शुरू कऽ दिहलन। निलहा गोरन के अमानुषिक अतियाचार–अनेति के जरी–सोरी उखाड़ि फेंकल उन्हुका जिनिगी के मकसद बनि गइल रहे। बाकिर ऐमन के एह बात के भनक मिलि गइल रहे आ ऊ खिसिया के राजकुमार सुकुल पर एगो झूठ मोकदिमा दायर कऽके तीन महीना के जेहल के सजाइ दियवा दिहलस। बाकिर जेहल से राजकुमार चट्टान नियर मजबूत–दीढ़ होके बहरी निकललन।

ऊ हजारन किसानन के संगठित कइलन। अगुवाई में अपना दूगो इयार शेख गुलाब, शीतल राय के संघतिया बनवलन। एह सांगठनिक विदरोह के विस्फोट तब भइल, जब 1911 में ब्रिटिश सम्राट जॉर्ज पंचम नेपाल में शिकार के लुतुफ उठवला का बाद नरकटियागंज पहुँचलन। उहवाँ पनरह–बीस हजार किसान उन्हुकरा के

www.bhojpurisahityangan.com

घेरि के दरद भरल दास्तान सुनवलन आ खुलेआम विरोध के ऐलान कइलन। जनजागरन अभियान में तेजी आवे-लागल।

अप्रैल, 1915 में जब बिहार सूबा के राजनीतिक सम्मेलन छपरा में आयोजित भइल, त राजकुमार सुकुल उहवाँ चंपारन के किसानन के बदहाली आ बाथा–कथा सुनाके सभका के मरमाहत कऽ दिहलन।

9 जनवरी,1915 के दक्खिन अफ्रीका से रंगभेद के खिलाफ सत्याग्रह कऽके जब मोहनदास करमचंद गान्हीं भारत लवटलन, त लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन ले उन्हुका चंपारन के जनता प निलहन के दमनचक्र के जानकारिओ ना रहे। सुकुले जी अपना भासन में ऊ हिरदय–विदारक दास्तान सुनवले रहलन, जवना प 'शर्म–शर्म' के आवाज गूँजल रहे। ऊ बेरि–बेरि गान्हीं जी के धियान खींचल चहलन आ गिड़गिड़ाके एक हाली अपना आँखी किसानन के दयनीयत दसा देखे के विनती कइले रहलन। गान्हीं जी भरोसा दियवले रहलन कि कोलकाता से लवटत खा ऊ चंपारन के जातरा जरूर करिहन। अधिवेशन से बेतिया लवटिके ऊ गान्हीं जी के एगो ऐतिहासिक चिट्ठी लिखले रहलन। 27 फरवरी,1917 के लिखल ऊ चिट्ठी एहू से ऐतिहासिक रहे कि ओह में सभसे पहिले आ पहिलकी बेरि ऊ मोहनदास के 'महात्मा' संबोधित कइले रहलन। फेरु त गान्हीं जी के बिहार के भूँइ प 10 अप्रैल,1917 के उतरहीं के परल रहे। उहवें से चंपारन का रूप में देश में पहिलका हाली गान्हीं जी अहिंसक आंदोलन के शुरुआत कइले रहनीं, जेकर प्रेरना सुकुले जी से मिलल रहे। फेरु चंपारन में गान्हीं जी के देखे खातिर जब भीड़ उमड़ल रहे, त ऊ हुलास से जनसमुदाय के संबोधित करत भोजपुरी में कहले रहलन– "देख लिहीं सभे! 'महात्मा' जी आ गइलीं।"

कइसन अद्भुत पारखी रहलन सुकुल जी! आगा चलिके कवीन्द्र रवीन्द्रे खातिर ना, सउँसे दुनिया खातिर गान्हीं बतौर 'महात्मा' विख्यात हो गइल रहलन।

आखिर सुकुल जी के अथक मेहनत, निहोरा रंग ले आइल। गान्हीं जी सुकुल जी के कोलकाता बोलवलन। नौ अप्रैल,1917 के रात खा दूनों जाना हावड़ा से रेलगाड़ी धइलन। दस अप्रैल के सबेरे दस बजे पटना जंक्शन पर उतरलन। ओही रात खा मुजफ्फरपुर खातिर रवानगी। उहवाँ चार दिन के ठहराव। पनरह अप्रैल के मोतिहारी खातिर प्रस्थान। मोतिहारी के जसौलपट्टी गाँव में गान्हीं जी जाए प ब्रिटिश सरकार के रोक। मोकदिमाबाजी। गान्हीं जी खुदे ममिला के पैरवी कइलन। नतीजतन मोकदिमा उठा लिहल गइल।

आखिर गान्हीं जी के नजर में राजकुमार सुकुल के का अहमियत रहे? गान्हीं जी अपना आत्मकथा में चंपारन, उहाँ के अहिंसक आंदोलन के प्रेरनास्रोत राजकुमार सुकुल के विस्तार से चरचा कइले बाड़न।उन्हुकर कहनाम रहे– "...इस अपढ़, अनपढ़, परंतु निश्चयवान किसान ने मुझे जीत लिया...उनका और मेरा मिलाप पुराने मित्रों का–सा जान पड़ा। इससे मैंने ईश्वर का, अहिंसा का और सत्य का साक्षात्कार किया, यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है, बल्कि अक्षरशः सत्य है। इस साक्षात्कार में अपने अधिकार का विचार करता हूँ तो लोगों के प्रति प्रेम के सिवा कुछ नहीं मिलता। प्रेम और अहिंसा में मेरी अटल श्रद्धा के सिवा कुछ नहीं। चंपारण का वह दिन मेरी जिंदगी में ऐसा था, जो कभी भुलाया नहीं जा सकता।"

ई राजकुमार सुकुल के दीढ़ निश्चय आ भीषम प्रतिज्ञे रहे कि गान्हीं जी के चंपारन के जातरा करेके परल। खाली उन्हुके ना,डॉ राजेंद्र प्रसाद, मजहरुल हक़, जे बी कृपलानी, महादेव देसाई वगैरह नामी–गिरामी नेतनो के चंपारन पहुँचे के परल। गान्हीं जी एक–एक कऽके परत–दर–परत किसानन के शोषन–दमन के तहकीकात शुरू कऽ देले रहलन। फेरु त आगबबूला होके अंगरेज अफसर उन्हुका के चंपारन छोड़े के फरमान जारी कऽ दिहलन स। बाकिर गान्हीं जी जब हुकुम के अवहेलना करत खुदे मोकदिमा लड़े आ सजाइ काटे के निरनय लिहलन, त मजबूरन सरकार के ना खाली आपन आदेश रद्द करेके परल, बलुक एगो जाँच कमेटी गठित कऽके गान्हियो जी के ओकर सदस्य बनावे के परल। अंततः चंपारन के किसानन के दुरदसा के समूल खातमा भइल, जब 4 मार्च, 1918 के विधान परिषद् से एह आशय के विधेयक पारित भइल कि फसिल उपजावे के ममिला में सभ किछु रैयतन के मरजी पर निर्भर रही। एह से चंपारन में महात्मा गांधी के पहिल सविनय अवज्ञा आंदोलन के कामयाबी राजकुमार सुकुल के प्रेरना से हासिल भइल।

बाकिर सुकुल जी के गोरन के खिलाफ विदरोह ताजिनिगी जारी रहल, काहेंकि ब्रितानी सरकार झूठ

www.bhojpurisahityangan.com

आरोप मढ़िके निरीह किसानन आ आम जनता के प्रताड़ित कइल बन्न ना कइले रहे। सन् 1929 के मई महीना में ऊ साबरमती आश्रम पहुंचल रहलन आ बापू से उन्हुकर भेंट आखिरी भेंट साबित भइल रहे, काहेंकि साबरमती के संत के दर्शन कऽके सतवरिया के ऊ संत 20 मई,1929 के मोतिहारी के ओही ठेकाना पर हरदम–हरदम खातिर आँखि मूंदि लेले रहलन, जहवाँ चंपारन अइला प गान्हीं जी ठहरल रहलन। चंपारन के 19 लाख जनता 'चंपारन के गान्हीं' के लोर भरल आँखि से फफकि–फफकि के आखिरी विदाई देले रहे। इहां ले कि उहां के क्रूरतम अंगरेज अफसर मिस्टर ऐमन मरमाहत होके सुकुल जी के दमाद के पुलिस महकमा में बहाली के चिट्ठी आ आर्थिक मदत देत कहले रहे– "उस आदमी की कीमत दूसरे लोग क्या समझेंगे! चंपारण का वह अकेला मर्द था, जो मुझसे पचीस वर्ष लड़ता रहा।"

साँच त ई बा कि पंडित राजकुमार सुकुल के मंशा ना त कवनो आंदोलन के अगुवाई करे के रहे आ ना राष्ट्रीय नेतृत्व सम्हारे के। ऊ त चंपारन के किसानन, रैयतन पर सदियन से बजड़त निलहन के अनेति–अतियाचार के बजरपात से घवाहिल रहलन आ ओह असह दुख–दरद के समूल नाश कइल–करवावले उन्हुकर एकमात्र मकसद रहे। एह काम खातिर ऊ गान्हीं जी के उत्प्रेरित कइलन आ मुकुती के साँस लिहलन। चूँकि ऊ खुदे महात्मा रहलन, एह से गान्हीं जी में ऊ महात्मा के दरसन कइलन। पंडी जी के अमरता गान्हीं जी के पहिला हाली 'महात्मा' के संबोधन देबे में ना, वरन चंपारन सत्याग्रह के बहाना से देश में अंगरेजन के खिलाफ सभसे पहिले अहिंसक आंदोलन के सूत्रपात करे खातिर प्रेरनास्रोत के भूमिका अदा करे में रहे।आजु जब देश आजादी के अमृत महोत्सव मना रहल बा, ओह प्रेरना–पुरुष के, चंपारन के 'अकेला मर्द' का प्रति नतमस्तक भइल हरेक भोजपुरिया आ भारतीय के फरज बनत बा।

भगवती प्रसाद द्विवेदी
शकुन्तला भवन, सीताशरण लेन,मीठापुर,
पटना–800001 (बिहार)

✧ ✧ ✧

सर्वभाषा ट्रस्ट से प्रकाशित भोजपुरी किताब

सर्वभाषा ट्रस्ट
नई दिल्ली

8178695606
sbtpublication@gmail.com
www.sarvbhashatrust.com

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी के विश्वकोश पं. गणेश चौबे

- डॉ. बृज भूषण मिश्र

भोजपुरी के विश्वकोश के रूप में सोहरत वाला पं. गणेश चौबे के जनम 5 दिसम्बर, 1912 ई. के ममहर गाँव साढाडम्मर, मुजफ्फरपुर में भइल रहे। पिता पं. भरथरी चौबे बंगरी, चंपारन बिहार के संपन्न किसान रहीं। चौबे जी के पढ़ाई लिखाई गाँव में शुरू भइल, बाद में जिला स्कूल, मोतिहारी से 1932 ई. में मैट्रिक पास कइनी। मैट्रिक पास करके शॉटहैंड टायपिंग सिखनी आ मोतिहारी कलक्टरी में नियुक्त हो गइनी। 1948 ई. में पिता के निधन के बाद नौकरी छोड़ के परंपरागत पैतृक खेती से जुड़ गइनी। चौबे जी में साहित्यिक रूचि जगावेवाला गाँव के पाठशाला के गुरुजी रहीं। पाँचवा में पढ़त खानी मैथिली भाषी सहपाठो के चलते मातृभाषा के प्रति जिज्ञासा भइल, सन् 1929 ई. में 'सुधा' में लिखल लेख से भोजपुरी के बारे में ललक बढ़ल आ नौंवा में पढ़त खानी लाल बिहारी डे के किताब 'फॉकटेल्स ऑफ बंगाल' पढ़ के लोकसाहित्य के प्रति ललक बढ़ल।

उहाँ का एह विषय से संबंधित देसी बिदेसी विद्वानन के ग्रंथन के संगे मोतिहारी कलक्टरी में उपलब्ध अभिलेख आ ग्रंथ सब के अध्ययन से ज्ञान बढ़वलीं। भोजपुरी लोकसाहित्य, शिष्ट साहित्य, पुरातात्त्विक वस्तुअन, सिक्का पाण्डुलिपियन आदि के खोज आ संग्रह शुरू कइनी। चौबे जी पुरातात्त्विक महत्त्व के सामग्रियन आ सिक्कन के पटना संग्रहालय के भेंट कइनी, जबकि सात से ग्रंथ आ पाण्डुलिपियन के बिहार राष्ट्रभाषा परिषद के, जवन चौबे संग्रहालय के नाम से सुरक्षित कइल गइल। चौबे जी भोजपुरी के लगभग दस हजार लोकगीत, तीन से लोककथा सहित, लोकोक्ति, मुहावरा, कहावत वगैरह के संग्रह आ ओकर अध्ययन करत, अपना लेखन के शुरूआत 1941 ई. में कइनी। सरभंग संप्रदाय के संत कवियन के बारे में जानकारी आ ओह लोग के पद के खोज अपने कइलीं।

चौबे जी के जुड़ाव जनपदीय आंदोलन से भइल। लोकसाहित्य, शिष्ट साहित्य, भाषा, जीवन, संस्मरण, पुरातात्त्विक महत्व के सैकड़ो लेख हिन्दी, अंग्रेजी, भोजपुरी में चौबे जी लिखनी जे अपना समय के पत्र–पत्रिकन, शोधपत्र, स्मारिका आदि में छपत रहल। अपने 'बिहार इन फोकलोर स्टडीज' नामक ग्रंथ के संपादन कइले बानी।'

भोजपुरी भाषा आ साहित्यः कुछ समस्या आ समाधान 'निबंध संग्रह ह।' भोजपुरी–हिन्दी कोश' के अपने प्रबंध संपादक रहीं। मगर अपने के सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथ बा 'भोजपुरी प्रकाशन के सइ बरिस' जवना में मुद्रित रूप में वर्ष 1882 से 1982 ई. तक प्रकाशित भोजपुरी पुस्तकन के व्योरेवार आ वगीर्कृत सूची बाटे। चौबे जी पचीस बरिस तक 'इंडियन फोकलोर' नामक पत्रिका के क्षेत्रीय संपादक रूप में काम कइनी आ ओह पत्रिका के 'करेन्ट इंडियन प्रेस' स्तंभ के लेखको रहीं, जवना में नवप्रकाशित पुस्तकन के बारे में जानकारी रहत रहे। चौबे जी यू. जी. सी. के लोकवार्ता विशेषज्ञ समिति के सदस्य के रूप में छव बरिस तक कार्य कइनी।

अपने बिहार राष्ट्रभाषा परिषदो से जुड़ल रहीं। आकाशवाणी पटना के स्वर परीक्षा समिति के सदस्य रूप में अपने के भूमिका रहल। बिहार विश्वविद्यलय के भोजपुर पाठ्यक्रम समिति के सदस्य सम्मेलन के गठन के समय से जुड़ाव रहल। नौवां अधिवेशन आ सत्र के अध्यक्ष रहीं। अपने के भोजपुरी भाषा सम्मेलन, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य परिषद, जिला पुस्तकालय संघ, मोतिहारी से जुड़ाव रहल। अपने के बिहार सरकार के 'राजभाषा पुरस्कार', लोक संस्कृति संस्थान, बनारस से 'मूर्ति देवी पुरस्कार' आ विश्व भोजपुरी सम्मेलन से 'सेतु पुरस्कार' मिलल बा। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग विद्या वाचस्पति के उपाधि देले बा। साथ ही छोट बड़ संस्था सम्मानित कइले बा।

✧ ✧ ✧

www.bhojpurisahityangan.com

क्रांतिकारी कवि रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त'

- डॉ. बृज भूषण मिश्र

अलमस्त जीव रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त' के जनम बिहार के चपारन (अब पूर्वी चपारन) जिला के गोबिंद गंज थाना के दूबे टोला गाँव में 05 अगस्त, 1919 ई. के एगो जमींदार परिवार में भइल रहे, जबकि निधन 02 फरवरी, 1987 ई. जमशेदपुर में हो गइल। अपने हिन्दी से एम.ए. के परीक्षा पास कइलीं आ नेपाल के बीरगंज में एक कॉलेज के हिन्दी विभाग में संस्थापक अध्यापक रूप में बहाल हो गइलीं। नेपाल में जब अमेरिका से कृषि विशेषज्ञ लोग आधुनिक खेती के बारे में बतावे आइल त भाषा समस्या आइल। अलमस्त जी के अमेरिकन लोग के भोजपुरी सिखावे लागि प्रतिनियुक्ति भइल। अलमस्त जी तत्कालीन नेपाल महाराजा के विरुद्ध भोजपुरी में कविता लिखनी, जवना पर 'सूट एट साइट' के आदेश हो गइल। इहाँ का पता चलल त छिपत छुपत घरे आ गइलीं। तब तक 1957 ई. के आम चुनाव आ गइल। इहाँ का गोबिंद गंज विधान सभा से चुनाव लड़ गइनीं आ हारे के रहे हार गइनी। ओकरा बाद अलमस्त जी मुजफ्फरपुर जिला के साहेबगंज हाई इसकूल में शिक्षक नियुक्त भइलीं जहाँ 1968 ई. तक काम कइनी, ओकरा बाद वर्कर्स कॉलेज जमशेदपुर में हिन्दी के प्रवक्ता में बहाल हो गइलीं, जहाँ से रिटायर भइलीं। अलमस्त जी होम्योपैथी के जानकर रहीं आ चिकित्सा करत रहीं। रिटायर भइला के बाद पाँच से के वृति पर टाटा में मृत्यु पर्यंत रह गइलीं। अलमस्त जी के दू गो बिआह रहे, एगो बेटी रही। परिवार साथे रहते ना रहे। अलमस्त जी छात्र जीवन से हिन्दी भोजपुरी में कविता रचत रहीं। उहाँ पर प्रगतिशीलता के प्रभाव रहे। अलमस्त जी के गीत 'तोहरा घरवा में पइसल बा चोर अँजोर करके देख भइआ' आजादी के पहिले घर–घर में गुँजे लागल रहे। अइसे व्यंग्य कवि के रूप में बड़ा नाम रहे। ओही व्यंग्य के चलते 'सूट एट साइट' के आदेश रहे। 1953 ई. में छपल 'उदयन' नाम के काव्यपुस्तक में हिन्दी भोजपुरी दुनों के कविता रहे। सस्वर कविता पाठ करीं। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पाँचवा अधिवेशन के अवसर पर कवि सम्मेलन के अध्यक्षता अपने कइले रहीं। मरे से दू दिन पाहिले मोतिहारी ए से कवि सम्मेलन के अध्यक्षता कर के लवटल रहीं। अपने के लिखल हिन्दी आ भोजपुरी गद्य बड़ा सशक्त बा।

✧ ✧ ✧

सर्वभाषा ट्रस्ट से प्रकाशित भोजपुरी किताब

सर्वभाषा ट्रस्ट
नई दिल्ली

8178695606
sbtpublication@gmail.com
www.sarvbhashatrust.com

www.bhojpurisahityangan.com

पंडित गणेश चौबे जीवनी आ समीक्षा

- डॉ. विक्रम कुमार सिंह

चौबे जी के महत्वपूर्ण लेखन में साहित्यकार, भाषाविद, लोकवर्ता विशेषज्ञ आ समाजिक नेता वगैरह के संस्मरण आ जीवनी या जीवन वृतांतीय आलोचना सुमार बा। उहाँ का हिन्दी में लगभग तीस आ भोजपुरी में लगभग 16 गो अइसन निबंध लिखनी। अइसन व्यक्तित्व लोग में आचार्य शिवपूजन सहाय, डॉ. परमेश्वरी लाल गुप्त, रामवृक्ष बेनीपुरी, डॉ. सत्येन्द्र आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, केदार पाण्डेय आ राहुल सांकृत्यायन जइसन लोग बा, जेहपर हिन्दी में चौबे जी लीखले बानी डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, डॉ. भोलानाथ तिवारी, महेन्द्र शास्त्री, जइसन व्यक्तित्व पर चौबे जी भोजपुरी में लिखले बानी। चौबे जी एह लेख सब में व्यक्ति विशेष के विषय में अपना जानकारी के साक्षा करत विशेषता बतवले बानी ओह लोग के भाषा आ साहित्य संबंधी विचार पर आलोचकीय टिप्पणी भी कइले बानी। अध्याय में से उपलब्ध कुछ संस्मरणात्मक लेखन के विशलेषण करके चौबे जी के संस्मरणात्मक आ जीवन वृंतातीय निबंधन पर विचार कइल गइल बाटे।

चौबे जी एह विद्या में सफल लेखन कइले बानी। संस्मरण में कुछ छिपावे के कोशिश नइखी कइले। शरीरिक सौंदर्य के वर्णन करत उहाँ का शब्द चित्र खड़ा कर देले बानी। जब ओह व्यक्ति के साहित्य आ विचार के कर्म में उहा का आपन दृष्टि आलोचकीय बना देले बानी।

चौबे जी कुछ समीक्षात्मक लेखनो कइले बानी। चौबे जी द्वारा समीक्षा लेख हिन्दी, भोजपुरी, अंग्रेजी तीनों भाषा में उपलब्ध बाटे। हिन्दी में बारह, अंग्रेजी में नौ और भोजपुरी में चार किताबन के समीक्षा कइले बानी। ई लेख सब काया में छोट बा, बाकि गंभीर बा। पुस्तकन का विषयवस्तु के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखत विचार कइले बानी।

चौबे जी एगो लेख में शंकर दास जी के संस्मरण के आधार पर पदन के उदाहरण देत उनकरा जीवनी के परिचय देले बानी आ अंत में ओह पदन पर आलोचनात्मक टिप्पणी देत उनकरा कवि के बारे में भी विचार कइले बानी।

चौबे जी के एगो जीवनी परक आलोचनात्मक निबंध चउथा–पाँचवा दशक (बीसवी सदी) के चर्चित भोजपुरी व्यंग्य कवि श्याम बिहारी तिवारी देहाती के ऊपर लिखले बानी, जे अखील भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' का वर्ष – 1990 के मार्च अंक में छपल रहे। चौबे जी एह लेख में ई बतवले बानी कि देहाती जी भोजपुरी के पहिला व्यंग्य कवि रहीं, जे आज का पश्चिमी चम्पारण के बथना गाँव के निवासी आ मिशन स्कूल बेतिया के शिक्षक रही। चौबे जी का देहाती जिसे पहिला भेंट चम्पारण जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन के रक्सौल अधिवेशन में भइल रहे। देहाती जी मझोला कद के जमुनिया रंग वाला व्यक्ति रही। कलीदार कुरता आ चौरा पंजा वाला जूता पेन्हत रही। कान्ह पर गमछा आ हाथ में तेल पिआवल डंडा ले के चलत रहीं। शहर में रहला पर रहन–सहन देहाती रहे आ देहाती बोली में कविता करस। चौबे जी देहाती जी के काव्य–काल 1936 ई० से 1950 तक मनले बानी। चौबे जी ई बतवले बानी कि देहाती जी हिन्दी के छंद विद्यान में भोजपुरी के कविता लिखत रहीं। ओह घरी भोजपुरी के हिन्दी के बोली मानल जात रहे, भाषा ना। देहाती जी आपन प्रेस स्थापित करके 'सागर' नाम के साप्ताहिक पत्र निकालत रहीं। उहाँ का 'कवि सागर' नामक संस्था के कर्ता धर्ता रहीं। देहाती जी के मित्रता हिन्दी के प्रसिद्ध कवि नेपाली जी से रहे। देहाती जी गॉजा पीये, खइनी खाय आ भाँग का शेवन के आदी रहीं। एह खातिर उहाँ का कवनो जगह पर आपन व्यस्था कर लेत रहीं।

देहाती जी के कवि व्यक्तित्व के चर्चा करत चौबे जी लिखले बानी– "देहाती जी हास्यकार कम आ व्यंगकार बेसी रहस। साहित्य जगत पर उनकर प्रभाव रहे। ऊ कवनो कवि सम्मेलन में जइसही देहाती बोली में कविता के पहिला पॉती पढ़स, लोग उनका बोली आ भेस–भूसा पर हसे लागे, लेकिन जब लोग दिल पर सीधे चोट करे वाला उनकर व्यंग्यात्मक कविता सुने त अकचका के उनका गौर से ताके लागे।

www.bhojpurisahityangan.com

ओह समय भोजपुरी के युग बोध वाली कविता करे वाला के अभाव रहे। ऊ ठेठ भोजपुरी के भाव व्यंजक शब्दन के प्रयोग करस आ श्रोता पर भोजपुरी के धाक जम जाय।"

चौबे जी आगे बातवले बानी कि देहाती जी मोतिहारी के शायर बहासत साहेब के सोहबत में उर्दू के छन्द विधान से प्रभावित भइले कि अपना भोजपुरी के कवितन खातिर ओह छन्द–विधान सब के उपयोग मा प्रयोग करे लगले। बहसत साहेब भी देहाती जी से प्रभावित होके भोजपुरी में शायरी करे लगतें। चौबे जी लिखले बानी कि उहाँ का बहशत साहेब के चार–पांच गो काव्य रचना देखले रहीं। चौबे जी आगे देहाती जी के कविता के कथ्य पर विचार करत लिखले बानी–

"स्व0 देहाती जी का अधिकांश कविता में युग बोध बाटे, द्वितीय महायुद्ध कन्ट्रोल, गिरल समाज, देश के दुर्दशा, शासन आ सरकार पर कड़ा घोट बाटे। कुछ कविता सिंगारिओ बाँटे जवना में कल्पना के उड़ान बाटे हम अपना पाठकन का विवेक आ तर्कबुद्धि पर विश्वास करत देहाती जी के कुछ पद बिना टिप्पणी के दे रहल बानी।

बड़की कोठी में गइनी, बइठ गइनी भुँइए।
गलइचा कहाँ सूझो, आँख में त नरकट पटेर छपले बा।।

समाज पर एगो दोसर व्यंग पर गौर करीः–

का कहीं का देखीं का का देखनी।
भीतर के त ना देखनी बाहर के लिफाफा देखनी।।

एह पद में आइल श्लेष के खूबी मन के मोह लेता, भले एह में केहू का ग्राम्य दोष नजर आवे। अइसन उनकर अनेक पद बाटे।

जिला के उत्तरी भाग में स्थित सोमेश्वर का वन–प्रदेश यात्रा वरनन का ओर ध्यान दीः–

बाघ हूमरल, इअरउ के गोली दगे लागल। बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन का वौसी अधिवेशन के देहाती जी कविता पढ़ले :–

चइत चाँद ओह चन्द्रमुखी के,
झगरा अब फरिआते नइखे।
गगरी भरल खिंचाते नइखे।

ई कविता सुनते दिनकर जी का मुँह से निकल पड़ल–

'देहाती, कवि तुम्ही हो। हम तो पापड़ ही बेलते रह गये।'

ई बाटे देहाती जी का कवितन के बानगी आज भोजपुरी में व्यंग्य कवि के कमी नइखे, लेकिन देहाती जी तक उ लोग का अवही बहुत देरी बुझाता।"

एह प्रकार चौबे जी देहाती जी के काव्य सौष्ठव के बारे में आपन आलोचनात्मक टिप्पणी करत, उनकर जीवन परिचय देले बानी। उहाँ का आगे इहो बतवले बानी कि देहाती जी अपना कवितन के तीन भाग में संग्रह तइयार कइले रहीं आ नाम देले रहीं 'रसगगरी'। बाद में उहाँ का नाम बदले देनी 'देहाती दुलकी'। पहिला भाग सन् 1947 ई० प्रकाशित भइल। देहाती जी के 1950 ई0 के अवसान के बाद दू भाग ना छप सकल। चौबे जी का पास देहाती जी के एकहतर कवितन के संकलन रहे, जे ऊ राष्ट्रभाषा परिषद के शशिनाथ झा का आग्रह पर तइयार कइले बाकिर ऊ ना छप सकल।

एगो संस्मरणात्मक लेख चौबे जी भोजपुरी साहित्य के उपन्यासकार कथाकार पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह पर लिखनी, जे 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' सन् 1995 ई० का मार्च अंक में छपल। ई निबंध दिवंगत भोजपुरी सेवी स्तम्भ के तहत छपल बा।

एह निबंध के पहिला पराग्राफ में चौबे जी पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह के आकर्षक देहयष्टी, खादी के पहनावा, मृदुभाषिता आ मिलनसरिता के चर्चा कइले बानी–

'गोर देह, लंबा कद सुंदर, मुखाकृति आ ओह पर मीठ मुस्कान। खादी के पहनावा चाहे ऊ सफेद रंग के होय भा कोकटी ई रहे स्व0 पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह के आकर्षक व्यक्तित्व। बात करे के उनकर कुछ अइसन ढंग रहे कि सुने वाला का अइसन भुझाए कि ऊ अपन केहु पुरान परिचित आदमी से बात करत बाटे। ओह में कवनो दुराव ना रहे, कवनो प्रपंच ना रहे। उनका एह वशीकरण मंत्र का प्रभाव में हमहूँ आ गइल रहलीं।"

चौबे जी पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह के साहित्यिक गतिविधि पर विचार करत लिखल बानी–

"स्व0 जगन्नाथ बाबू का हिन्दी आ भोजपुरी दूनू भाषा पर समान अधिकार रहल। इनकार लिखल हिन्दी

www.bhojpurisahityangan.com

के कई एक पुस्तक बाटे हमरा ओह पुस्तकन के पढ़े के अवसर त नइखे मिलल लेकिन इनका भोजपुरी पुस्तकन के हम चाव से पढ़ले बानी। इनकर 'घर टोला गाँव' एगो अइसन उपन्यास बाटे, जवना में आंचलिक कथा का माध्यम से आत्मकथा उपस्थित कइल गइल बाटे। ई अपना ढंग के एगो अनोखा ग्रंथ बाटें। एकस भाषा में परवाह, सुबोधता आ लालित्य बाटे खरोध इनका कहानियन के संग्रह, जवना में समाजिक जीवन के सजीव चित्रण बाटे। एकरा अतिरिक्त पत्र पत्रिकन में छिटफुट रचना भी प्रकाशित बाटे"।

ई आलेख पूर्णतः संस्मरणात्मक बा, जे में ओह व्यक्ति से परिचय, ओकर शरीरिक सौष्ठव, पहनावा–ओढ़ावा, रहन–सहनी, बात–व्यवहार, कुल–खानदान सबके संस्मरण प्रस्तुत कइल गइल बाटे।

समीक्षा लेखन :– चौबे जी समीक्षा लेखन भी कइले बानी। ई समीक्षा कार्य उहाँ का लगभग तीनों भाषा–हिन्दी, भोजपुरी, अंग्रेजी में कइले बानी, जे देश भर का पत्र–पत्रिकन में छितराइल बा। पहिले के अध्याय में चौबे जी के लिखल साहित्य के जवन सूची दिहल गइल बा, ओकरा– नुसार चौबे जी के साहित्यिक समीक्षा के हिन्दी में बारह गो, अंग्रेजी में नौ गो आ भोजपुरी में एक गो के सूची दिहल गइल बा। हमरा भोजपुरी के खातिर खाता में सूचीबद्ध लेख के अतिरिक्त तीन गो पुस्तक समीक्षा के लेख मिलल बा, जे ओह सूची के तैयार भइला के बाद लिखल गइल बा। ई लेख बाटे– आचार्य श्रद्धानन्द अवधूत के पुस्तक 'श्रद्धा सुमन' उनका व्याकरण आ श्याम सिंह जी 'मधुप के कविता संग्रह– 'गीत कलश'। ई तीनों पुस्तक समीक्षा भोजपुरी पत्रिका में छपल बाटे। आगे उपलब्ध एही तीनों समीक्षा पर विचार कइल जाय। पहिला समीक्षात्मक आलेख पर विचार कइल जाय त चाबे जी आर्चाय श्रद्धानन्द अवधूत के कविता संग्रह 'श्रद्धा सुमन' जे 1993 ई० में आनन्द मार्ग पब्लिकशंस, तिलणला, कलकत्ता से प्रकाशित भइल रहे। एह पुस्तक के पृष्ठ संख्या 500 रहे। चौबे जी एह पुस्तक के समीक्षा करत पहिले ई बतवले बानी कि आचार्य श्रद्धानन्द अवधूत जे उच्च कोटि के चिंतक आ सुलेखक हुई, जेकर भोजपुरी में कई ग्रंथ प्रकाशित बाटे आ एह ग्रंथन में आन्नद मार्ग के सिद्धांत पर प्रकाश डालल गइल बाटे। भारतीय संत म्परा के निर्वाह करत सामान्य जन तक आपन सिद्धान्त आ साधना के पहुंचावेला लोकभाषा में आपन रचना अवधूत जी भी कइले बानी। चौबे जी आगे बतवले बानी कि समीक्ष ग्रंथ में 301 अंकित गीत बाटे, जवना में 293 भोजपुरी में बाटे आ आठ हिन्दी में कविता के तथ्य पर विचार करत चौबे जी लिखले बानी सबसे पहिले भक्त प्रभु से विनती कर रहल बाटे कि हम सब तीर्थन में घूमत–घूमत थक गइल बानी हमरा कही सहरा न मिलल हमरा के सही रास्ता बता द। भक्त आत्मसमर्पण प्रभु के सामने कर रहल बाटे गुरु ही जीवन के मरम बता सकेले, चले के ठीक–ठीक रास्ता देखला सकेले (गीत–2)। प्रभु सर्वव्यापी हउऐं, संसार में जे चर–अचर बाटे ओह सभ में प्रभु व्याप्त बारे सबके निस्वार्थ सेवा करे के चाही। अइसही ऊहाँ के कविता के तथ्य पर बतिआत आनन्द–मूर्ति के प्रार्दुभाव के बात कइले बानी, जे अवतरित हो के दुनिया के दर्शन धर्म, अर्थ, समाज के ज्ञान दिहली। ई 62 वाँ गीत के आधार पर चौबे जी बतवले बानी। अइसही कुछ गीतन पर बतावल गइल बा। चौबे जी आगे बातवले बानी कि एह में के अधिकांश रचना प्रथना के रूप में रचल गइल बा। प्रभु भक्तन खातिर सभ कुछ हवन। जीवन के प्रति दया आ जीवन रक्षा उनका भक्ति के सही मार्ग बाटे। चौबे जी अंत में लिखत बानी– "कवि के दृष्टिकोण आधुनिक ज्ञान विज्ञान से प्रभावित बाटे। ग्रंथ में मुक्त छंद के प्रमुखता बाटे, भाषा में प्रवाह आ सुबोधता बाटे।" एह प्रकार एह छोटहन लेख में कथ पर बानी आ शिल्प अउर भाषिक संरचना पर अति संक्षेप में विचार कइल गइल बाटे।

हमरा सामने पंडित गणेश चौबे जी के दोसर समीक्षात्मक लेख–'भक्ति या श्रृंगार के रक्त–कलश गीत कलश श्यामजी सिंह 'मधुप' के गीत–कविता संग्रह बा जे निर्बल के बलराम, नवादा, बिहार के प्रकाशन बा। 118 पृष्ठ के एह पुस्तक के प्रकाशन 1993 ई० में भइल चौबे जी कवि मधुप के बारे में बतवले बानी की ऊ हिन्दी–भोजपुरी के सुकवि हवन, जिनका प्रकाशन के चिंता ना रहल। भोजपुरी गीतन के ऐह संग्रह में नब्बे गीत संकलित बाटे भक्ति गीतन में निर्गुण आ कृष्ण भक्ति का गितन के प्रमुखता बा। कवि निर्गुण–सगुण में कवनो भेद नइखे मानत प्रेम गीतन में विरह गीत के प्रधानता बा। कवि का हृदय में समीक्षक का आग के धंधकल बुझात बा बकिये गीतन के बारे में चौबे जी लिखत बानी : "शेष गीतन में भारत के गुनगान फौजी जवानन के तारीफ बाटे। कुछ गीत भोजपुरी, भोजपुरी आ कुँअर सिंह

www.bhojpurisahityangan.com

के सम्बन्ध में बाटे। एह से साफ नजर आवत बाटे कि गितन के दायरा व्यापक बाटे। भाषा में प्रवाह बाटे। एह गीतन में लोग भावना के सफल अभिव्यक्ति भइल बा।

चौबे जी अपना विचार के स्पष्ट करत लिखले बानी– 'इहाँ हमस समीक्षा में ओही प्रश्न के उठवले बानी जे विवाद ग्रस्त पहलु बाटे भोजपुरी भाषा त अवडी निर्माण का स्थिति में बाटे। व्याकरण शास्त्र के सिद्धांत ह– 'प्रयोगशरणा वैयाकरण' । भोजपुरी में जइसे जइसे साहित्य रचना होत जाई वैयाकरण लोग का अपना ग्रंथ लागि यथेष्ट मसाला मिली', आ व्याकरण में प्रौढ़ता आ एकरूपता जावत जाई। ऐड से कहल जा सकत बा की भोजपुरी के मर्मज्ञ विद्वान पंडित गणेश चौबे रहीं।

संदर्भ–ग्रंथः

1. पाण्डेय कपिल प्र. सं.– भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका वर्ष 1990 मार्च, अंक–3. अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना– पृ०85।
2. उहे, पृ0 85, 86, 87।
3. पाण्डेय कपिल, प्र. सं.– भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका वर्ष 1995 मार्च, अंक–3, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना, पृ0 113।
4. उहे, पृ0 144।
5. पाण्डेय कपिल प्र.सं. – भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका वर्ष 1993, जून, अ.भा.भो.सा. सम्मेलन, पटना, पृ0 162।
6. पाण्डेय कपिल प्र.सं. भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, वर्ष 5 अगस्त 1994, अंक–8, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, प0 347।

✧ ✧ ✧

सर्वभाषा ट्रस्ट से प्रकाशित भोजपुरी किताब

सर्वभाषा ट्रस्ट
नई दिल्ली

8178695606
sbtpublication@gmail.com
www.sarvbhashatrust.com

www.bhojpurisahityangan.com

आदरणीय हरिश्चंद्र सहित्यालंकार जी

- डॉ. मधुबाला सिन्हा

चम्पारण के गौरव आ हिन्दी के जवरे भोजपुरी के समर्पित आदरणीय हरिश्चंद्र प्रसाद जी जेकरा सहित्यलांकार के उपाधि से, उनका साहित्यिक सेवाभावना खातिर सजावल गइल रहे। हुनकर कृतित्व आ व्यक्तित्व के सम्बंध में कुछ कहल त सुरुज के दियरी देखवला नियर बा, लेकिन लगभग छब्बीस बरिस के बाद उनका अपना घर में– मोतिहारी, चम्पारण के अंगनाईं में जे साहित्यिक उत्सव हो रहल बा, ओहमें हुनका के बिसरावल न्यायसंगत ना होई। बस एहि भावना के तहत हमार कलम दु गो शब्द खातिर उठ गइल। सरधा के फूल चढ़ावे के प्रयास बा।

आदरणीय हरिश्चंद्र जी के जनम अट्ठाइस नवम्बर उन्नीस सौ तीस (28 नवम्बर 1930) के मोतिहारी, चम्पारण के धरती पर ठाकुरवाड़ी महल्ला में पिता स्वर्गीय रामलखन परसाद जी आ माई स्वर्गीया सुदामा देवी जी के अँगना में फूल बनिके खिलल रहनी। इहाँ के मूल नाम त आदरणीय माधव प्रसाद जी रहे, लेकिन स्वभाव के धनी रहनी त नामों अनुरूप मिल गइल 'हरिश्चंद्र परसाद' आ सहित्यलांकार त इहाँ के सम्मान मिलल रहुए त आगे चलके इहाँ के एहि नाम से प्रसिद्ध भ गइनी आ चंपारण के मान बढ़वनी– 'हरिश्चंद्र सहित्यलनकार'। इहाँ के जीवन संगिनी आदरणीया राधा देवी जी भी जीवन के कई गो वसन्त में खूबसूरती से साथ निभवनी आ गाछी के फूल–पात के रूप में तीन गो बेटा (सुशील चन्द्र,स्व. सुनील चन्द्र,रवि चन्द्र)आ चार गो बेटी उषा, पूनम,सुनीता,सीमा) के किलकारी से घर–अँगना गमकवनी। स्वनाम धन्य हर दुःख आ सुख में साथ निभावत जीवन के सभ कर्तव्यन के पूरा कइनी। आजु वंश वृक्ष बढ़त बाल–गोपाल से बगिया गुंजयमान बा।आ ओहि में दादा जी के विरासत सम्भारत मोती स्वरूप पोता सुशांत सौरभ आ कुणाल कुमार के रूप में निखर रहल बा ,,उम्मीद बा कि इ मोती हुनकर माला के अगवड भी दिशा दी।

वृतिः– रोजी–रोटी के चिंता साहित्य से अगवड हो भी जाला,, त एहि में साहित्य–साधना करत उहाँ के "हिन्दी निदेशक के रूप में आ खाद्य आपूर्ति व वाणिज्य विभाग में पनन पदाधिकारी के रूप में कार्यरत भी रहनी।

सम्पादनः– आदरणीय हरिश्चंद्र सहित्यलनकार जी हिन्दी के जवरे भोजपुरी साहित्य के भी मनोरंजन के स्तर से ऊपर उठा के जीवन के सार्थकता से जोड़े के प्रयास कइनी।इहाँ के "अखिल भारतीय भोजपुरी भासा सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में सम्मेलन के लोकभाषा मंत्री मनोनीत कइल रहे।इ इहाँ के अपने आप में एगो लमहर उपलब्धि रहे।इहाँ के अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन के कार्यकारिणी के सदस्य भी रहनी।

दुनो चम्पारण में बिखरल–फइलल बहुत सा मुहावरा के भोजपुरी समाचार पत्रिका के माध्यम से प्रकाश में ले अइनी। थारू भाषा के लोकोक्ति आ मुहावरा चुन चुन के सामने ले अइनी।हमरो इ सौभाग्य रहे जे हम उहाँ के सँगे "चम्पारण के लोकोक्ति" पर काम करत रहनी।प्रयास इहे रहे कि दबल–छुपल लोकोक्ति के सामने ले आईं आ अर्थ के समुझावत एगो किताब के रूप दीं।प्रयास इहे रहे कि आवे वाला पीढ़ी के ऐहू विधा से परिचित करवाई आ भोजपुरी भासा के समृद्ध बनाई।भोजपुरी के विकास ,साहित्य–साधना से ही सम्भव बा—इ उहाँ में भावना रहे आ भोजपुरी के प्रति समर्पण।कालांतर में इ अधूरा काम करेके प्रयास जरूर होइ ताकि उहाँ के अधूरा सपना पूरा होखे आ नवहन पीढ़ी के भासा आ मुहावरा–लोकोक्ति के प्रति रुझान भी होखे।

इहाँ के "भोजपुरी लोकगीतों में राष्ट्रीय चेतना" पर शोध भी कइले बानी आ एहि विषय पर निबंध भी प्रकाशित भइल बा। वज्जिका भाषा के साहित्य में भी इहाँ के लमहर योगदान बा जहां"योगेश्वरानन्द"के क्रम में चर्चित भी रहनी। "राकेश स्मृति ग्रन्थ " आ "चम्पारण के था। लोकगीत "पर भी इहाँ के काफी काम भइल बा।जनपदीय भासा के साहित्य में इहाँ के आलेख काफी प्रकाशित होत रहत रहे।ओहि क्रम में "ब्रजभारती"में प्रकाशित इहाँ के आलेख काफी पसंद कइल गइल रहुए।

मैथिलीक नैनगीत इहाँ के जाफी पसन्द करत रहनी।साथ ही मगही साहित्य के अंश के भी निबन्ध के रूप में सम्पादन करीके आपन काफी दिलचस्पी देखवले

www.bhojpurisahityangan.com

रहनी। जनपदीय भासा के साहित्य में त इहाँ के हमेशा आलेख,निबन्ध आ संस्मरण छपत रहे।

रामकृष्ण वर्मा के विरह–नायिका–भेद संस्करण के तइयार करे में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभवले रहनी आ ओकरा के एगो मुकाम पर लावे में भी काफी बढचढके काम कइनी।

"चम्पारण महोत्सव" 1996 के अवसर पर"लोक साहित्य विषयक अलंकरण सम्मान" खातिरइहाँ के काफी बधाई मिलल आ सम्मानित भइनी।

लोकभासा के साहित्यकार आ अनेक सम्मेलन के सूत्रधार आ भोजपुरी शब्दकोश के रचयिता,,आदरणीय गणेश चौबे जी (बंगरी–पूर्वी चंपारण) के व्यक्तित्व आ कृतित्व पर एगो विशेषांक—बिहारी भाषा साहित्य के पत्रिका "नवकल्प" में सन्समरणात्मक व्यक्तित्व आ कृतित्व के सम्बंध में इहाँ के निबन्ध मिलल बा। आदरणीय गणेश चौबे जी से इहाँ के आत्मिक सम्बन्ध बराबर बनल रहल।

कुछ आत्मिक साहित्यिक प्रेमी लोगिन से इहाँ के हमेशा सम्पर्क बनल रहल आ पत्र–व्यवहार हमेशा होत रहल।राजश्री प्रकाशन –लखनऊ से भोजपुरी–हिन्दी पत्रिका "भोजपुरी लोक" जे आदरणीया राजेश्वरी शांडिल्य जी के सम्पादन में निकलत रहे,,ओहिजा उहाँ के हरमेशा छपत रहीं आ हरमेशा पत्र–व्यवहार होत रहे।सौभाग्य मिलल जे हमरा उहाँ के लिखल पत्र मिलल जे उहाँ के दु मार्च उन्नीस सौ पिचानवे (2 मार्च 1995) के लिखले रहनी।साथे 28 मार्च 1994 के लिखल पत्र,आदरणीय प्रफुल्ल कुमार सिंह जी के भी मिलल। 18 नवम्बर 1991 के भोजपुरी भासा सम्मेलन के लिखल पत्र मिलल।डॉ मदन मोहन साहू जी–देवघर,श्री रासबिहारी पांडे–देवघर,श्री महेंद्र जोशी –अमृतसर,श्री विक्रमादित्य मिश्र–पटना जइसन कइगो साहित्यकारन के सँगे पत्र –व्यवहार हमेशा होत रहल।कइगो पत्र मिलल हमरा आ एहि सब के पढ़ी–देखी के आदरणीय हरिश्चंद्र सहित्यलनकार जी के कृतित्व आ व्यक्तित्व के पता चलत बा की उहाँ के साहित्य–साधना खातिरकतना समर्पित रहनी आ सेवक के भांति भासा के विकास खातिरततपर रहनी (सभ पत्रन के उल्लेख कइल इहाँ सम्भव नइखे)।

भासा के विकसित आ समृद्ध करेमें आदरणीय हरिश्चंद्र सहित्यलनकार जी के बहुत बड़हन योगदान बा। पर दुर्भाग्य इ बा कि इहाँ के बहुत सारा कृति,आलेख, संस्मरण आदि सुरक्षा के अभाव में बर्बाद हो गइल बा जे से की बहुत कुछ सामग्री अनुपलब्ध बा।हालांकि "हरिश्चंद्र सहित्यलनकार" अपना आप में लमहर नाम बा लेकिन सामग्री के अभाव में आवे वाला पीढ़ी बहुत कुछ इहाँ के विषय मे जाने से वंचित हो जा रहल बा। हम आभारी बानी उहाँ के बेटा श्री रविचंद्र जी आ पोता सुशांत सौरभ जी के जे खोज–खोज के सामग्री उपलब्ध करवनी ह जैसे की हम सुरुज के एगो दियरी जवरे आपन सरधा सुमन समर्पित कर सकनी।

उम्मीद करत धेयान दिलावे चाहतानी कि माई भासा के विकास खातिरहोत एह यज्ञ के आहुति में एगो समिधा इहों के बानी,त एहि लड़ाई के योद्धा सभन के एहि ओर भी दृष्टिपात करे के चाहीं।

जय भोजपुरी

मोतिहारी,चम्पारण

जय मंगल अनूपा चम्पारण महिला इंटर कालेज

(भोजपुरी विभागाध्यक्ष)

✧ ✧ ✧

भोजपुरी किताबन के प्रकाशन के सबसे बड़ ठेहा
एहिजा से हर भाषा के किताबन के प्रकाशन ISBN के साथे होला
सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

www.bhojpurisahityangan.com

विंध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव : व्यक्तित्व आ कृतित्व

- डॉ. पवन कुमार
व्याख्याता, हिन्दी विभाग
हरिशंकर वर्मा को-ऑपरेटिव इंटर कॉलेज, रामगढ़वा, पूर्वी चंपारन

चंपारन के मनीषी साहित्यकारन में स्व. विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव के विशिष्ट स्थान बा। सुभाव से सरल, बेवहार से सहज, बोली–बानी से मितभाषी आ मृदुभाषी, हिरदय से कवि, मस्तिष्क से चिंतक आ विचार से गाँधीवादी; उज्जर खादी धोती–कुर्त्ता का भीतर साँवर बाकिर आकर्षक शरीर, नाट कद–काठी, छोट–छोट डेग धरत संतुलित चाल, जेके देख के केहू अनजान आदमी का भी उहाँ के एगो भद्र शिक्षक का अलावे आउर कुछ समझे के भरम ना हो सकत रहे।

श्रीवास्तव जी के जनम 6 जनवरी 1929 के ग्राम–लाला छपरा, केसरिया, पूर्वी चंपारन (बिहार) में भइल रहे। उनकर प्राथमिक शिक्षा गाँवहीं के विद्यालय में भइल, जबकि मध्य आ माध्यमिक स्तर के शिक्षा केसरिया के मध्य आ माध्यमिक विद्यालय में भइल रहे। जहाँ से उहाँ का 1945 ई0 में मैटिक के परीक्षा पास कइनी। ओकरा बाद मुंशी सिंह महाविद्यालय, मोतिहारी से 1947 ई. में इंटरमीडिएट के परीक्षा पास कइनी। 1952 में बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर से स्वतंत्र छात्र का रूप में नातक कइला का बाद 1955 ई. में पटना विश्वविद्यालय से डिप. इन एड. के डिग्री हासिल कइनी। स्वतंत्र छात्र का रूप में ही 1958 ई0 में बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर से स्नातकोतर (हिन्दी) आ 1965 ई0 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी से स्नातकोत्तर के डिग्री हासिल कइनी, जवना से उनका नामे डबल एम.ए. जुड़ गइल।

श्रीवास्तव जी इंटरमीडिएट कइला का बादे शिक्षक के नौकरी कइल शुरू कर दिहनी। शिक्षक का रूप में पहिलका योगदान केसरिया उच्च विद्यालय मे भइल, जहाँ जुलाई 1947 से अगस्त 1948 तक ले अध्यापन कइनी। ओकरा बाद नन्द उच्च विद्यालय, सुगौली में पदस्थापित भइनी आ ओहिजा से 1987 में सेवानिवृत्त भइनी। एह लमहर अध्यापकीय जीवन में जनमधरती, केसरिया लगभग छूट गइल आ करम धरती सुगौलिये के हो के रह गइनी। 18 जनवरी 2006 में उनकर मृत्यु हो गइल।

अध्यापन काल में ही उहाँ का पाठ्यक्रम से जुड़ल विषयन का अलावे हिन्दी, संस्कृत आ अंग्रेजी साहित्य, संस्कृति आ इतिहास से संबंधित पुस्तकन आ पत्रिकन के गहन अध्ययन कइनी, जेमे विद्यालय के पुस्तकालय खूबे काम आइल। सुगौली में ओह बेरा साहित्यिक आ सांस्कृतिक आयोजन खूब होत रहे, जेमे कविवर रमेशचन्द्र झा, जगतनारायण मिश्र, विश्वनाथ कुमार, अश्विनी कुमार 'आँसू' आदि के विशेष सक्रियता रहे। कवि सम्मेलन आ सांस्कृतिक कार्यक्रम बराबर होत रहे। ओह मंडली में श्रीवास्तव जी के नाम भी जुड़ल।

श्रीवास्त जी में रचना करे के प्रवृत्ति छात्र जीवन से ही रहे। आ शुरूआत कविता से ही भइल रहे। उनहीं के शब्दन में– "हमरा कवि जीवन के शुरूआत 1940 का आसपास रहे। ओह घड़ी देश में आजादी के संघर्ष अपना चरम पर रहे। नवजागरण का ओह दौर में कवि सम्मेलन के आयोजन सब जगह होत रहे। छात्र का रूप में हम श्रोता का रूप में सुने जात रहीं।" (ई संगीत रूपक, धरती माँग रहल बा पानी, पृष्ठ–11) उहाँ को आपन उपनाम 'मर्दन' लिखत रही, जवन बचपन के नाम रहे।

'हे राम' काव्य का अंत में श्रीवास्तव जी के परिचय देत उनका साहित्यिक प्रवृत्ति का बारे में नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी लिखतानी– "श्री श्रीवास्तव जी ने सन् 1952 ई0 से हिन्दी तथा सन् 1953 ई0 से भोजपुरी में नाटक, कविता, गीत आदि विद्या में रचना करना सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेना तथा उनका नेतृत्व आ निर्देशन करना प्रारंभ कर दिया, जिसने लोकप्रियता अर्जित की।....

सन् 1960 ई0 से लब्धप्रतिष्ठ भोजपुरी त्रैमासिक 'अँजोर' (पटना) में श्री श्रीवास्तव जी के भोजपुरी व्याकरण की विभिन्न समस्याओं पर निबंध प्रकाशित होने लगे, जिन पर लोक साहित्य के मूर्द्धन्य विद्वान गणेश चौबे, सुधी

www.bhojpurisahityangan.com

संपादक पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय एवं कविवर रमेशचन्द्र झा का प्रोत्साहन एवं सहयोग प्राप्त होता रहा।"

पत्रकारिता का क्षेत्र में भी उहाँ के उल्लेखनीय योगदान रहल बा। अंग्रेजी अखबार 'सर्चलाइट' में उहाँ का लंबा समय तक ले संवाददाता का रूप में सेवा देले रहीं।

विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव में साहित्यिकारन का प्रति बड़ा आदर के भाव रहे। जवना चलते हिन्दी आ भोजपुरी के विद्वान साहित्यकारन के आना–जाना उनका इहाँ बराबर लागल रहे। भोजपुरी के महावीर प्रसाद द्विवेदी, पाण्डेय कपिल, भीष्म पितामह–रामनाथ पाण्डेय, दधीचि–पं0 गणेश चौबे, हास्य–व्यंग्य के कवि कुबरेनाथ मिश्र 'विचित्र', सुधी साहित्यिकार डॉ0 रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक', श्री जगन्नाथ, नागेन्द्र प्रसाद सिंह आदि का अलावे आसपास के साहित्यकार लोग भी उनका इहाँ बराबर आवते रहत रहल। हिन्दी साहित्य के कीर्ति स्तंभ 'अज्ञेय' जी भी श्रीवास्तव जी के आतिथ्य स्वीकार कइले रहीं।

श्रीवास्तव जी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के स्थापना काल से ही जुड़ल रहीं आ ओमे कई गो पद के शोभा बढ़वनी। कई साल तक उहाँ का ओकर उपाध्यक्ष रहनी। 1995 में अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन का कार्यसमिति के सदस्य मनोनीत भइनी। विश्व भोजपुरी सम्मेलन से भी उनका जुड़ाव रहल। ओकरा मॉरिशस सम्मेलन में प्रतिनिधि का रूप में बुलावा रहे, बाकिर कवनो कारण से उहाँ ना जा सकनी। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से भी उहाँ का दशकन तक जुड़ल रहीं, जहँवा से उनका हिन्दी लेखक पर 'सारस्वत सम्मान' मिलल रहे। 'मन के मौज' ललित निबंध संग्रह (भोजुपरी) पर भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का ओर से पहिलका हरिशंकर वर्मा पुरस्कार आ 'हे राम' प्रबंध काव्य (हिन्दी) पर 'नई राहें' सांस्कृतिक संस्था मोतिहारी का ओर से भी सम्मान मिलल रहे।

श्रीवास्तव जी के प्रकाशित पुस्तकन के संख्या सात गो बा। जवना में पाँच गो भोजपुरी आ दू गो हिन्दी के बा। ओह पुस्तकन का बारे में संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित बा–

1. **मन के मौज** (1977)– भोजपुरी के ई ललित निबंध संग्रह किताब का रूप में श्रीवास्तव जी के पहिला प्रकाशित रचना हऽ। एमे छह गो निबंध संग्रहित बा– 'चार दिन', 'मन के मौज : मरजादा के बंधन', 'दिले नू ह', 'जिन खोजा तिन पाइयाँ', 'न होइत आँख' आ 'राधाकृष्ण'। एह सब निबंधन में मानव मन के सूक्ष्म एगात्मक अनुभूतियन के बड़ी सरसता का साथे सुरुचिपूर्ण आ सहज रूप में अभिव्यक्ति भइल बा। एमे लेखक व्यक्तिनिष्ठ विषयन के अपना विचारन का अभिव्यक्ति के आधार बनवले बाड़न। जवना में जीवन के क्षणभंगुरता, सुख–दुख आ प्रेम के तीत–मीठ अनुभूति, त्याग आ समर्पण अपना पुरकस संवेदना का साथे परिलक्षित भइल बा।

2. **आईं, पढ़ीं–लिखीं** (1994)– ई 40 सवैयन के साक्षरता विषयक भोजपुरी मुक्तक काव्य हऽ। एह रचना के प्रकाशन ओह बेरा भइल रहे जब देश में साक्षरता अभियान पुरा जोर–शोर से चलत रहे। जेमे वयस्क स्त्री–पुरुष के साक्षर बना के देश के पूर्ण साक्षर बनावे के आन्दोलन चलल रहे। बाकिर देश में निरक्षरर लोगन के संख्या अबहियो कम नइखे। 'आईं, पढ़ीं–लिखीं' में कवि अशिक्षा के कुफल आ शिक्षा के सुफल बता के सब निरक्षरन के साक्षर बने के आह्वान करताड़न। उनका मलाल बा कि देश के भोला–भाला लोग अशिक्षा का कारण धूर्त्तन आ मक्करान का चंगुल में फँस के लुट रहल बाड़ें–

"औरत मर्द जे भी बा निरच्छर
सीखी लेवो कइसे चिट्ठी लिखाई।
पाँच के जो काढ़ी उ करजा
नाहीं ओकरा नामे पचीस टँकाई
नोटिस जो कभी कवनो मिले
पढ़ के गलती केहू ना सुनाई
का खेसरा–खाता का रकबा
झुलिया के सकी ना केहू लिखाई।

(पृष्ठ–7)

कवि निरक्षरन के पढ़–लिख के अपना भीतर के जाहिलपना रूपी अंधकार के भगा के जीवन के सार्थक बनावे ला प्रेरित करताड़न–

"जाहिलपना हटी कब ले, एह
अन्हार के साँसत ना अब सहना
लिखे के सीखीं, पढ़े के सीखीं
चाहे जो हो उमिर, एतने बा कहना।"

(पृष्ठ–8)

www.bhojpurisahityangan.com

3. **हे राम** (1998)– ई प्रबंध काव्य हिन्दी में बा जवन महामानव राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का जीवन चरित पर लिखाइल बा। 'राम' शब्द संपूर्ण भारतीय समाज आ संस्कृति के आदर्श आ आस्था के प्रतीक बा। राम का आदर्श के गाँधी जी आत्मसात कइले रहनीं। उहाँ का राममय ही रहीं। जन–जन के कल्याण उनका जीवन के ध्येय रहे। 'हे राम' विश्वबंध महात्मा गाँधी का श्रीमुख से निकलल आखिरी वचन–प्रसून रहे। उ हो तब जब उनका सीना में गोली लागल। 'जो तोको काँटा बोवे, ताहि बोओ तू फूल' का सिद्धांत पर गाँधी जी आखिरी साँस ले जियनीं। एही अमरवाणी 'हे राम' के श्रीवास्तव जी काव्य के विषय बनवनीं, काहे कि उहाँ का गाँधी का जीवन–दर्शन से अभिभूत रहीं। गाँधी के सहजता, सरलता, निष्कलुष्ता, अकृत्रिमता से उहाँ का अपाद मस्तक प्रभावित रहीं, एह से उहाँ का मन, हिरदय आ आत्मा से 'हे राम' से जुड़त चल गइनीं–सहज आ स्वाभाविक रूप से, अनायास। एह काव्य में गाँधी के दक्षिण अफ्रीका का धरती पर उतरला से लेके स्वदेश में आजादी ला लड़त आ अप्रत्याशित रूप से जीवन लीला खतम होखे तक का जीवन वृत्त के यथार्थ चित्रण बा, जेमे अंग्रेजन के अत्याचार, शोषण आ उत्पीड़न से संत्रस्त भारत के जनता का मुक्ति ला सत्य आ अहिंसा के आपन हथियार बना के संघर्ष करत उनका अवतरण के कथा बा। कवि एह काव्य के शुरूआत गाँधी के एही रूप से करताड़न–

"सत्य का संबल, अहिंसा
का नवल आयुध गढ़ा है।
मुक्ति के हित जूझने
धर देह भारत चल पड़ा हैं"

(पृष्ठ–17)

4. **मेघदूत** (1998)– ई रचना संस्कृत के महाकवि कालिदास के अमर कृति 'मेघदूतम्' काव्य के भोजपुरी गद्य–पद्यानुवाद हवे। एह कृति में जवन रसिकता आ मांसलता बा, स्वकीया नायिका का प्रति नायक के विरहजन्य पीड़ा से भरल व्याकुलता बा, यक्षिणी के सौन्दर्य आ प्रेम के आकर्षण बा, ओमे आबद्ध होके जाने केतना रसज्ञ आ विद्वान लोग अपना के रससिक्त कइले बाड़न, आ ओह पर आपन लेखनी चलवले बाड़न। श्रीवास्तव जी भी ओह रसानुभूति के अभिव्यक्ति का आवेग के संवरण ना कर पइनीं आ ओकर भोजपुरी अनुवाद का रूप में हमनी का सोझा प्रस्तुत कइनीं। उ भी एह रूप में कि ओकर मौलिकता कहीं से आहत ना होखे। 'मेघदूत' सहृदय पाठक के रसास्वादन करावे में समर्थ बा। उदाहरण का रूप में 'पूर्व मेघ' का आखिरी श्लोक के अनुवाद प्रस्तुत बा–

"हो न सके ना चिन्हस गोद कैलाश पिया के प्यारी
अलका, सरक गइल बा जेकर गंगा रूपी साड़ी।
ऊँचा–ऊँचा महलन पर छा झड़ी लगइबे, शोभी
शोभे जइसे केश मोतियन गूँथल घुंघरवारी।।"

(पृष्ठ–56)

5. **भोजपुरी व्याकरण के रूपरेखा** (1999)– भोजपुरी भाषा विषयक अनुशीलन के ई महत्त्वपूर्ण ग्रंथ बा। एह ग्रन्थ में रचनाकार श्रीवास्तव जी भोजपुरी व्याकरण–चिंतन के सुदीर्घ परंपरा के विकसित कइले बानी। ई उनकर सर्वश्रेष्ठ कृति बा। एह पुस्तक के भूमिका पाण्डेय कपिल जी लिखले बानी, जेकर शीर्षक बा– 'भोजपुरी व्याकरण : बीम्स से श्रीवास्तव तक ले'। ओमे एकर परिचय देत कहत बानी– "श्रीवास्तव जी के ई व्याकरण मूलतः हिन्दी में लिखाइल रहे, आ तबे लिखाइल रहे जबकि निर्भीक जी के व्याकरण 'भोजपुरी शब्दानुशासन' भोजपुरी में लिखाइल रहे। बाकिर, विश्वविद्यालय स्तर पर भोजपुरी के पढ़ाई शुरू हो गइला का वजह से भोजपुरी में लिखाइल व्याकरण के जरूरत जादे महसूस भइल, आ अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के गठन का बाद इहो मानसिकता समकर बने लागल कि साहित्य से संबंधित शास्त्रीय विषयन पर भोजपुरी में किताब लिखाये–छपाये के चाहीं। मित्र लोगन के सुझाव पर श्रीवास्तव जी अपना हिन्दी व्याकरण के भोजपुरी में पुनर्लेखन कइलीं, हालाँकि एक काम में तनि बेसिए समय लाग गइल आ एह व्याकरण के प्रकाशन लगभग बाइस–तेइस बरिस पिछड़ गइल। बाकिर एह अवधि में एकर अनेक अंश लेख रूप में विभिन्न पत्र–पत्रिकन में प्रकाशित होत रहल आ श्रीवास्तव जी के अपना व्याकरण के माँजे–सँवारे के अवसर मिलल। रचना खंड के समावेश करे के योजना त बादे के सोचावर ह। अब ई व्याकरण अपना मूल हिन्दी पाठ के भोजपुरी भाषांतरण मात्र नइखे रह गइल, बलुक अपना पुनरीक्षित रूप मे ई जादे व्यवस्थित आ चुस्त–दुरूस्त होके भोजपुरी में प्रस्तुत हो रहल बा।"

(पृष्ठ–10)

www.bhojpurisahityangan.com

6. **कुछ घटनामूलक छंद** (2003)– एमे हिन्दी, उर्दू, फारसी, संस्कृत कवियन के ओह छंदन के संकलन बा जे कवनो घटना भा प्रसंग विशेष का प्रत्युत्तर में कविता का रूप में उनका वाणी से सघः स्फुट भइल। एह कृति से श्रीवास्तव जी के अध्यवसायी, काव्य रसिक आ शोध–संग्रही होखे के पता चलता। 'कुछ घटनामूलक छंद' के अनेक छंद प्रचलित बाड़न, बाकिर बहुते छंद अइसन बाड़ें जेकर जानकारी सामान्यजन के नइखे। आ जेकर जानकारी बड़लो बा ओकरा प्रसंग से लोग अनजान बाड़ें। श्रीवास्तव जी एह पुस्तक में संकलित छंदन के सप्रसंग व्याख्या कके काव्य–रसिकन के ज्ञान–पिपासा के तृप्त करत उनकर भरपूर मनोरंजन करे में समर्थ बानी।

7. **धरती माँग रहल बा पानी** (2004)– ई भोजपुरी संगीत रूपक ह, जेकर संरचना दीर्घकालीन सुखाड़ का पृष्ठभूमि पर भइल बा। कवि के जीवन कृषि कर्म से भी जुड़ल रहे, एह से उ कृषक–जीवन का सुख–दुख से परिचित बाड़न। अनावृष्टि क समय किसान का मन में मेघ से पानी बरसे के लालसा केतना उत्कट होला, बाकिर पानी ना भइला पर व्यथा केतना धनीभूत हो जाला, एकर अनुभूति कवि के बा। एही भावभूति पर यथार्थ में कल्पना के पिरो के किसान का जीवन के करूण पक्ष के मार्मिक ढंग से उजियागर कके एह रूपक के प्रभावोत्पादक बना देले बाड़न। सावन–भादो में मौसम का बेरूखी से किसान का साथे कवि–हृदय भी व्यथित हो जाता आ उनकर वेदना मेघ के भगवान से बरखा ला याचना का रूप में प्रकट हो जाता–

"जर के हो गेल धूल धरतिया
कण–कण आज पियासा
फिर भी बा सब जियत जा रहल
एक बदरा के आशा।
ना धन ओकर छिन जाये, जो कुछ बच पाये
सोच नदिया दुबराइल जाये।
नदी–नाला के लहर–लहर पर, बरसऽ हे भागवान मेघ के,
बरस ऽ हे भगवान।"

(पृष्ठ–19)

पुस्तक का रूप में प्रकाशित उपर्युक्त कृतियन का अलावा श्रीवास्तव जी भोजपुरी, हिन्दी आ अंग्रेजी में कविता आ निबंध लेखन करत रहीं, जवन विभिन्न पत्र–पत्रिकन में प्रकाशित होत रहन। इनका निबंधन के संख्या जादे बा, जवन संग्रहित होके पुस्तक का रूप में प्रकाशित होखे के चाहत रहे, बाकिर ना हो सकल।

भोजपुरी निबंध– पूर्वी चंपारन में भोजपुरी–हिन्दी साहित्य के विकास, भोजपुरी क्षेत्र का संत परंपरा आ भक्त कवियन के साहित्यिक योगदान, भारत के विभिन्न राष्ट्रगान आ बटोहिया, लोकगीत, भोजपुरी नाटकः वर्तमान आ भविष्य, भोजपुरी जीवन में भोजपुरी के घटत प्रयोग, चन्द्रबिन्दु (ँ) के घटत प्रयोग, होली गीतन में जीवन के रंग, दिवंगत भोजपुरीसेवी– स्व0 रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त', स्व0 बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव, पंडित गणेश चौबे के भोजपुरी सेवा, फगुनहट। आखिरी इ गो निबंध के प्रसारण आकाशवाणी, पटना से भइल रहे।

हिन्दी निबंध– स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बिहार में हिन्दी प्रगाति, भारतेन्दु साहित्य में राष्ट्रभक्ति आ राजभक्ति के स्वर, सूफी कवि उसमान की चित्रावली में प्रेम वर्णनः संक्षिप्त अध्ययन, रहीम की दानप्रियताः एक आलेख, भाई–बहन के प्रेम का संगीत भरा खेलः सामा चकवा, भोजपुरी संस्कृति में नारी की लोक विधायक भूमिका, शिक्षा के भारतीयकरण का आधार : जनपदीय अध्ययन, पंडित गणेश चौबे, रमेशचन्द्र झा।

अंग्रेजी निबंध– "उं.बींमूंए छंह च्नरंए "नहंनसप पद भ्पेजवतपबंस चतवेचमबजपअमण

एह तरह से श्रीवास्तव के रचना कर्म व्यापक आ विविधता से भरल बा। प्रकाशित रचनन से अधिकात उनकर हिन्दी में विभिन्न विधा के अप्रकाशित रचना बाड़ें, जवन निम्नलिखित बाटे–

नाटक– वरदान या अभिशाप (कर्ण के जीवन पर आधारित), धरती का बेटा, नीर–क्षीर।

एकांकी– कौल (के. प्रदीप के कहानी के नाट्यरूपांतर), कपड़े का बँटवारा, कलंक (बाल एकांकी)।

उपन्यास– तीन चित्र, (एगो अउर उपन्यास के पाण्डुलिपि उपलब्ध बा जवन अनाम आ नष्टप्राय बा)।

पत्रात्मक स्केच– कुँआरे सपने।

वृत्तचित्र– चंपारन में गांधी।

कहानी– कुछ कहानियाँ तथा 17 रूसी कथाओं का अनुवाद। (श्रीवातव जी रूसी भाषा ना जानत रहीं।

www.bhojpurisahityangan.com

संभवतः उहाँ का ई अनुवाद ओह कहानियन के अंग्रेजी अनुवाद से कइले रहीं, जवना के खुलसा नइखे)।

काव्य– रूप–अरूप (अधूरा), पानीपत (अधूरा)। इनका अलावा भोजपुरी आ हिन्दी में सैकड़न कविता, गीत, गज़ल, मुक्तक आदि। आकाशवाणी पटना से उहाँ का कई बार कविता पाठ भी कइले रहीं।

श्रीवास्तव जी का लेखनी के धारा अंतः सलिला रहे, जवन अबाध आ अनवरत चलत रहे। उनका करीबी मित्र लोगन का भी उनका अप्रकाशित रचनन का बारे में पूरा जानकारी ना रहल। चूँकि दू दशक ले उहाँ का सानिध्य में रहे के हमरा सौभाग्य मिलल, एह से उनका रचनन के बहुत करीब से पढ़े आ जाने के मोका मिलल। उहाँ का हमरा बाबूजी डॉ0 दीनेश कुमार साहनी के गुरु रहनी आ हमरो भी। हमरा प्रति उनकर बेवहार पुत्रवत् रहे। कई गो साहित्यिक सम्मेलन में उनका साथे जाये के हमरा अवसर मिलल रहे। उनकर साहचर्य हमार साहित्यिक अभिरूचि बढ़ावे में सहायक भइल। उनका लिखे के फिकिर जादे रहे, छपे के कम। अपना संपर्क में आवेवालन, जेमे हम आ डॉ. संत साह भी रहीं, के भी छपे के फिकिर छोड़ के हमेशा लिखत रहे के बराबर प्रेरित करत रहीं। उनकर मान्यता रहे कि जेतना लिखा सके, लिखे के चाही, समय अइला पर छपबे करी। गौरतलब बा कि पुस्तक का रूप में उनकर सिरिफ एगो रचना 'मन के मौज' सेवावृत्ति काल में छपल रहे, बाकी सब त सेवानिवृत्ति का बादे छपल। उहाँ से जुड़ल एगो आपन बात अउर इहाँ जोड़े के चाहतानी कि 'मन के मौज' छोड़ के बाकी सभी पुस्तकन के पाण्डुलिपि तइयार करे के सुयोग हमरे मिलल रहे। अपना अप्रकाशित रचनन का प्रकाशन ला उनका भीतर बहुत जादे बेचैनी रहे, बाकिर तब तक ले जीवन के अवसान काल आ चुकल रहे। जेतना हो सकत रहे भइल, बाकी सब छूट गइल।

श्रीवास्तव जी के लेखनी गद्य आ पद्य में समाज रूप से चलल, बाकिर गद्य का क्षेत्र में उनका कथाकार पर आलोचक रूप भारी रहे। कथा–साहित्य कदाचित गौण वा, बाकिर शोधपरक निबंधन का दिसाई उहाँ का एगो मूर्द्धन्य साहित्यकार का रूप में प्रतिष्ठित बानी। उनका नाटकन के प्रकाशन ना हो पाइल, बाकिर अपना समय में उ एतना लोकप्रिय रहन कि चंपारन का कई जगहन पर मंचित भइलन। अभिनय ला उनका नाटकन के बहुते माँग रहे। काव्य का क्षेत्र में भी श्रीवास्तव जी के योगदान काफी महत्त्वपूर्ण बाटे। प्रकाशित काव्य ग्रन्थ का अलावे जे दू गो प्रबंध काव्य अधूरा रह गइल, अगर उ पूरा हो जाइत त निश्चित रूप से काफी उल्लेखनीय काम होईत। 'रूप–अरूप' सम्राट अशोक आ उनकर दासी तिष्यरक्षिता के प्रणाय–संबंध पर आधारित बा आ 'पानीपत' पानीपत का धरती पर भइल युद्ध पर। ई पछिलका सदी के पाँचवा–छठा दशक में लिखल जात रहन, बाकिर ना जाने कवना कारण से कवि इनका के पूरा करे पर विशेष ध्यान ना दे पइलन। इनका अलावे भोजपुरी–हिन्दी के बाकी जे अप्रकाशित कविता आ गीत बाड़ें उ श्रीवास्तव जी का कवि रूप के अउर महत्त्वपूर्ण बनावताड़ें। उनका काव्य में प्रेम आ सौन्दर्य बा, मसृणता आ स्निग्धता बा, संघर्ष आ विद्रोह बा, उमंग आ जागरण बा, करूणा आ मार्मिकता बा, वैयक्तिकता आ सामाजिकता बा, प्रकृति के विविध रंग आ माटी के गंध बा, अनुभूति के तीवृता आ संवेदना के गहराई बा। काव्य में प्रयुक्त अलंकारन, बिम्बन आ मुहावरन से भाष गतिशील बा। भोजपुरी साहित्य में प्रयुक्त ध्वनि, वर्णन, शब्दावली आ वाक्य रचना से स्पष्ट बा कि उहाँ का भोजपुरी गद्य–पद्य का साहित्यिक स्वरूप के ग्राम्यता से मुक्त राखे के सतर्क प्रयास कइले बानी, उहें हिन्दी के भाषा जादे सरल, सुगाठित आ प्रवाहमान बा। विषयानुकूल भाषा गढ़े में उहाँ का समर्थ शिल्पी बानी।

निष्कर्ष का रूप में श्रीवास्तव जी का बारे में पाण्डेय कपिल जी के मूल्यांकन ही पर्याप्त बा, जवन 'कुछ घटनामूलक छंद' के भूमिका लिखत खानी कइले बानी– "श्रीवास्तव जी का अध्ययन, मनन और लेखन वैविध्यपूर्ण रहा है। हिन्दी से लेकर भोजपुरी तक, साहित्य से लेकर भाषा तक, कविता से लेकर गद्य तक, रम्य रचना से लेकर वैदुष्यमूलक निबंध तक, मौलिक से लेकर अनुवाद और संकलन संपादन तक फैला हुआ उनका साहित्यिक व्यक्तित्व बहुआयामी रहा है।"

✧ ✧ ✧

www.bhojpurisahityangan.com

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के
26 अधिवेशन पर शुभकामना

स्व. बिंध्याचल बाजपेयी मेमोरियल ट्रस्ट

तीसरा तल, शॉपर्स ऑर्बिट विश्रांत वाडी
पुणे, महाराष्ट्र - 411015

+91-9130018581
hbajpayee@sbbmemorialtrust.com

www.bhojpurisahityangan.com

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

26वाँ अधिवेशन

08.09 जनवरी 2022

राधा नगर, नकछेद टोला, पंडित गणेश चौबे सभागार, मोतिहारी, पूर्वी चंपारण (बिहार)

-: कार्यक्रम के रूपरेखा :-

◆ **पहिला दिन : 08 जनवरी, 2022 (सनिचर)**

जलपान+चाय –
09:00 से 10:00 बजे पूर्वाह्न तक।

प्रतिनिधि पंजीयन, सम्मेलन के सदस्यता, पत्रिका ग्राहक सदस्यता ग्रहण आ पुस्तक–प्रदर्शनी आदि के उद्घाटन –
10:00 से 11:30 बजे पूर्वाह्न तक।

स्थायी समिति के बइठक, महामंत्री के प्रतिवेदन वाचन, प्रतिवेदन पर विमर्श आ प्रवर समिति के चुनाव – 11:30 से 01 बजे अपराह्न तक।

भोजन सत्र – 01:00 से 02:00 बजे अपराह्न तक।
उद्घाटन सत्र –02:00 से 05:00 बजे अपराह्न तक।
स्वागत भाषण – श्री प्रकाश अस्थाना डॉ० शम्भू नाथ सीकरीया
सांस्कृतिक सत्र (नाटक, गायन आदि) – 06:00 से 10:00 बजे रात तक।
भोजन सत्र –10:00 से 11:30 बजे तक रात तक।

◆ **दूसरका दिन – 09 जनवरी, 2022 (एतवार)**
जलपान+चाय सत्र 07:00 से 09:00 बजे सुबह।

◆ **संगोष्ठी सत्र – सत्र–01**
08:30 से 09:00 तक।
विषय – 'भोजपुरी नवही काव्य–लेखन के मौजूदा तासीर आ तेवर'
(युवा कवि – सुशांत कुमार शर्मा, पुष्कर कुमार, संजीव कुमार त्यागी आ श्याम श्रवण के काव्य – पाठ आ काव्य – विमर्श)
अध्यक्षता – जितेन्द्र कुमार, विमर्शक– चतुर्भुज मिश्र आ संचालक – दिलीप कुमार।

◆ **संगोष्ठी सत्र –02**
09:30 – 10:30 तक।
विषय – ' उर्दू भासा पर भोजपुरी के प्रभाव'
अध्यक्षता – प्रो.(डॉ.) जयकान्त सिंह 'जय'
विषय प्रवर्तक – डॉ० सफदर इमाम कादरी
संचालक – गुलरेज शहजाद

www.bhojpurisahityangan.com

◆ **संगोष्ठी सत्र – 03**
10:30 से 11:30 तक।
विषय – 'पूर्वी पुरोधा महेन्दर मिसिर के साहित्यिक आ सांस्कृतिक जोगदान'
अध्यक्षता – भगवती प्रसाद द्विवेदी,
विषय प्रवर्तक – डॉ. सुरेश कुमार मिश्र,
संचालक – डॉ. रवीन्द्र कुमार त्रिपाठी।

◆ **संगोष्ठी सत्र – 04**
11:30 से 12:30 तक।
विषय – 'भोजपुरी आलोचना के वर्तमान स्थिति'
अध्यक्षता – डॉ. ब्रजभूषण मिश्र
विषय प्रवर्तक – डॉ. विष्णुदेव तिवारी
संचालक – संतोष पटेल।

◆ **भोजन सत्र – 12:30 से 02:00 बजे अप. तक।**

◆ **खुला सत्र – 02:00 से 05:00 बजे अप. तक।**

(नव निर्वाचित कार्यकारिणी, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के सम्पादक आ सम्पादक मंडल के घोषणा, भोजपुरी लेखन, आंदोलन आ विकास सम्बन्धी प्रस्ताव आ अनुमोदन, नव निर्वाचित महामंत्री के उद्गार – उद्बोधन, भोजपुरी सेवी दिवंगत दिव्यात्मा खातिर शोक प्रस्ताव/संदेश आदि)

◆ जलपान+चाय – 05:00 से 05:45 बजे तक।

◆ साहित्यिक सत्र (कवि सम्मेलन)– 06:00 से 10:00 रात तक।
अध्यक्षता – प्रो० हरेन्द्र हिमकर आ डा० रविकेश मिश्र, उद्घाटनकर्ता – योगेन्द्र नाथ शर्मा,
संचालक – ब्रजकिशोर दूबे आ तंग इनयतपुरी
धन्यवाद ज्ञापन – प्रकाश अस्थाना।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के

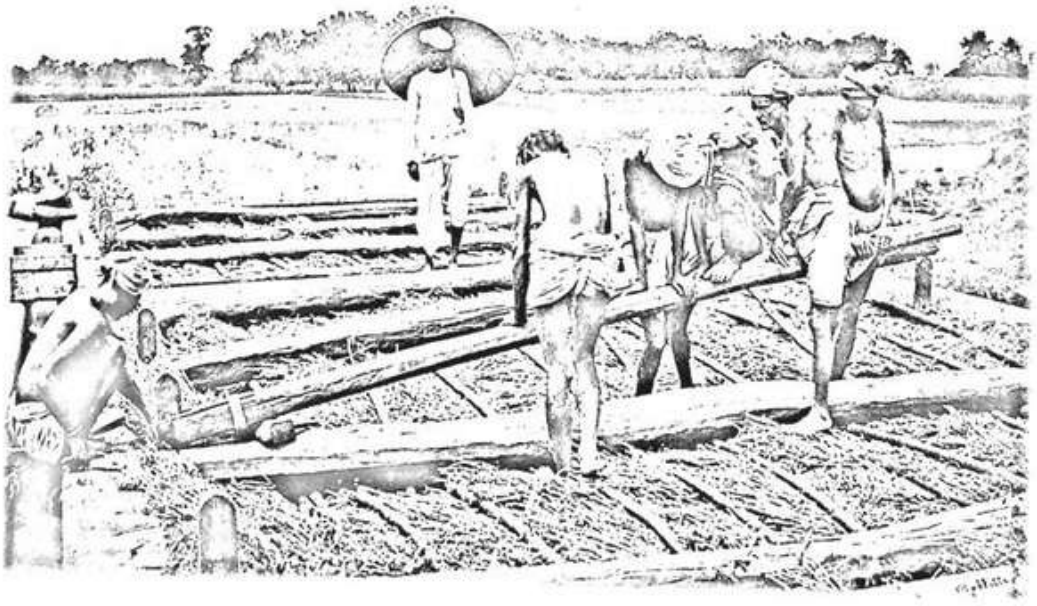

(चम्पारण सत्याग्रह के एगो झलक)

www.bhojpurisahityangan.com

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

26वाँ अधिवेशन

में मिले वाला पुरस्कार/सम्मान आ पुरस्कृत/सम्मानित होखे वाला व्यक्तित्व

◆ भोजपुरी गौरव सम्मान (मरणोपरांत) ◆
स्व० बजरंगी नारायण ठाकुर

◆ माधव सिंह पुरस्कार (सर्वतोभावेन भोजपुरी सेवा सम्मान) ◆
01. स्व० जगन्नाथ (मरणोपरांत)
02. डॉ० तैयब हुसैन पीड़ित।

◆ चित्रलेखा पुरस्कार (भोजपुरी सेवी महिला) ◆
01. डॉ. उषा वर्मा ('कुछ–कुछ' पुस्तक खातिर)
02. प्रेमशीला शुक्ल ('जाय की बेरिया' पुस्तक खातिर)

◆ पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह पुरस्कार (भोजपुरी कहानी) ◆
01.डॉ० आद्या प्रसाद द्विवेदी ('नेह क नाता' कहानी संग्रह खातिर)
02.सरोज सिंह ('तेतरी'कहानी संग्रह खातिर)

◆ अभय आनंद पुरस्कार (भोजपुरी उपन्यास) ◆
01.रामाज्ञा प्रसाद सिंह 'विकल' ('विश्वामित्र के आत्मकथा'खातिर)
02. डॉ. नर्मदेश्वर राय ('दरकच'खातिर)
03. नीतु सुदीप्ति नित्या ('विजय पर्व खातिर)

◆ आचार्य महेन्द्र शास्त्री पुरस्कार (स्फुट कविता) ◆
01.तंग इनायतपुरी ('सियासत में गजब नाम बा राउर'खातिर)
02.डॉ. कमलेश राय ('अइसन आज कबीर कहाँ'खातिर)
03.बलभद्र ('कब कहलीं हम'खातिर)

www.bhojpurisahityangan.com

◆ राम नगीना राय पुरस्कार (प्रबंध काव्य) ◆
01.आनंद संधिदूत ('अग्नि संभव'खातिर)
02.मार्कण्डेय शारदेय ('दीप शलभ'खातिर)
03.गुलरेज शहजाद('चंपारन सत्याग्रह गाथा'खातिर)

◆ जगन्नाथ सिंह पुरस्कार (नाटक) ◆
01.महेन्द्र प्रसाद सिंह ('बसमतिया चाउर' खातिर)
02.डॉ० राजेश कुमार माँझी ('नून तेल' खातिर)

◆ हरिशंकर वर्मा पुरस्कार (निबन्ध) ◆
01.केशव मोहन पाण्डेय ('एक मुट्ठी सरसो' खातिर)
02.डॉ०ओम प्रकाश राजापुरी ('भोजपुरी उपन्यास में नारी पात्र'खातिर)

◆ चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह पुरस्कार (शोध आ आलोचना) ◆
01. डॉ० सुनील कुमार पाठक ('छवि और छाप'खातिर)

◆ पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय पुरस्कार (पत्रकारिता) ◆
01.डॉ० राम रक्षा मिश्र 'विमल' ('सँझवत' खातिर)
02.मनोज भावुक ('भोजपुरी जंक्शन' खातिर)

◆ महंथ लालदास पुरस्कार (कला) ◆
01.रामेश्वर गोप, 02. अल्पना मिश्र,
03.चंदन सिंह आ 04. चंदन तिवारी।

◆ ब्रजकिशोर दूबे नवोदित गायक/गायिका पुरस्कार – तृप्ति कुमारी।

◆ कर्मयोगी सम्मान – (भाषा–संस्कृति के रक्षा खातिर) ◆
01. डॉ० शम्भू नाथ सिकारिया

◆ ई कुल्ह पुरस्कार अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के ओर से दिहल जाला आ एह अधिवेशन में कुछ वरिष्ठ भोजपुरी सेवी बिद्वान के लोग के सर्वतोभावेन भोजपुरी सेवा सम्मान से सम्मानित कइल जाई।

www.bhojpurisahityangan.com

LAXMI NARAYAN DUBEY COLLEGE, MOTIHARI

Accredited by NAAC Grade 'B++'

(A CONSTITUENT UNIT OF B.R. AMBEDKAR BIHAR UNIVERSITY, MUZAFFARPUR)

KEY HIGHLIGHTS

1. Highly Qualified experienced and dedicated Faculty members.
2. Enriched Library.
3. Well Equipped Lab of Physics, Chemistry, Botany, Zoology, Psychology and Geography.
4. A Computer lab with internet connection.
5. National Service Scheme (NSS)
6. National Cadet Corps (NCC)
7. Placement Cell.
8. Wi-Fi Campus.
9. Financial assistance to deserving Students.
10. Smart Class Room.
11. Sports Facilities.
12. E-Library Facilities.
13. Canteen Facilities.
14. Anti. Ragging cell.
15. Modern Gym. 💪
16. Seminar Hall.
17. Recording Room.
18. Language Lab.

COURSES OFFERED

❖ Hons. Course

Physics, Chemistry, Mathematics, Botany, Zoology, Geography, History, Political Science, Economics, Philosophy, Psychology.

❖ Pass Course

B.A. & B.Sc.

❖ Vocational Course

BCA (Bachelor in Computer Application)
B.Ed. (Bachelor of Education)

Contact Us:
L. N. D. College, Motihari
06252-232689
Collegelnd@gmail.com

Prof. (Dr.) Arun Kumar
Principal

NAAC Accredited | Estd. 1945 | Pride of Champaran

MUNSHI SINGH COLLEGE

Motihari, East Champaran (Bihar)

A Constituent P.G. Unit of B.R. Ambedkar Bihar University, Muzaffarpur

Official website: mscollege.ac.in | Email: mscollege.singh1@gmail.com

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 26 वें अधिवेशन की शुभकामनाएं।

HIGHLIGHTS :

- Faculties of Arts, Science & Commerce ✦ M.S. Law College in the Campus
- Vocational Courses in IMB, BBA & BCA
- Add on courses in Communicative English & Fish and Fisheries Product
- UG & PG Courses in regular mode : Science Faculty: Physics, Chemistry, Maths, Zoology, Botany. Arts Faculty : Hindi, English, Pol. Science, History, Economics, Psychology, Philosophy. Commerce Faculty: B.Com & M. Com Law : Three Year LLB course.
- Plus Two courses in Arts, Science & Commerce.
- Hub of Distance Mode Learning with Study Centres of IGNOU, MANUU(Hyderabad) & Nalanda Open University.
- Highly qualified, motivated, well-published & research-oriented teachers.
- Strong units of NCC & NSS.
- ICT enabled Smart classes, Language Lab, ICT Lab, Conference Hall.
- Regular conduct of National/International Seminars, Webinars, Conferences, Guest Lectures, Talks. ✦ Rich & fully automated Library.
- Declared Centre of Excellence by the State Government
- Second college of the university to go for NAAC first cycle & First college of the university to go for NAAC 2nd cycle. ✦ Regular conduct of online classes during Pandemic.
- Separate Building for Vocational courses.
- Women's Hostel funded by the UGC constructed.
- World class Basket Ball Arena.
- Multi-Purpose Hall & Athletics Track under Khelo India Project of the Central Government (proposed).
- Focus on Technology based learning.
- Co-curricular & Extra-curricular activities encouraged.
- Career Counselling, Campuses organized.
- Functional Internal Committee as per UGC guidelines.
- Functional & Vibrant IQAC.

Prof. (Dr.) Arun Kumar
(PRINCIPAL)